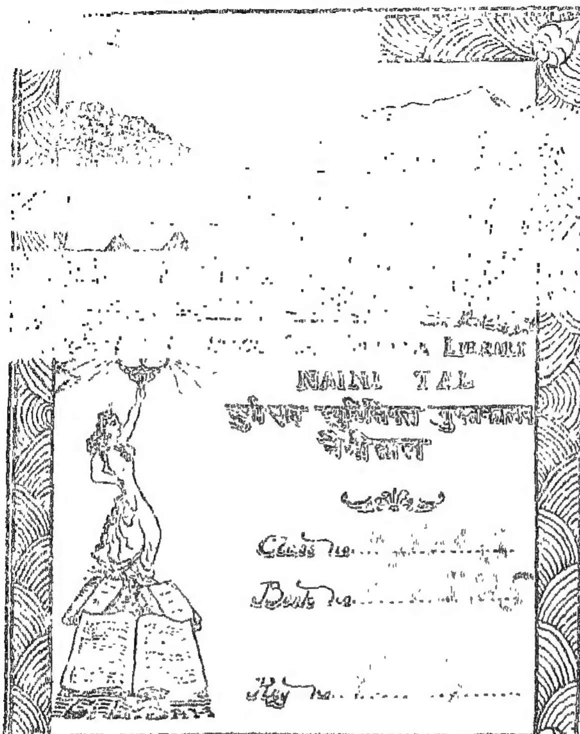

LIBRARY
NAINI TAL
Class No.
Book No.
Key No.

संसार के आश्चर्य

सम्पादक

देवकीनन्दन बन्सल

विक्रेता

मधुर मन्दिर हाथरस यू० पी०

प्रकाशक-
देवकीनंदन शर्मा
विकल विशारद
गानविद्या कार्यालय हाथरस यू० पी०

मूल्य-
१॥।) एक रुपया बारह आना

मुद्रक
ला० रामप्रसाद गुप्त
कैर

अनोखे शाहखर्च

करीब सत्तर साल पहले की बात है। अमेरिका में एक अनोखे नवयुवक ने अजीब तहलका मचा रक्खा था। सौ-सौ डालर के अनेक नोट अपने कोट और पतलून में पिनों से लगा कर प्रतिदिन वह बाजार में घूमने निकलता था। बड़े मजे की बात तो यह थी कि उन नोटों को चाहे कोई भी निकाल ले सकता था।

कहते हैं, वह प्रायः भीड़ के समय सैकड़ों डालर फेंककर तमाशा देखा करता था। एक दिन एक सुन्दर औरत अचानक उसके पास से निकली। नवयुवक की नजर उसपर पड़ी तो उसने उसी जगह सौ-सौ डालर के मुट्ठी भर नोट उसके सामने फेंक दिए। वह प्रायः जौहरी की दूकानों से उसके सभी हीरे खरीद लेता और अपने मित्रों में बाँट डालता था। एक दिन एक गाड़ी वाले ने उससे कहा कि उसकी स्त्री एक हीरे के ब्रूच के लिये दिन रात उसके पीछे पड़ी रहती है। उस नवयुवक ने कहा कि तुम अपनी गाड़ी मेरे हाथ बेचकर ब्रूच खरीद लो। गाड़ी वाला तुरन्त राजी हो गया और अपनी गाड़ी नवयुवक के हाथ तीन हजार डालर में बेच दी। लेकिन थोड़ा दूर घूमने के बाद उस नवयुवक ने गाड़ी फिर उसे वापिस करदी।

उस नवयुवक का नाम था 'जौन स्टील'। लड़कपन में ही उसके माता-पिता की मृत्यु हो गई। संयोग से उसके चाचा के कोई सन्तान न थी। उन्होंने उसे गोद ले लिया। लेकिन, थोड़े ही दिनों बाद उनकी भी मृत्यु हो गई। अब सि[illegible]

बाकी बच रही। एक दिन अचानक पता चला कि बुढ्ढी स्त्री के मकान के नीचे तेल का कुँआ है। बस, फिर क्या था; धन पानी की तरह आने लगा। बूढ़ी औरत अपने धन को तिजोरी में बन्द करती रही। लेकिन, एक दिन सहसा उसके कपड़े में आग लग गई और वह तुरन्त ही मर गई।

'जौन स्टील' उस समय मुश्किल से बीस वर्ष का होगा। वह तेल की एक गाड़ी हाँकता था। उसने तुरन्त अपनी नौकरी पर लात लगाई। तिजोरी में बन्द ५० हज़ार डालर देख कर उसकी आँखें चकाचौंध हो गईं।

साल भर बाद ही उसने तेल का कुँआ दस लाख डालर में बेच दिया और अपने एक दोस्त के साथ सैर करने के लिये निकल पड़ा। कहते हैं, एक जगह किसी होटल के एक क्लर्क से उसका झगड़ा हो गया। जौन स्टील क्रोध से भर उठा। उसने पूरा का पूरा होटल खरीद लिया। इसके बाद उसका सबसे पहला काम हुआ क्लर्क को गोली से उड़वा देना। बाद में होटल के फाटक पर यह लिखवा कर टाँग दिया कि यहाँ भोजन और शराब मुफ्त मिलती है। इस तरह उसने कई हज़ार डालर बात की बात में उड़ा दिये।

सिर्फ तीन साल के अन्दर ही उसने अपनी अथाह धन-राशि पानी की तरह बहा दी। अन्त में वह पैसे-पैसे के लिये मुहताज हो गया। सौ-सौ डालर के नोटों के पुलिन्दे फेंकने वाला व्यक्ति फिर दो डालर से अधिक कभी भी नहीं कमा सका।

× × ×

चार्ल्स वैल्स की कथा और भी अनोखी है। फ्रांस के एक जुआ-घर में वह एक दिन दाँव लगा रहा था। भाग्य ने जो साथ दिया तो उस दिन अथाह धन-राशि उसके हाथ अनायास

ही लग गई। असीम उत्साह से भरा वह अपने होटल की ओर लौटा। प्रातःकाल का समय था। अतः वह बरामदे में टहलने लगा। उसने देखा कि हजारों दुबले पतले आदमी चिथड़े लपेटे इधर उधर आ-जा रहे हैं। उसे क्या सूझी कि वह तुरन्त ही अपने कमरे में चला गया और वहां से दस-दस पाँच-पांच फ्रैंक के बहुत-से नोट लेकर लौटा। आते ही एक मुट्ठी नोट सड़क पर डाल दिये। भीड़ उस पर टूट पड़ी। इसके बाद फिर उसने वैसा ही किया। अब तो लोगों की अपार भीड़ इकट्ठी हो गई। मि० चैनलर के पास के जब दस और पांच फ्रैंक के नोट खतम हो गये तो वे सौ-सौ और पचास-पचास फ्रैंक नोटों की वर्षा करने लगे। इस तरह बात की बात में चालीस हजार फ्रैंक के नोट हवा हो गये। इसके बाद वह अनोखा अमेरिकन अदृश्य हो गया। फिर वह कहीं नहीं दिखाई पड़ा।

दिमागी जादूगर

थेमिसटोक्लस, (कोई-कोई पिथेगोरस कहते हैं) के विषय में कहा जाता है कि उसे एथेंस नगर में रहने वाले बीस हजार निवासियों में से प्रत्येक का नाम याद था और वह उनमें से किसी को भी नाम लेकर पुकारा करता था।। प्रसिद्ध जर्मन इतिहासकार नेबूर एक समय किसी आफिस में क्लर्क का काम करता था। दुर्भाग्यसे एक दिन आफिस में आग लग गई और सारे कागजात जल कर राख हो गये। कहते हैं, तुरन्त ही नेबूर ने कुछ जरूरी रजिस्टरों को ज्यों की त्यों कापियाँ केवल स्मृति से तैयार कर डालीं। रोम निवासी हार्टेन्सियस नीलामों आदि में बैठता था। दिन भर में कितनी चीजें बिकीं, उनका दाम, खरीददार का नाम आदि छोटी से छोटी बातें भी वह संध्या

समय ठीक-ठीक बता दे सकता था। फारिस का बादशाह साइरस भी कुछ कम अद्‌भुत नहीं था। कहते हैं, उसे अपनी विशाल सेना के प्रत्येक सिपाही का नाम याद था। प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक बेन जानसन को अपनी सारी रचनाएँ कंठस्थ थीं। लिथुआनियां के प्रधान रब्बी एलिजा की स्मरण-शक्ति ऐसी अद्‌भुत थी कि एक बार जिस पुस्तक को वह पढ़ लेता था, उसे कभी नहीं भूलता था। कहते हैं, इस तरह उसने २५०० विशालकाय पुस्तकें एकदम याद करली थीं।

हिन्दुस्तान भी इस ओर किसी से पीछे नहीं रहा है। हमारे देश में तो इस तरह के लोगों का एक वर्ग ही तैयार हो गया था। इस वर्ग के लोगों को 'श्रुतिधर' कहते थे। इन लोगों की विशेषता यह होती थी कि एक बार ही किसी चीज को सुनकर वे कंठस्थ कर लेते थे। कहते हैं, एक राजा के पास ऐसे अनेक श्रुतिधर थे। इन्हीं के बल पर राजा ने घोषणा कर रक्खी थी कि दरबार में आकर जो कोई नई रचना सुनावेगा, उसे एक बहुत बड़ी रक़म इनाम में दी जायगी। लेकिन कोई भी नवागन्तुक इस इनाम को नहीं जीत पाता था। बात ये थी कि बेचारे आकर सुनाते तो जरूर थे नई रचना; लेकिन, राजा के श्रुतिधर अपनी कला में इतने निपुण थे कि नवागन्तुक का बोलना बन्द होते ही फौरन वही चीज ज्यों की त्यों खुद दोहरा देते थे।

थोड़े दिनों पहले भी करीब-करीब ऐसी ही एक घटना हुई थी। कहते हैं, गंगा के किनारे नहाते समय दो यूरोपियन सैनिकों में वाद-विवाद हो गया। बात बढ़ते-बढ़ते यहां तक आ गई कि दोनों मारपीट तक कर बैठे। अन्त में उनका मुकदमा एक अदालत में पहुँचा। ऐसा कोई गवाह न था जिसकी मदद से जज [illegible] था। अन्त में खोजते-खोजते पता लगा कि [illegible] दृश्य देखा नदी में स्नान कर रहे थे [illegible]

ब्राह्मण देवता बुलाये गये। अदालत में उन्होंने लड़ते समय दोनों सिपाहियों के बीच जो वाद-विवाद हुआ था, उसे ज्यों का त्यों सुना दिया। बड़े आश्चर्य की बात तो यह है कि ब्राह्मण देवता को अंग्रेजी का कुछ भी ज्ञान नहीं था।

शायद, इन बातों पर बहुत से लोगों का विश्वास न जमे। लेकिन, ऐसी अद्भुत स्मरण-शक्ति वाले लोगों की आज भी हिंदुस्तान में कमी नहीं है। एक ऐसे ही अनोखे मनुष्य का हाल हम नीचे दे रहे हैं।

बंगाल प्रांतस्थ ढाका जिले के बजरा जोगिनी गाँव में रहने वाले श्री सोमेशचन्द्र बसु को दिमागी जादूगर कहना अत्युक्ति न होगी। योगाभ्यास द्वारा आपने गणित संबन्धी प्रश्नों को थोड़े ही समय में, मन ही मन हल कर लेने की अपनी ईश्वरदत्त शक्ति का अद्भुत विकाश कर लिया है। आपनी इस शक्ति का प्रदर्शन करने के लिये आपने यूरोप और अमेरिका का भी भ्रमण किया है। आपकी अद्भुत प्रतिभा को देखकर वहां के बड़े से बड़े विद्वानों को भी दांतों उँगली दबानी पड़ी है।

आप सौ अंकों की बृहद् संख्या को उतनी ही बड़ी संख्या से मन ही मन बड़ी सुगमता पूर्वक गुणा कर दे सकते हैं। केवल गुणन ही नहीं, ऐसे ही लम्बे चौड़े भाग, भिन्न, दशमलव, पुनरावर्ती दशमलव, समीकरण आदि के प्रश्न आप इतने थोड़े समय में मन ही मन लगा लेते हैं कि चकित रह जाना पड़ता है। लंबी चौड़ी सैकड़ों अंकों की पूर्ण संख्याओं के वर्गमूल, घनमूल, चतुर्थीमूल, पंचघातमूल, आदि से लेकर ४०६ वीं घातमूल तक विचार द्वारा निकाल लेना आपके लिए एकदम साधारण और अधिक से अधिक एक सेकेंड का काम है। सिर्फ यही नहीं, बड़ी बड़ी संख्याओं के वर्ग, घन, चतुर्घात, पंचघात

षड़्घात आदि का निकालना भी उनके लिये उतना ही आसान है।

संखों या उससे भी अधिक वर्षों पूर्व तक की तिथियों का निकाल लेना उनके लिये कोई टेढ़ा प्रश्न नहीं; इसके लिए वह कोई समय नहीं लेते और तुरंत उत्तर बतला देते हैं।

न्यूयार्क की एक सभा में वसु महोदय २२ अगस्त सन् १९३० को अपने अद्भुत प्रयोग दिखाने के लिये निमंत्रित किये गए। वहां एक सज्जन ने निम्न लिखित स्वरचित तीन प्रश्न ब्लैक-बोर्ड पर लिखे और वसुबाबू ने मन ही मन लगाकर उनके ये उत्तर दिए—

प्रश्न——३१९९३९१२०६५९९१९१२३ का घनमूल निकालिये।

उत्तर—६८३९४७

समय—एक सेकेंड के भीतर।

२ प्रश्न—३५२९४७११४५७६०२६५१३२३०१८९७३४२०५५-८६६१७१३९२ का सप्तदश घातमूल निकालिए।

उत्तर——२१२

समय——एक सेकेंड में।

३ प्रश्न——१८७९०८०९०४ का घनमूल निकालिए।

उत्तर——१२३४

समय——एक सेकेंड के भीतर।

एक दूसरे महाशय ने निम्न-लिखित प्रश्न लिखा—

'९५२८१२८' का पंचघात निकालिए।

३ मिनट, ४२ सेकेंड में वसुजी ने उत्तर बतला दिया—

७८५३०५१८८७१५९० [illegible]।

१८ वीं एप्रिल, १९३१ को न्यूयार्क के वैनडाइक स्टूडियो के आर्टिस्ट श्रीयुत 'जॉन ओ नोल' के सामने वसुजी को इस प्रकार का प्रश्न दिया गया—

८५३१२७४६९३७६८४१३२५७२६१३३५६३९७८१२६१५७३९८२ ५७३१२४८७३६४९७१२५६५३२५३४७८१७२८६३५७२३७४८१२५२ ५७४६१२८३६९२४३७६१८५२ को ७४६३८१२९४७३६४७९२८३७४३ ५१७९६२९५६५३६८४१५८९६७९१३८५७२९५२५१८३८१५२८१२ ५९५९१८१५१२७६३९७८२९५७८१६३९५३२८९६४७२५७३६९ से गुणा कीजिए।

इन अंक-समूहों पर एक दृष्टि डालकर वसुजी ने अपनी आँखें बन्द कर लीं; और, तब मूर्तिवत बैठे हुए इस प्रश्न को मन ही मन लगाने लगे। स्टूडियो की खिड़कियां खुली हुई थीं—बाहर सड़क पर मोटरें, लारियां, फायर इंजिन आदि शोर-गुल मचाते हुए दौड़ रहे थे। लेकिन, वसुजी की गणना में इन सब से तनिक भी बाधा न पड़ी। वे चुपचाप बैठे हुए अपने प्रश्न को हल करते रहे।

५२ मिनट ३० सेकेंड में उनका उत्तर तैयार होगया। उन्होंने इस प्रकार लिखा—६३६७५८३५३२८७९३०६२५६३२८९७७३६६ २०१६१३१७२८२२०३२५९९७५४४०१७०८१७७३५४६१८६७९६३३ ६७३८[illegible]५६९८६३२०७२६५९७५ १९२८[illegible]५००५७७४२८५७९१७१ ५८०[illegible]१३८५२०६२३३२६३५७ [illegible]

उत्तर लिख जाने के बाद 'ओ' नील महोदय ने वसुजी से पूछा कि ५९ वीं पंक्ति का ३३ वां अंक क्या है? पूछते ही उन्होंने उत्तर दिया—

"आठ, अर्थात १८ के ८ रक्खे गये, और एक हासिल लगा।"

मोर्नाल महोदय आश्चर्य से स्तंभित हो गये।

× × ×

अमेरिका में एक ऐसा विचित्र आदमी है, जो नाक से हारमोनियम बजाता है और किसी भी गाने के साथ मजे से सुर मिला लेता है।

× × ×

सस्सेक्स में जौन रिचार्डसन नामक एक तेइस साल का नवयुवक है। लकवा के कारण उसके हाथ खराब हो गये हैं। लेकिन, वह दांत से खूब मजे में लिख सकता है।

महाशिवगढ़, काठियावाड़, में रहने वाला एक आदमी लिखने के लिये हाथ के स्थान पर पांव से काम लेता है।

× × ×

बम्बई में एक अनोखी लड़की है। वह तुर्की की रहने वाली है। जन्म से ही उसे दोनों हाथ नहीं हैं। वह अपने पैर के अंगूठों की मदद से लिख सकती है, कपड़े पहन सकती है या उतार सकती है, अपना खाना तैयार कर सकती है, स्टोव में हवा भर सकती है, दियासलाई जला सकती है, चाय पी सकती है और यहां तक कि ग्रामोफोन पर रेकर्ड चढ़ा सकती है और सुई भी बदल सकती है। टेलीफोन करना या ताश खेलना उसके लिये एक दम आसान है।

उसके पैर के अंगूठे बड़े अद्भुत हैं। सुई में खुद तागा डालकर वह कशीदे का अच्छा काम भी कर लेती है। सच बात तो यह है कि अपना अधिकांश कपड़ा वह खुद ही तैयार कर लेती है।

× × ×

स्विजरलैंड में भी एक ऐसा ही बिना हाथ का नवयुवक है। उसका नाम है, चार्ल्स पार्क। पैर के अंगूठों की मदद से वह अनेक काम तो कर ही सकता है, साथ ही सुन्दर चित्रकारी भी कर लेता है।

× × ×

सर्कस में बैलेंस के अनेक खेल तुमने देखे होंगे, लेकिन, इस ओर 'हरा मिलेन्ट' ने जो नाम कमाया है, वह दूसरे किसी को नसीब नहीं। हरा-मिलेन्ट अपनी कला में अत्यन्त दक्ष है। दर्शकों के ऊपर लटकते झूले के डंडे पर रक्खी गेंद पर वह सिर के बल पर उलटा हो जाता है। झूला काफी ज़ोर से चलता रहता है; लेकिन, क्या मजाल कि मिलेन्ट ज़रा भी इधर से उधर हो।

× × ×

आस्ट्रेलिया में रहने वाले मि० मुरे भी एक अनोखे आदमी हैं। अमेरिका का मिलडल सर्कस जैसी ऊँची इमारत के भी ऊपर हाथ पैर बाँधकर उन्हें लटका दिया जाता है। चाहे कितना ही कसकर क्यों न बाँधा गया हो, वे फौरन ही बंधनों से मुक्त होकर उसी हालत में अपना सारा कपड़ा उतार डालते हैं। आकाश में वे इतने ऊँचे लटके रहते हैं कि यदि ज़रा भी चूकें तो फिर उनकी हड्डी का भी पता न लगे।

× × ×

हॉलीवुड के मैरलौक साहब भी कोई कम जीवट के आदमी नहीं हैं। काफी मजबूत शीशे की एक दीवार सामने खड़ी कर दी जाती है। मोटर साइकिल पर सवार होकर मैरलौक साहब ६० मील प्रति घंटे की चाल से आते हैं और शीशे की दीवाल में छेद करते हुए दूसरी ओर निकल जाते हैं। शीशा चूर्ण-चूर्ण

हो जाता है; लेकिन, मैरलॉक के शरीर को तनिक भी क्षति नहीं पहुँचती।

× × ×

दुस्साहसिक कार्य दिखाने में मिस कारमर ने बहुत ख्याति प्राप्त की है। एक खास तौर पर बनाए गए ऊंचे प्लेट फार्म पर वह घोड़े पर सवार होकर चढ़ जाती है और वहाँ से बिना किसी हिचकिचाहट के चालीस फीट नीचे तालाब में कूद पड़ती है। बड़े मजे की बात तो यह है कि यह सारा खेल दिखाते समय वह घोड़े की पीठ से जरा भी अलग नहीं होती।

× × ×

मिस लिलयन बायर भी किसी से कम नहीं हैं। ज़मीन से हज़ारों फीट ऊंचे पर तेजी से उड़ते हवाई जहाज़ के सभी हिस्सों पर वह फुर्ती से घूम आती है। सबसे अद्भुत उनका काम होता है, द्रुत गति से उड़ते जहाज़ के नीचे लटकती रस्सी में एक पैर फंसाकर उलटे लटक जाना!

ज़िन्दा सांप खा जाता है

बंगाल के पबना जिले में रहने वाले प्रो० साहा का दावा है कि वे किसी भी प्रकार का तेज़ से तेज़ ज़हर पी जा सकते हैं। हठयोग की साधना से ही उन्होंने यह कला सीखी है। शीशा चबा जाना या ग्रामोफोन की सुइयाँ और रेजर के ब्लेड खा जाना भी उनके बायें हाथ का खेल है। लेकिन, इन सबसे अद्भुत कार्य है, उनका फुंकार मारते भुजंग को भी जीवित ही चबा जाना। प्रोफेसर साहब एक [illegible] हाथ में लेकर आगे बढ़ते हैं, गर्दन पकड़कर सांप को ऊपर करते हैं और उसे चबाकर मार डालते हैं।

कुछ साल पहले कोरिंगा नामक एक हिन्दुस्तानी फकीरिन ने यूरोप में तहलका मचा दिया था। तलवार और चाकू को वह इस तरह घुमाती थी कि जैसे कागज हो। वह तेज तलवार पर बिना किसी हिचकिचाहट के अपना शरीर रख देती थी; अपने मांस में छुरा घुसेड़ लेती थी; और मजा यह कि ऐसा करने से न तो उसका शरीर घायल होता था और न एक बूंद खून ही बाहर निकलता था।

दस पीढ़ी देखने वाला

चीन के कांसू प्रांत में रहने वाला आह-क्वी बड़ा भाग्यशाली था। उसने अपने लड़के के लड़के के लड़के के लड़के के लड़के के लड़के के लड़के के लड़के के लड़के के लड़के को देखा था। कहते हैं, एक बार चीन के बादशाह ने अपने राज्य में सबसे सुखी मनुष्य की खोज कराई तो आह-साथ नहीं महोदय ही उनके सामने ले जाकर खड़े किये गये।

सन् १७९० में आह-क्वी को १२० प्रप-पोते थे।

× × ×

मिस्र का प्रसिद्ध फराओ रामीज द्वितीय १६२ बच्चों का पिता था—१११ लड़के और ५१ लड़कियाँ।

× × ×

स्याम के राजा राम पंचम को, जिसकी मृत्यु सन् १९१० में हुई, ३००० स्त्रियाँ और ३७० बच्चे थे—१३४ लड़के और २३६ लड़कियाँ।

× × ×

पोलैंड के फौजीन नामक गाँव में एक अनोखी औरत रहती थी। उसका नाम था, मारगरेट ऑ सीकोला। सन् १७६३ ई० में १०८ वर्ष की उम्र में उसकी मृत्यु हुई।

कहते हैं, ९४ वर्ष की उम्र में उस औरत ने तीसरी शादी की। यह तीसरा पति १०५ वर्ष का था। चौदह वर्षों तक दोनों बड़े सुख से रहे। इस बीच उन्हें दो लड़के और एक लड़की भी पैदा हुई।

लेकिन, इन तीनों बच्चों में लड़कपन से ही बुढ़ापे के लक्षण दिखाई पड़ते थे। उनका बाल पका हुआ था और मुंह पोपला था। दाँत तो उन्हें कभी निकले ही नहीं। बड़े होने पर भी वे बहुत कमजोर थे। कड़ी चीज वे नहीं चबा सकते थे। क़द तो उम्र के लिहाज से उनका ठीक था; लेकिन कमर झुकी हुई थी।

शायद, इन बातों पर बहुत से लोगों का विश्वास न जमे। लेकिन, उस गाँव के गिर्जे में रखे जाने वाले तत्कालीन जन्म-मरण के रजिस्टर में ये सारी बातें दर्ज हैं।

× × ×

पीअर डीफर्नेल महोदय को तीन बच्चे थे; लेकिन, तीनों का जन्म भिन्न-भिन्न शताब्दियों में हुआ था। पहला लड़का सन् १६९९ ई० में पैदा हुआ, दूसरा सन् १७३८ ई० में और तीसरा सन् १८०१ ई० में। तीनों ही लड़के थे और तीनों का जन्म तीन पत्नियों से हुआ। डीफर्नेल ने अपनी तीसरी शादी १२० वर्ष की उम्र में एक १९ वर्ष की लड़की से की थी। सन १८०९ ई० में १२९ वर्ष की उम्र में उसकी मृत्यु हुई थी।

× × ×

मिसेज बर्नर्ड शिनबर्ग ६९ बच्चों को जन्म देने के बाद ५६ वर्ष की आयु में मरी। आस्ट्रिया के समीप जर्मन सीमान्त के एक गाँव की वह रहने वाली थी। कहते हैं, मिसेज बर्नर्ड को चार बार चार-चार बच्चे, सात बार तीन-तीन बच्चे और सोलह बार दो-दो बच्चे एक साथ पैदा हुए थे।

पहली स्त्री के मरने के बाद मि० बर्नर्ड ने फिर दूसरी शादी की और इस दूसरी औरत से भी उन्हें १६ बच्चे हुए।

× × ×

यूगोस्लेविया के मैथ्यू बाबर महोदय की स्त्री को ८८ वर्षों तक हर साल एक बच्चा पैदा हुआ। सभी बच्चे स्वस्थ एवं सबल थे।

× × ×

जर्मनी के अर्लबर्ग नगर में रहने वाले लूकस-शैफेल महोदय का परिवार बहुत बड़ा था। मरने के समय उनके १०६१ उत्तराधिकारी मौजूद थे। लूकस साहब के ५ बेटे, ८७ पोते, ४४६ पर-पोते और ५५२ छड़-पोते थे।

× × ×

प्रसिद्ध गर्भ-निरोधक मिसेज मारगरेट सेंगर ने जूक्स नामक एक मनुष्य का उल्लेख किया है। कहते हैं, उसे १२०० सन्तानें थीं। मिसेज सेंगर के अनुसार इसमें १३० भिखारी, ५० वेश्या, ६० चोर, १३० अपराधी और ७ हत्यारे थे।

× × ×

एबसेनबर्ग के काउन्ट बेब्रू को ३२ लड़के थे। ये सभी लड़के जर्मनी के बादशाह हेनरी द्वितीय की सेना में काम कर रहे थे।

× × ×

रोम के हिरयोनिमस नामक मनुष्य ने २१ औरतों से शादी की—उसकी २१ वीं औरत उस समय तक अपने २० पतियों को तलाक़ दे चुकी थी।

× × ×

इटली में रोजेटा मारापगोनी नामक एक लड़की है। वह २० फीट ऊँचे से जमीन पर गिराई जाती है और ठीक रबड़ की गेंद की तरह वहीं खड़ी उछल जाती है। उसे चोट कुछ नहीं लगती।

नोट के शौकीन

लन्दन के एबनमोर नामक एक सज्जन को दुनिया भर के नोट बटोरने का शौक़ है। कहा जाता है कि उनका नोटों का संग्रह दुनियां भर में क़ीमती है। उसमें सौ देशों में चलने वाले पिछली कई शताब्दियों के चालीस हजार से ऊपर के नोट हैं। दुनियां का सबसे क़ीमती नोट उन्हीं के पास है। यह उस वक्त का है जब जर्मनी में मार्क की दर गिर रही थी। यह १०००००००००००-००००००००००००००००० मार्क की दिखाऊ कीमत का है। दुनियां का सबसे पुराना नोट भी इसमें है, जो आज से सात सौ वर्ष पहिले चीन में चलता था।

× × ×

वाशिंगटन में एक दरजी है, जो इकट्ठे पंद्रह सुइयों में एक साथ धागा पिरो देता है।

विचित्र दृष्टि-शक्ति

काश्मीर के निवासी मि० खुदाबख्श ब्यूक की दृष्टि-शक्ति बहुत विलक्षण है। वे आंखों में पट्टी बंधवाकर पढ़ सकते हैं। कुछ साल पहले उन्होंने लन्दन में अपनी इस विचित्र प्रतिभा का प्रदर्शन किया था। उन्होंने आंखों में पट्टी बंधवाकर मोटरकार चलाई, बिलियर्ड खेली, बन्दूक से निशाना लगाया और विभिन्न रङ्गों को भी पहिचाना। वैज्ञानिकों का कहना है कि खुदाबख्श की आंखों में [illegible] नामक [illegible]-शक्ति मौजूद है। उनकी दृष्टि शक्ति पत्थर या लोहे के नीचे को भी पार कर सकती है।

लेकिन, मि० खुदाबख्श में एक और भी विशेषता है। [illegible] लन्दन शहर में आपको [illegible] [illegible] लोगों को

दंग कर दिया था। अनेक प्रसिद्ध अंग्रेज डाक्टरों ने आग पर चलने के पहले खुदाबख्श के पैरों की काफी परीक्षा करली थी। वे यह जानना चाहते थे कि पैरों में कोई ऐसी चीज तो नहीं लगाली गई है, जिससे जलती हुई अग्नि प्रभाव ही न डालसके। लेकिन परीक्षा के बाद उन्हें मानना पड़ा कि साधारण मनुष्य के जैसे ही खुदाबख्श के पाँव हैं।

खूनी राजा

सन् १७८७ ई० में अफ्रीका की जुलू जाति में शाका नामक एक क्रूर व्यक्ति का जन्म हुआ था। वह सन् १८२८ ई० तक अपनी जाति का मुखिया था। उसके राज्य का विस्तार २५००,०० वर्गमील था। वह अपने कैदियों को और उन आदमियों को मरवा डालता था, जो उसके हुक्म के खिलाफ शादी करते थे अथवा कौमारावस्थामें किसी कुमारी से बातें करते थे। जिस दिन उसकी माता की मृत्यु हुई, उस दिन शोक मनाने के लिये, उसने ७००० मनुष्यों को तलवार के घाट उतार दिया। उसने स्वयं अपने बाल-बच्चों, स्त्रियों तथा परिवार के ४०० व्यक्तियों की हत्या करवा डाली थी। करीब २० लाख मनुष्यों की हत्या करवाकर वह स्वयं अपने भाइयों द्वारा मारा गया।

× × ×

जापान में एक क्लब है, जिसमें वही व्यक्ति शामिल हो सकते हैं जिनके दाढ़ी हो; सो भी ऐसी वैसी नहीं, कम से कम छः फुट लम्बी। इससे कम लम्बी दाढ़ी होने पर वहाँ किसी की गुञ्जाइश नहीं। प्रत्येक सदस्य अपनी दाढ़ी पर एक सुन्दर थैला चढ़ाये रहता है, कि कहीं उसकी धूल और गन्दे वातावरण से पाली हुई दाढ़ी को कोई नुकसान न पहुँचे जाय,

कहीं अटक-भटक कर वह छोटी न हो जाये और जनाब को कलब की सदस्यता में हाथ न धोना पड़े। जापान की राजधानी टोकियो में इन दाढ़ियों का एक वार्षिक उत्सव होता है, जिसमें लम्बी, नुकीली और बड़ी-बड़ी दाढ़ियों की नुमाइश भी होती है। इस कलब के अध्यक्ष की अवस्था करीब ८० वर्ष की है और उनकी श्वेतवर्ण दाढ़ी ३॥ फीट लम्बी है।

× × ×

बिना किसी आधार के शून्य में टंगे रहना; शायद, इस बात पर अधिकांश लोगों का विश्वास ही न जमे। लेकिन, हिन्दुस्तान के योगियोंके लिये यह बायें हाथ का खेल है। दक्षिण भारत में मि० पी० टी० प्लंकेट ने यह खेल अपनी आंखों से देखा था और कैमरे से स्वयं अनेक तसवीरें भी उतारी थीं

सांप पूर्व जन्म का पति ?

लड़की और सांप की विचित्र मौत

आगरा जिले के गांव बाह से एक विचित्र घटना की खबर मिली है। एक सात वर्ष की लड़की अपने साथियों के साथ जंगल में खेल रही थी। उसने एक सांप की बामी देखी और यह कहकर कि यह मेरे पति का घर है रुक गई। उसने बामी के सात चक्कर लगाये और हर चक्कर पर एक कंकड़ी उस बामी में डाली। जब सातवां कंकड़ डाल चुकी तो बामी में से एक सांप निकला और लड़की के शरीर से लिपट गया। साथियों ने गांव में खबर करदी। लोग लाठी लेकर मारने आये, पर लड़की ने यह कहकर उन्हें रोक दिया कि मेरा पूर्व जन्म का पति है। तीन दिन तक सांप लड़की के सीने पर बैठा रहा। फिर सांप और लड़की दोनों मर गये। अब उस स्थान पर लोग जमा होकर पूजा करने लगे हैं।

भारत के वीर सेनानी—

जवाहरलाल नेहरू

[जिसने जर्मनी के भाग्य-विधाता हर हिटलर के इच्छा प्रगट करने पर भी भेंट न करके डा० गोयबल्स को [illegible] दिया और जो जर्मन राष्ट्र को अपनी तेजस्विता दिखला चुका है।]

१९३८ का साल था और अगस्त का महीना। मैं म्युनिक यूनीवर्सिटी की मेडीकल फैक्टरी के प्रेक्टिकल [illegible] में था। मेरे प्रोफेसर ने मुझसे एक सवाल पूछा। मैं उसका जवाब देने खड़ा ही हुआ था, कि [illegible] खटखटाया और मेरे नाम का एक तार मेरे हाथ में [illegible]। [illegible] क्लास ताज्जुब में थी, ऐसा [illegible] तार था, [illegible] में दिया गया। तार पढ़ने पर मालूम हुआ कि वह [illegible] जरूरी था। मेरे छोटे भाई ने पेरिस से पण्डित जवाहरलाल नेहरू के म्युनिक पधारने की इत्तला तार से भेजी थी। प्रोफेसर ने तार का मजमून पूछा। मैंने थोड़े से शब्दों [illegible] को समझा कर तार का मतलब समझा दिया। तब तो वह बोले—इस तार को सारी क्लास में सुनाया जाय। तुम्हारे देश के इतने बड़े नेता का स्वागत करने में जर्मन विद्यार्थी भी बड़ा खुश होंगे। मैंने तार का [illegible] जर्मन भाषा में क्लास के सब [illegible] को सुना दिया।

पण्डित नेहरू जी के म्युनिक आने में [illegible] [illegible] के प्रेसीडेंट [illegible]

असोसियेशन के भारतीय विद्यार्थियों की एक बैठक बुलाई। वहाँ उनके स्वागत तथा म्यूनिक के कार्यक्रम का निश्चय किया गया।

छठी अगस्त थी, जब पंडित नेहरूजी सुबह सात बजे की गाड़ी से पेरिस से म्यूनिक पधारे। सर्दी कड़ाके की पड़ रही थी। फिर भी भारतीय विद्यार्थियों के अलावा ३०० जर्मन विद्यार्थी स्टेशन पर पण्डित जी की अगवानी के लिये पहुँच गये थे। गाड़ी के प्लेटफार्म पर लगते ही पंडितजी अपनी पुत्री इन्दिरा के साथ उतर पड़े। आप उस समय सादे युरोपीयन लिबास में थे। उनकी पुत्री इन्दिरा भी यूरोप की भद्र महिला के वेश में थीं। सबसे पहले फूलों की माला मैंने पण्डितजी के गले में पहिनाई। जर्मनी में फूलों की माला बनवाने में भी अजीब परेशानी उठानी पड़ी थी। वहाँ बागों में फूलों को पिरोने का ढंग कोई नहीं जानता। आखिर हमने अपने हाथों मालायें तैयार की थीं।

माला पहनाते ही प्लेटफार्म पं० जी के जयकारों से गूंज उठा। जर्मन विद्यार्थी और जनता भी उस जयघोष में सम्मिलित थी। स्टेशन पर उपस्थित हजारों जर्मन बड़े कौतूहल से इस दृश्य को देखने को उमड़ पड़े थे। उनमेंसे कुछ पंडितजीके 'आटोग्राफ' (हस्ताक्षर) लेने को उतावले थे। कुछ उनका फोटो उतारने को कैमरा लिये खड़े रहे थे। उस भारी भाड़ में से निकलने में नेहरू जी को म्यूनिक में एक आलीशान होटल (होटल फीयर यारेस्साईटन) में ठहराया। होटल पहुँचकर नेहरूजी ने पूछा:—

"कहां चलना होगा?"

"छठी मंजिल पर" मैंने कहा।

"इतना चढ़ना होगा?"

"नहीं, लिफ्ट जायगा।"—कहते-कहते लिफ्ट आ गया। [illegible] छठी मंजिल पर पहुँचे। वहां कमरे के ठाट-बाट देखकर [illegible] जी एक बार तो पड़ बिगड़े और बोले:——

"तुम अजीब आदमी हो। तुमने मुझे क्या कोई नरेश समझ लिया है। मैं तो गरीब आदमी हूँ। भाई, मुझे ऐसे सजधज की क्या जरूरत थी?"

मैं सोच में पड़ गया।

मुझे चिन्तातुर देख वह हंस पड़े। बोले, चलो, अब सही। किराया ही तो देना है। दे देंगे

नित्य कर्म से निबट कर जब नेहरू जी तैयार हो गये, तो मैंने उन्हें म्यूनिक का कार्यक्रम बताया। उसमें प्रोग्राम डिनर का भी था, जिसमें कुछ चुने हुए व्यक्तियों से बातचीत करने का तय हुआ था, नेहरूजी इसके लिये राजी नहीं हुए। उन्होंने साफ ही कह दिया, कि मैं यहां केवल निजी तौर पर आया हूँ। मेरा उद्देश्य महज जर्मनी की सैर करना है। मैं किसी जर्मन से किसी भी विषय पर कोई चर्चा या परामर्श नहीं करूँगा। केवल भारतीयों ही से भेंट कर उनका परिचय लूंगा। इसलिये आप मेरे प्रोग्राम के इस हिस्से को एकदम काट दीजिये।

बात करते करते उन्हें अपने सामान की याद आ गई। उनका ट्रंक का सामान अभी तक नहीं आया था। गाड़ी से उतर कर सामान की रसीद हमारे सुपुर्द कर वह होटल में आ गये थे मगर स्टेशन पर मालूम हुआ कि सामान कहीं रास्ते में ही अटक गया है। हमने स्टेशन मास्टर को टेलीफून किया तो उसने पिछले स्टेशनों पर पूछताछ कर यह पता लगाया कि पंडित जी का सामान फ्रांस और जर्मनी की सरहद के महकमा चुंगी पर तलाशी के लिये रुका पड़ा है। हमारी चेतावनी पर स्टेशन मास्टर ने बहुत जल्द सामान मँगवाने का विश्वास दिलाया। लगभग २-३ घण्टे के अन्दर सामान पण्डित जी के होटल में पहुँच गया। नहीं तो पण्डितजी जर्मन रेलवे पर मुकद्दमा दायर करने की ही सोच चुके थे।

उस दिन पंडितजी म्यूनिक के दर्शनीय स्थानों को देखते रहे। म्यूनिक में रमणीक दृश्यों की कमी नहीं। मुझे [illegible] मालूम हुआ, कि राजनीति के ज्वालामुखी पर बैठा [illegible] सेनापति प्राकृतिक सौन्दर्य को देख कर किस प्रकार [illegible] तरह मुग्ध हो सकता है।

दूसरे दिन ७ अगस्त को, सुबह का नाश्ता कर नेहरूजी जर्मनी के हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों के [illegible] सम्बन्ध में [illegible] बातचीत कर रहे थे, कि फोन की घण्टी बजी। नेहरूजी ने आश्चर्य प्रकट किया, कि इस वक्त देश में कहीं [illegible] कौन फोन करता होगा। आप इस प्रकार किसी के फोन का इन्तिजार करते थे। यह टेलीफोन यहाँ भी पीछा नहीं छोड़ता कह कर आप फोन पर गये। फोन [illegible] था। उसकी टूटी फूटी अंग्रेजी में कही बात [illegible] मतलब न समझ के पर नेहरू जी ने मुझे [illegible]। मैंने फोन पर बात की। मैनेजर कह रहा था [illegible] मुलाकात करने के लिये जर्मनी के प्रोपेगण्डा मिनिस्टर [illegible] अगर पंडितजी उनसे अभी भेंट कर सकें, तो बड़ी मेहरबानी होगी मैंने उसकी बात पं० नेहरूजी को सुनाई। नेहरूजी ने इस मुलाकात की कुछ भी जरूरत न समझते हुए भी कह दिया "अच्छा! बुलाओ" मैंने मैनेजर को कह दिया कि नेहरूजी का कहना है, कि डाक्टर गोबेल्स आ सकते हैं।

दो मिनट में ही डा० गोबेल्स लिफ्ट से ऊपर आ पहुँचा होटल के नौकर ने डाक्टर गोबेल्स का कार्ड पण्डितजी को दिया। पण्डित जी की आज्ञानुसार मैं उन्हें अन्दर लिवा लाया। अन्दर आते ही आपने प्रत्येक जर्मन के लिये जरूरी सलाम के तरीके से पण्डितजी के लिये 'हाईल हिटलर' कह कर

हाथ ऊँचा किया। पण्डितजी ने भी अपनी कुर्सी से उठकर डाक्टर गोबिल्स का हिन्दुस्तानी तरीके से स्वागत कर हाथ मिलाया। पंडितजी की पुत्री श्री इन्दिरा भी वहां मौजूद थीं। मैंने डाक्टर गोबिल्स से कुमारी इन्दिरा का मेल कराया और बैठने के लिये सोफा की ओर इशारा किया। डा० गोबिल्स अपनी पूरी सैनिक वेश-भूषा में सुसज्जित थे—जो कितने ही तमगों से चमचमा रही थी। आपने कहा, कि खड़ा ही ठीक हूँ। पंडितजी के आग्रह करने पर वह सोफा पर बैठ गये। आपके विशाल शरीर को कोई भी सोफा सम्हालने में असमर्थ होता उस पर आप उस समय फौजी जिरह बक्तर में कसे हुए थे, बड़ी मुश्किल से सोफा में समाये। प्रारम्भिक कुशल क्षेम पूछने के बाद आपने एक मोहर बन्द लिफाफा पंडितजी के हाथ में दिया। इसमें क्या भरा है कहते हुए पंडितजी ने लिफाफा खोला और पढ़ा। कुछ देर सोचने के बाद उन्होंने मुझे पास में बुलाकर लिफाफा मेरे हाथ में दे दिया। मैंने पढ़ा उसमें हिटलर ने पंडितजी से मिलने की इच्छा प्रकट की थी लिखा था कि मुझे आपसे मिलकर बड़ी खुशी होगी। पण्डितजी ने मुझे डा० गोबिल्स को जर्मन भाषा में समझाने को कहा, कि वह इस समय न तो इस मुलाकात का कोई लाभ जरूरत महसूस करते हैं और न उनका जर्मनी आने का उद्देश्य किसी भी राजनैतिक चर्चा में भाग लेने का है। केवल निजी तौर पर जर्मनी का भ्रमण करने आये हैं और भ्रमण कर वापस चले जाना चाहते हैं। मैंने जर्मन भाषा में डाक्टर गोबिल्स को

समझा दिया। इसे सुनकर डाक्टर गोबिल्स कुछ सोच में पड़ गये। उन्हें शायद इस रूखे जवाब की उम्मेद नहीं थी। कुछ सोच कर उन्होंने फिर वह कहने का साहस किया, कि अगर

आप हमारे शाही मेहमान के तौर पर रहना पसन्द करें, तो स्वागत करने में हम अपना गौरव समझेंगे और आपको हुकूमत की ओर से सब सुविधायें दी जायगी। नेहरूजी थोड़ा मुस्कराये और मेरी ओर मुड़कर बोले "भाई! इन्हें समझा दीजिये कि आपकी कृपा से मैं पूरे आराम से हूँ। आपने हिंदुस्तानी भाइयों की मेहरबानी से मुझे सब सहूलियतें प्राप्त हैं। इसलिये उन्हें और कष्ट देना नहीं चाहते डाक्टर गोविल्स को उनके आगे के कष्ट के लिये धन्यवाद देते हुए नेहरूजी ने उन्हें बिदा दी।

डाक्टर गोविल्स के जाने के बाद नेहरूजी बहुत देर तक बिनोदपूर्ण बातचीत करते रहे।

दोपहर को कुछ जर्मन लड़कियां नेहरूजी से मिलने आईं। वह भारत में आकर भारतीय दर्शन का अध्ययन करना चाहती थी और भारतीय सभ्यता से परिचय प्राप्त करने को उत्सुक थीं। नेहरूजी ने उन्हें यथोचित उत्तर देकर बिदा किया।

शाम को ३ बजे उन्हें उनकी बहिन श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित का तार मिला। पंडितजी ने प्राग का प्रोग्राम बना लिया और उस समय वियना जाना स्थगित कर दिया।

शाम ८ बजे भारतीय विद्यार्थियों की ओर से नेहरूजी को दावत दी थी। उस दिन पहिली ही बार नियत समय पर पहुँचने में देर होगई। ८॥ बजे डिनर शुरू हुआ पण्डितजी ने बड़े प्रेम से भोजन किया और बड़े प्रेम से भोजन किया और अपने हाथ से सबको परोसा। उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ, कि हमने भारतीय ढंगका भोजन तैयार किया था। डिनर के बाद पण्डितजी ने सब भारतीय विद्यार्थियों को एक बात महत्व की बताई। उन्होंने सब विद्यार्थियों से अपने-अपने विषय में इतनी योग्यता प्राप्त करने की सलाह दी, कि वह भविष्य में

में आज़ाद भारत के सब विभागों की ज़ुम्मेदारी उठाने के योग्य होसकें।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही पंडितजी पाग लिये विदा होगये।

नौ नवम्बर की विशेषता

"नवमी" को श्री रामचन्द्रजी का जन्म हुआ था जो 'राम-नवमी' के नाम से प्रसिद्ध है।

भीम-अर्जुन की मूर्तियां

जौनसार बावर युक्तप्रान्त का बहिष्कृत प्रदेश है। इस प्रदेश में ऐतिहासिक सामिग्री मिलती है। लाखा मण्डल इस प्रदेश का प्रसिद्ध स्थान है। अशोक-आश्रम के कार्यकर्त्ताओं को यहां भीम और अर्जुन की भव्य मूर्तियां देखकर आश्चर्य हुआ। सदियों पुरानी होने पर भी ये मूर्तियां आज की बनी प्रतीत होती हैं। कला की दृष्टि से ये मूर्तियां बहुत श्रेष्ठ हैं। लाखा-मण्डल में एक पुराना शिलालेख भी है। यहां परशुराम और महासू देवता के मन्दिर हैं और पाण्डवों की मूर्तियां यहां पर मिली हैं।

नेपोलियन का पत्र नीलाम

इतिहास-प्रसिद्ध विजेता नेपोलियन ने सन् १८१४ में अपनी द्वितीय पत्नी आर्कड्चेज मैरी लुई को एक पत्र लिखा था, जो [illegible] पेरिस में नीलाम किये जाने पर ५०००० फ्रैंक्स (३०० पौंड) पर बिका है। यह पत्र नेपोलियन ने अपनी फौज से विदा होते समय अपनी पत्नी को लिखा था।

इसके अतिरिक्त [illegible] ने नेपोलियन [illegible] पत्र लिखे थे, जो १२००० [illegible] ([illegible] पौंड) में नीलाम हुए।

मोर्चे पर भारतीय रमणियाँ

[illegible] एक भारतीय सैनिक [illegible] लिखता है कि इस युद्ध में पहिली बार भारतीय रमणियाँ हमारे सैनिकों का मनोरंजन करने के लिए इटली के [illegible] मोर्चे पर पहुँची हैं। ये सातवीं फौजी दिलखुश सभा की सदस्याएं हैं, जिनमें मिस माइकेल, मिस [illegible], मिस [illegible], मिस गुलजार अख्तर लाहौरवाली और मिस [illegible] तथा मिस [illegible] जो प्रसिद्ध रेडियो गायिका मिस जोहरा की बहिन [illegible] हैं। युद्ध के खतरे और इटली में कष्टों का [illegible] भी यह रंगीन दल दूर-दूर तक पड़े हुए भारतीय सैनिकों के [illegible] में जा पहुँचती थी और उनके लिए [illegible] भारतीय नाटक, गाने और नृत्य का आयोजन करती थी। इन रमणियों ने लाखों पंजाबी, सिख, पठान और अन्य भारतीय सैनिकों का मनोरंजन कर चुकी हैं।

बालक जो अपनी उम्र नहीं जानता

साँप पालने वालों का नगर

दक्षिणी अमेरिका में ओरैबी नामक एक बहुत प्राचीन नगर है, जिसमें अमेरिका के आदि निवासी रहते हैं। यह नगर साँपों के नृत्य के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ वर्ष में एक दिन साँपों का मेला लगता है और उस दिन साँपों का नाच जगह-जगह होता है। यहाँ के लोग साँप पालने में बड़े पटु होते हैं और वे साँपों को उनके जहरीले दाँत निकाले बिना ही इस प्रकार का बना लेते हैं कि वे किसी मनुष्य को नुकसान न पहुँचा सकें। यहाँ के लोग साँप पकड़ने के भी बड़े अभ्यस्त हैं। साँप को वश में करने का इन लोगों का एक अलग स्थान पहाड़ के नीचे घाटी में है। इसमें केवल साँप पालने वाले या पकड़ने वाले लोग ही जाते

हैं। यहाँ पर बड़ी कोठरी [illegible] है, जिनमें [illegible] लोग रक्खे जाते हैं।

[illegible] भी कि [illegible] है, [illegible] हुए हैं, इसलिए [illegible] कि [illegible] नहीं। वह नहीं जानता कि [illegible] और अपने [illegible] से [illegible] वह भी नहीं मालूम कि कितने [illegible] से यह [illegible] रहा है।

कोई हिसाब कोई पूछनेवार नहीं

[illegible] लोगों की भूख [illegible] किन्तु [illegible] के पेटों में १,००००००० पाउण्ड की रकम [illegible] इसका कोई [illegible] नहीं [illegible] लोगों के [illegible] की [illegible] किया [illegible] नहीं [illegible] किया [illegible] की। [illegible] का [illegible] नहीं [illegible] हुई। [illegible] है कि [illegible] की [illegible] के संचालन के [illegible] गया।

१९[illegible] [illegible] में [illegible] लोगों के [illegible] बात [illegible] था कि [illegible] के [illegible] में [illegible] पाउण्ड [illegible] हिसाब में [illegible] कोई [illegible] नहीं। [illegible] में [illegible] ४०,१५,९४८ पाउण्ड [illegible]। [illegible] के आगे में यह [illegible] है कि जो [illegible] अपनी [illegible] का [illegible] न हो [illegible] [illegible] [illegible] किया जाता।

[illegible] हो सकते हैं। [illegible] उनकी [illegible] का

कभी पता नहीं लगा तो उसकी मौत का लेखा न होगा और उसका रुपया बैंक में ही पड़ा रह जायगा। १९१४-१८ ई० के युद्ध में बाहर से आने वाले सैनिकों ने सैकड़ों हिसाब इंगलैंड के बैंकों में खोले किन्तु इंगलैंड से जाने के बाद उनका फिर कहीं पता नहीं लगा।

पानी से न भीगने वाली दियासलाई

हाल में ऐसी दियासलाई बनाई जाने लगी है जो भीगी रहने पर भी जलेगी। डेढ़ वर्ष तक इस समाचार को गुप्त रखा गया है किन्तु अब अमेरिकन फौजी अधिकारियों ने इस पर प्रकाश डाला है।

जब अमेरिकन फौजें प्रशान्त क्षेत्र में लड़ने गयी तो वैज्ञानिकों से कहा गया है कि वे ऐसी दियासलाई बनायें जो जल से भीग जाने अथवा वर्षा में भीगने पर भी जलें।

यह नयी प्रकार की दियासलाई साधारण दियासलाई की तरह है, किन्तु उन पर कोई ऐसा गुप्त लेप लगा रहता है जिससे पानी वैसे ही अलग हो जाता है जैसे बतख के परों से।

विचित्र आविष्कार

एक ऐसी किरण का आविष्कार हुआ है, जिसके असर से जो आदमी जिस अवस्था में काम करता होता है, वैसी में वहीं का वहीं स्थित हो जाता है। इसका प्रयोग पेरिस के एक नाच घर में किया गया है।

एक विशाल नाच-घर में नाच हो रहा था। सेवक इधर-से-उधर अपने काम में लगे हुए थे। अकस्मात सबके-सब, जो जिस स्थिति में थे, वैसे ही रह गये। एक वैज्ञानिक ने जैसे ही किरण को

हटाया, फिर पूर्ववत नाच-गाना-बजाना और सेवकों की दौड़-धूप होने लगी।

ये वैज्ञानिक इसका प्रयोग मीलों तक बढ़ाना चाहते हैं, जिससे इसका प्रयोग युद्ध में दुश्मन के ऊपर किया जासके।

सांप जो स्त्री के स्तन से दूध पीता था

जो बात किस्से कहानियों में सुनाई देती थी, वह एक मामले में सच्ची सिद्ध हुई है। एक जहरीला सांप एक स्त्री के स्तन से दूध पीता देखा गया है।

मैमनसिंह (बंगाल) के निकट एक कस्बे में एक बंगाली सज्जन यामिनीकान्त दास की विवाहित पुत्री जब प्रातःकाल सोकर उठती, तो प्रतिदिन वह देखती थी कि उसके स्तन में कुछ निशान बने हैं। यह देखकर उसे बड़ा आश्चर्य होता था और उसके माता पिता भी चिन्तित थे कि यह क्यों और कैसे होता है।

परन्तु एक रात में सब लोग लड़की का चीत्कार सुनकर जाग पड़े और सबको यह देखकर महा आश्चर्य हुआ कि एक काला सांप लड़की के पैरों से लटका हुआ है और उसका स्तन पी रहा है लोगों को देखकर सांप लड़की को बिना कोई हानि पहुँचाये रेंग कर चला गया।

सीने से रोशनी निकलती थी

कुछ साल हुए, इटली में एक स्त्री ने सबको आश्चर्य में डाल रखा था। इसके सम्बन्ध में काफी समय तक वादविवाद चलता रहा लेकिन समस्या को कोई सन्तोषजनक रूप से हल नहीं कर सका।

हाल यह थी कि जब वह स्त्री रात को सोने लगती थी तो उसके सीने से एक अद्भुत नीली रोशनी निकलती थी। डाक्टर

तथा वैज्ञानिक लोग दूर-दूर से उसे देखने के लिये आये किन्तु वे कुछ समझ नहीं सके कि ऐसा क्यों होता है। श्रोले के निकलने वाली रोशनी का फोटो लेने का भी प्रयत्न किया गया किन्तु उसमें सफलता नहीं मिली। परीक्षा करने वाले गवाहों को आग देखते थे किन्तु उसका फोटो लेने में असमर्थ रहते थे।

एक कारुणिक आत्म हत्या—

जो भारतवर्ष अपनी पूंजी से आज भी विदेशों को मालामाल कर रहा है आज भी उनके जीवन सम्बन्धी खाद्य विलास सामग्रियों को जुटा रहा है वही भारत अपने लिये इतना कंगाल हो गया है कि अगर उसके निवासी के अधीन गलती से पांच-दस रुपये की नोट को आग की नजर कर दिया जाय तो उसके पिता उन्हीं हाथों को आग की नजर करने पर मजबूर हो जाता है। अभी हमें इन्दौर के एक समाचार से मालूम हुआ है कि एक व्यक्ति कहीं से शायद उधार नोट लेकर घर आया, और उन्हें जमीन पर या कहीं रख दिया। नोट लाने वाले का एक छोटा सा चार वर्ष का लख्ते जिगर वहीं खेल रहा था। पिता ज्यों ही इधर किसी काम में लगा बच्चे ने नोट में से एक नोट उठा कर घर ही में जलते हुए चूल्हे में डाल दिया। वह जल गया। अब पिता काम से फारिग होकर लौटा, उसने नोट गिन-गिन कर देखे उन्हें गिना, और एक नोट कम पाया। बच्चे से पूछने पर बच्चे ने चूल्हे में डाल देने की बात कह दी। पिता ने क्रोध में बच्चे को पकड़ा और उसके दोनों हाथ उसी जलते चूल्हे में ठूंस दिये। फिर बच्चे को चीखता तड़पता छोड़कर अपनी दुकान पर जा बैठा। जब बच्चे की माँ यानी उस व्यक्ति की स्त्री, जो उस वक्त बाहर गयी थी, बाहर से लौटी तो, पति को उदास देखकर उससे पूछा कि बच्चा कहाँ है? पति ने क्रोध में कहा कि वह चूल्हे में

पास [illegible] है। मां सारी कहानी जानने के बाद दुःखी होकर घर से निकली और कहा जाता है कि वह अपने बच्चे को अपनी पीठ से चिपटाकर नजदीक के कुएं में जा गिरी। माँ ने कुएं में गिरने से पहले यह कहा बताते हैं कि जो पति प्राणों से प्यारे बच्चे के प्रति इतना निष्ठुर हो सकता है, उसके साथ रह कर जिन्दगी बिताने पर धिक्कार है।

संसार में सबसे बड़ी इमारत

मास्को में एक ऐसे भवन के निर्माण की योजना बड़े जोरों से चल रही है जो संसार में सबसे बड़ा होगा। यह भवन ऊँचाई में १३३५ फीट होगा और उसकी चोटी पर लेनिन की विशाल मूर्ति स्थापित की जायेगी जो २२८ फीट ऊंची होगी। एक गहरी नींव पर ७ सिलिंडर की एक विराट मीनार खड़ी की जायगी इस मीनार का केन्द्रीय भाग गोलाकार होगा और और उस गोले के भीतर एक बहुत बड़ा हाल होगा जिसमें २६,००० आदमी बैठ सकेंगे। इसमें सोवियट पार्लमेंट के ३,००० प्रतिनिधि, २००० दर्शक और २१००० अतिथि बैठ सकेंगे। विराट राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय सभाएं इसी हाल में होंगी। इसके अलावा और भी बहुत से हाल इस मीनार में के भीतर रहेंगे जो प्रधान हाल से छोटे होंगे। प्रत्येक हाल के साथ कई छोटे छोटे कक्ष जुड़े रहेंगे जिनमें प्रतिष्ठित अतिथि समय समय पर भोजन पान तथा विश्राम कर सकेंगे। मीनार के भीतर रूस के कई [illegible] सोसाइटियों के दफ्तर भी रहेंगे। यह अनुमान लगाया जाता है कि ये दफ्तर २ करोड़ ४० लाख घन फुट जगह घेर लेंगे। किसी भी हाल के भीतर सिगरेट पीना मना रहेगा।

८० वर्ष का बुड्ढा जवान बन गया

भारतीय दर्शन का यह सिद्धान्त है कि आत्मा एक शरीर से निकल कर दूसरे शरीर में प्रवेश करती है कोरा सिद्धान्त और कल्पना ही नहीं है। कठोपनिषद् में इस बात का उल्लेख मिलता है कि शरीर से आत्मा को बाहर निकालने की कला प्राचीन समय में प्रचलित थी। यह व्यावहारिक कला थी यह एक ऐसे भारतीय ऋषि की कथा से प्रमाणित हो जाता है जो इस देश से जापान चला गया था। वह जापान में ऋषि ली-ती के नाम से प्रसिद्ध था।

[illegible] शंकराचार्य की आख्यायिका है। उन्होंने काम-[illegible] गूढ़ प्रश्नों का उत्तर देने के लि[illegible] के सामने अपनी आत्मा को शरीर से निकाल कर राजा अमरूक के शरीर में प्रवेश किया और [illegible] उनकी आत्मा के प्रवेश करते ही राजा अमरूक ने [illegible] शरीर में प्रेम का वास्तविक अनुभव प्राप्त किया और उसका वर्णन १०० श्लोकों में किया जो अमरूक शतक के नाम से प्रसिद्ध है।

एक चीनी महात्मा की अद्भुत कथाओं में भी बिलकुल इसी तरह की एक कथा मिलती है। उसका नाम था यू सु गलिंग। वह एक बौद्ध याजक था और उसकी अवस्था ८० वर्ष से अधिक थी। कहते हैं कि एक दिन वह गिर पड़ा। और मर गया उसकी आत्मा निकल कर होनान प्रान्त की सीमा की ओर उड़ चली। वहां पर उसी समय एक पुराने परिवार का एक युवक [illegible] था। महात्मा की आत्मा उसी युवक मृत व्यक्ति के शरीर में प्रवेश कर गई। युवक शरीर तत्काल जीवित हो उठा। [illegible] लोगों को महान् आश्चर्य हुआ। यह जीवित व्यक्ति कहने लगा

कि मैं तो एक बौद्ध याजक हूँ, यहां पर कैसे आ पहुँचा ? उसने नए वातावरण का अनुभव किया और देखा कि वह एक धनी परिवार का गृहपति है। किन्तु नए वातावरण में भी उसने याजकता का जीवन व्यतीत करना प्रारम्भ किया। मांस-मदिरा ग्रहण न कर केवल चावल खाकर रहता था। अपनी स्त्रियों से भी बराबर अलग रहता था। वह एक दिन अपने पुराने मठ में जाने के लिए उत्सुक हुआ और चल पड़ा। रास्ता पूछने की कुछ भी आवश्यकता नहीं पड़ी। मठ पहुँचने पर उसके चेलों ने बड़े सम्मान के साथ स्वागत किया किन्तु वे यह न पहचान सके कि आगन्तुक ही उनका पुराना गुरु है। शिष्यों ने अपने गुरु की कब्र भी आगंतुक को दिखलाई। वह फिर नए मकान को लौट आया लेकिन गृहस्थी के मामलों में वह जरा भी दिलचस्पी नहीं लेता था। कुछ ही महीने के बाद वह फिर मठ को भाग गया और शिष्यों को बतलाया कि मैं तुम्हारा पुराना गुरु हूँ। शिष्यों ने इस बात पर विश्वास नहीं किया और आपस में एक दूसरे की ओर देख कर हँसने लगे। जब उसने अपनी सारी कथा कह सुनाई और पूर्व जीवन की अनेक घटनाओं का वर्णन किया तब सब को उसकी बात पर विश्वास हो गया। वह पहले ही की तरह फिर मठ में रह कर जीवन व्यतीत करने लगा। पहले ८० वर्ष का बुड्ढा था, किन्तु अब ३० वर्ष का युवक था। राजा ययाति की भांति उसने पुराना शरीर छोड़ कर नया शरीर ग्रहण कर लिया था।

—'हिन्दू' से

स्वेच्छा से दस वर्ष तक कैद रहा

कहते हैं कि १८६० ई० में इंगलैंड के लार्ड सेसिल ने एक बाजी लगायी थी। उनके यहां एक अमेरिकन सज्जन आये हुए

के [illegible] । [illegible]

[illegible]

[illegible] मि० [illegible] और [illegible] बहुत प्रयत्न करने पर भी [illegible] नहीं घुस सका। उन्हें निराश होकर अपना प्रयत्न त्यागना पड़ा क्योंकि भीड़ से उन्हें तरह-तरह की आवाजें सुननी पड़ीं। किसी ने कहा कि बैंक का दरवाजा चौड़ा कराया जाय। किसी ने आवाज लगाई कि फिर [illegible] का पिंजरा मंगाते हैं। एक ने कहा आप अपनी मेज लेकर फाटक के बाहर ही बैठा कीजिए। बैंक के अध्यक्ष तौल में सिर्फ ३ मन १० सेर के लगभग थे।

सम्राट जार्ज की अपार सम्पत्ति

विचित्र वस्तुओं का अमूल्य संग्रह

सम्राट जॉर्ज संसार के सबसे बड़े शाहंशाह थे, पर उनके साम्राज्य में ही ऐसे अनेक लोग होंगे, जिनके पास रुपयों के रूप में उनसे कहीं अधिक सम्पत्ति होगी। जितना रुपया सम्राट को (बृटिश) सरकार से साल-भर के खर्च के लिये मिलता था, उनसे कहीं अधिक अमेरिका के धनिक छः महीनों में फूँक देते हैं; फिर भी बैंक में उन धनिकों के नाम बड़ी-बड़ी रकमें जमा रहती हैं। इस हिसाब से सम्राट दर असल अपने नागरिकों से बहुत 'गरीब' हैं। उनके पास न तो बड़ी भारी बैंक-बुक है, न भरा हुआ खजाना। जितना उन्हें सालाना खर्च मिलता है (४७०००० पौंड), उतना सब उनके बड़े परिवार में, घरेलू खर्च में, दान-धर्म आदि में खर्च हो जाता है। इस नियत रकम में भी उन्होंने, सितम्बर १९३१ में, आर्थिक मंदी के कारण, पचास हजार पौंड की कमी कर दी थी। इस तरह से इस महान् सम्राट के पास रुपयों के रूप में बहुत ही कम सम्पत्ति थी; पर इनके पास विचित्र वस्तुओं का—ऐतिहासिक महत्त्वपूर्ण चीजों का, और कलायुक्त नमूनों का—इतना बड़ा और सुन्दर संग्रह है कि उसकी कीमत का अन्दाजा करना असम्भव-सा ही है।

अभी पिछले वर्ष, जब उन्होंने अपनी रजत-जयन्ती मनाई थी, उन्हें संसार के चारों कोनों से भेंट दी गई थी। इन भेंटों में किसी-किसी वस्तु की कीमत तो करोड़ों रुपयों से भी अधिक थी। इन भेंटों की विविधता और विचित्रता आश्चर्यकारक थी। 'विंडसर-महल' में सम्राट का निजी अजायब-घर ही करीब तीन

करोड़ रुपयों से अधिक कीमत का है। इसके अतिरिक्त उनके दूसरे महलों में और भी कीमती जवाहरात और खजाना है।

सौगात के रूप में आई हुई कोई भी वस्तु सम्राट बेचते न थे। कुछ ताँबे के पैसों द्वारा खरीदी हुई प्रेम-भेंट सम्राट के खजाने में उसी महत्त्व से रक्खी जाती है, जिस प्रकार करोड़ों रुपयों की भेंट। इन सौगातों की विचित्रताओं के कारण ही सम्राट जॉर्ज संसार के सब से अधिक धनी बादशाह कहे जा सकते हैं।

डेढ़ करोड़ के दावत के बर्तन

सम्राट के पास ऐसी अनेक वस्तुएँ थीं, जिनका सम्बन्ध भावनाओं से और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं से होने के कारण, उनका मूल्य लगाना असम्भव-सा ही है; पर इनके अतिरिक्त बहुत-सी चीजें ऐसी भी हैं, जिनका खरीदना असंभव है। एक डिनर-सर्विस (खाने के बर्तन) ही ऐसा है, जिसकी कीमत करीब डेढ़ करोड़ रुपये है। ये बर्तन केवल महत्वपूर्ण अवसरों पर ही इस्तैमाल किये जाते हैं। ये शुद्ध सोने के बने हुए हैं, और इन पर जो कारीगरी की गई है, वह सर्वश्रेष्ठ कारीगरों और कलाविदों के मस्तिष्क का चमत्कार समझा जा सकता है। फिर भी ये बर्तन सम्राट की कम कीमत वाली वस्तुओं में स्थान पाते हैं !

बेशकीमत फूलदान

कला के सुन्दर नमूनों में 'विंडसर-महल' में दो अमूल्य और नितान्त सुन्दर फूलदान हैं, जो किसी भी कीमत में खरीदे नहीं जा सकते। एक अमेरिकन करोड़पति ने इन्हें तीन करोड़ रुपयों में खरीदना चाहा था; पर बहुत नर्मी के साथ उसे अस्वीकार

कर दिया गया। 'विंडसर-महल' में एक ठोस सुवर्ण का शमादान है, जिसे दो मनुष्य उठा नहीं सकते। इसकी कीमत दो करोड़ रुपयों से अधिक है। पर यह सब उन बेशकीमत सौगातों की तुलना में कुछ भी नहीं है, जो सम्राट को भारतीय नरेशों ने विविध अवसरों पर दी थीं। इनकी कीमत करीब सत्तर करोड़ रुपये लगाई जाती है।

भावना-प्रधान सम्राट

सम्राट के संग्रह में बहुत-सी चीजें ऐसी हैं, जो आनुवंशिक कही जा सकती हैं; पर अधिकांश ऐसी ही हैं जो उन्हें राजाओं, धनिकों और बड़े-बड़े व्यक्तियों द्वारा समय-समय पर भेंट की गई थीं, और जिन्हें सम्राट ने अपने बहुत-से महलों में रक्खा है। जिन वस्तुओं का सम्बन्ध भावनाओं से है, उन्हें सम्राट अपने 'सैंड्रिंघम-महल' में रखते थे, जिसे सम्राट 'होमली होम' ([illegible]) कहते थे, और जहां सम्राट की मृत्यु हुई है। शाही जवाहरात इत्यादि 'विंडसर-महल' और 'बालमोरल-महल' में रक्खे जाते थे। सम्राट की नजरों में अमूल्य जवाहरात और कीमती चीजों का उतना महत्त्व नहीं था, जितना सैंड्रिंघम-महल में रक्खी हुई वस्तुओं का, जहाँ की प्रत्येक वस्तु किसी आन्तरिक भावना से, प्रेम से, या किसी खास स्मृति से सम्बन्ध रखती है।

वस्तु-संग्रहालय

विंडसर-महल में जाने पर वहाँ करीब तीन अरब रुपये कीमत का संग्रह नजर आता है। यह संग्रहालय महारानी विक्टोरिया के समय से कायम किया गया है। उन्हें उनके राज्य-काल में बहुत-सी सौगातें मिलीं, जिनका उनके लिये कोई उपयोग न था। इसलिये उन्होंने यह वस्तु-संग्रहालय कायम

कराया। इस संग्रहालय में बहुत-सी चीजें ऐसी हैं, जो भीषण रक्तपात, अमानुषिक हत्या, नीच कारनामों और कुटिल नीति की याद दिलाती हैं। बादशाहों के रक्त से लांछित कटारें, योद्धाओं को कंठस्नान देने वाली तलवारें और बहुत-सी बद-किस्मत खोपड़ियाँ चीरने वाली कुल्हाड़ियाँ यहाँ पर मौजूद हैं। यह सब चीजें महारानी विक्टोरिया के शासन-काल में, जब एक बुर्ज का तलघर साफ हो रहा था, तहखाने की एक गुप्त राह में मिली थीं। इनमें एक कुल्हाड़ी ऐसी है, जिसके बारे में विद्वानों का मत है कि उसके द्वारा अनेक सिर कटे होंगे। इसी संग्रहालय में समुद्री डाकुओं द्वारा की गई लूट की बहुत-सी वस्तुएँ दिखाई देती हैं। इन सब के बीच में एक सुवर्ण का बना हुआ ठोस शेर का सिर है, जो किसी समय भारतवर्ष में बहादुर 'टीपू सुलतान' के सिंहासन की शोभा बढ़ाता था। यह सिर अमूल्य समझा जाता है और संसार की किसी भी कीमत में खरीदा नहीं जा सकता।

डाक के टिकटों का संग्रह

स्वर्गीय सम्राट के टिकटों का संग्रह शायद संसार में सब से अच्छा और कीमती है। यह सैंड्रिंघम-महल में रक्खा जाता है, और जब सम्राट बंकिंघम-महल जाते थे तब वे इसे अपने साथ ले जाते थे। सम्राट इस संग्रह को बहुत अधिक महत्त्व देते थे। यह शौक सम्राट को बचपन से ही था। इसमें संसार के प्रख्यात, और कहीं न मिलने वाले, टिकट हैं। कुछ स्टाम्प तो इनमें ऐसे हैं, जिनका सारे संसार में एक ही नमूना है। सम्राट अपने हाथों इनका नाम आदि लिखते थे और प्रत्येक का इतिहास उन्हें मालूम था। इनका मूल्य लगभग दो करोड़ से ऊपर माना जाता है।

अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ

सम्राट के इस निजी खजाने के अतिरिक्त संग्रहालय में और भी बहुत-सी अमूल्य वस्तुएँ हैं—कीमती बन्दूकें, मछली पकड़ने की बेशकीमत बल्लियाँ आदि, जो लाखों रुपये कीमत की हैं, और जो सैंड्रिघम-महल में एकत्र की गई हैं। इन सब चीजों का शौकीन बादशाह अपने सैंड्रिघम-महल में शान्ति के साथ नश्वर जग को छोड़ गया ! और अब ये सब चीजें नये सम्राट अष्टम एडवर्ड की हैं।

वायुयान गति प्रतिघण्टे १ लाख मील

लाकहेड एयर क्रैफ्ट कारपोरेशन के चीफ इंजीनियर मि० हाल एल ही बार्ड ने कहा है कि अमेरिका में लोग ऐसे वायुयानों के निर्माण में संलग्न हैं जिनकी गति प्रति घंटे १ लाख मील होगी और जो आकाश में सौ मील की ऊँचाई पर उड़ेंगे। आपके द्वारा ही "शूटिंग स्टार" नामक वायुयान का ढाँचा प्रस्तुत किया गया है। आपने संवाददाताओं को यह भी बतलाया कि उपरोक्त वायुयान निर्माण सम्बन्धी सारी कठिनाइयाँ दूर हो गई हैं और जो थोड़ी बहुत बच रही हैं उन्हें सुगमता से दूर किया जा सकता है।

रूस के ३००० शत वर्ष जीवी व्यक्ति

मनुष्य की आयु के रूसी विशेषज्ञ प्रोफेसर इलियन का कहना है कि काकेशस में लोग नियमित रूप से जिस हद तक दीर्घ जीवन बिताते हैं, उस हद तक किसी भी दूसरी जगह के लोग नहीं बिता पाते।

चार वर्ष पहले रूस में १२६ से लेकर १३६ वर्ष की आयु वाले २५ व्यक्ति थे, जिनमें से अधिकांश काकेशस के निवासी थे। पिछली बार रूस में जो जनगणना हुई उससे पता चला कि १०० वर्ष से अधिक की आयु वाले रूसियों की संख्या प्रायः ३००० थी।

चार वर्ष पहले इँगलैण्ड में शत वर्षजीवी व्यक्तियों की संख्या केवल १०० थी, स्वीडन में यही संख्या ६५ थी और बलगेरिया में ४२८।

रूस में एक व्यक्ति १६६ वर्ष की अवस्था तक जीवित रह चुका है।

अगली जन-गणना होने पर रूस की विज्ञान-परिषद् दीर्घ जीवन के उस रहस्यमय कारण का पता लगावेगी जो काकेशस के भीतर निहित है।

एक वर्ष में १४ सौ प्रेमपत्र

अमेरिकन सेना के लेफ्टिनेन्ट एस० स्ट्रूप साज इस समय बेलजियम में हैं। उनकी पति-परायणता पत्नी ने एक वर्ष में १४०० पत्र लिखे हैं जो उनके पास सुरक्षित हैं। इन प्रेमपत्रों में से कितने का उत्तर उन्होंने दिया और कितनों को पढ़ा यह नहीं बताया गया है। अगर लेफ्टीनेण्ट साहब सभी पत्रों को पढ़ने लगे होंगे तो उन्हें लड़ाई के लिये बहुत ही कम फुरसत मिलती होगी। कौन बताये वे प्रेमपत्र पढ़ते हैं या लड़ाई लड़ते हैं।

मरने के बाद परिवार को मारा

म्यूनिक में एक बुड्ढा रहता था जिसका नाम था हन्स मूलर। वह बड़ा कंजूस था। बुड्ढा कुर्सी, मेज तथा अलमारी

आदि बनाने का काम करता था और अपनी कला में बड़ा ही कुशल था। वह अपनी कमाई का प्रायः सब धन संग्रह करके रखता था। अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य से वह लड़ा करता था और सब लोगों से घृणा करता था। इधर कुछ ही दिन हुए उसकी मृत्यु हो गई। उसके सभी सम्बन्धी जानते थे कि उसने उन्हें सालों पहले उत्तराधिकार से वंचित कर रखा है। लेकिन जब उन्हें यह मालूम हुआ कि उसने कोई वसीयतनामा नहीं किया है और इस वास्ते कानूनन उसकी सारी सम्पत्ति पर उन सब का अधिकार है तब वे अंत्येष्टि क्रिया में सम्मिलित हुए।

बुड्ढे ने मरते-मरते यह हिदायत कर दी थी कि उसका शव म्यूनिक वाले भवन के ऊपरी कमरे में रक्खा जाय। सभी सम्बन्धी इस कमरे में जाकर एकत्रित हुए। वे तावूत के चारों ओर खड़े हो गये। इतने में अचानक उस कमरे की फर्श टूट पड़ी और सब लोग नीचे जाकर गिरे। अधिकांश लोग मर गये। बात यह थी कि उन सभी कड़ियों को, जिनके ऊपर उस कमरे की छत टिकी थी उस बुड्ढे ने अपने मरने के पूर्व ही चीर रक्खा था। फलतः एकाएक भार पाकर टूट गईं। मृत्यु के समय तक भी उस कंजूस के हृदय में अपने परिवार वालों के प्रति घृणा का भाव बना रहा।

मुसोलिनी की नई प्रेमिका

अमेरिका के पत्र 'लाइफ' में एक व्यक्ति ने, जो हाल ही में इटली से आया था लिखा है कि मुसोलिनी ने मेरिया फेरूली नाम की एक १६ वर्षीय लड़की को अपनी नई प्रेमिका बनाया है और उससे एक पुत्र भी उत्पन्न हुआ है। कहते हैं कि मुसोलिनी ने उसे रोम के पास देहात में स्थित अपने एक भवन में रक्खा है।

मुसोलिनी के उस भवन में अपना एक निजी शरणाघर है जिसके अन्दर सोने-नहाने, भोजन करने, पढ़ने-लिखने, बैठने-उठने के लिए अलग-अलग कमरे हैं। नौकरों के लिए भी अलग कमरे उसमें बने हैं। यदि हवाई हमले की चेतावनी के समय मुसोलिनी अपने भवन के दूसरे मंजिल पर सोये हुए हों तो शरणाघर में जाने के लिए उन्हें घर के बाहर भागने की जरूरत नहीं। उन्हें केवल बिजली का एक बटन दबाना होगा, जो बिस्तरे के पास ही लगा हुआ है। बटन के दबते ही डिक्टेटर सहित उनका पलंग नीचे जाकर एक यंत्र के ऊपर बैठ जाता है और वह यंत्र उन्हें शरणाघर में पहुँचा देता है।

विस्फोट की आवाज

बम्बई के डाकयार्ड में जब विस्फोट हुआ था तो शहर के तमाम मकान हिल उठे थे। खिड़कियों के शीशे टूट कर बिखर पड़े थे तथा प्याले से चाय छलक पड़ी थी। किन्तु जब ज्वालामुखी का विस्फोट होता है तो उसकी आवाज से क्या होता है, वह और भी भयंकर है। क्रोकोटोवा का ज्वालामुखी जब भड़का तो उसकी आवाज २२७२ मील दूर तक तोप की आवाज जैसी सुनाई पड़ी थी। क्रोकोटोवा से ६४ मील दूर बसने वाले लोगों ने जब इसकी आवाज सुनी तो वे घंटों के लिये बहिरे हो गये थे। क्रोकोटोवा से ६७२ मील दूरी पर रहने वाले लोगों को इस आवाज ने दहला दिया था तथा जो २२७२ मील की दूरी पर थे उन्हें मालूम पड़ा जैसे दुश्मन की अचानक चढ़ाई शुरू हो गई हो। इससे धन जन की जितनी हानि हुई उसका अन्दाज तो लग ही नहीं पाया किन्तु ज्वालामुखी के मुह से भाप, धुँआ और धूल इतनी निकली कि दिन में १८० मील के घेरे में घोर अन्धकार

छा गया तथा ये चीजें आसमान में ऊपर २० मील तक चढ़ गई थीं।

भारत का पाश्चात्य व्यापार

श्री राधाकुमुद मुकर्जी एक स्थान पर लिखते हैं कि भारत का पाश्चात्य व्यापार रोमन साम्राज्य के प्रारम्भिक दिनों में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया था। वहाँ के धनिक वर्ग के लोग पूर्व के आनन्द की सामग्रियों की बड़ी माँग करने लगे। कुछ रोमन इस प्रवृत्ति के विरोधी थे। उदाहरणार्थ, ई० १०७७ के करीब प्लिनी ने धनिक वर्ग के लोगों की फजूलखर्ची की निन्दा करते हुए लिखा कि कोई वर्ष ऐसा नहीं जाता जब भारत रोमन साम्राज्य का १० लाख पौंड न खींच ले जाते हों।

संसार का सब से छोटा आदमी

हैरोल्ड छिपर नामक व्यक्ति संसार का सब से छोटा आदमी कहा जाता था। उसकी उम्र यद्यपि पचास साल की हो चुकी थी, पर उसकी ऊँचाई सिर्फ २३ इञ्च थी और वजन था सिर्फ बारह सेर! उसके माता-पिता अभी तक जीवित हैं और वे लोग तो पूरे क़द के आदमी हैं। १९१४ के महायुद्ध के दिनों में इसकी उम्र का खयाल करके सेना में भर्ती करने के लिए इसको तीन बार बुलाया गया था, पर जब अधिकारी इसे देखते तो हैरत में पड़ जाते। हैमेलहेम्पस्टेड में अचानक इसकी मृत्यु हो गई है।

चोरों का मेला

फ्रांस के अन्दर सेबुलस डिलोनी में प्रति वर्ष चोरों का एक मेला लगता है। यह मेला चोरों के लिये स्वर्ग के समान है। यहाँ जो दुकानें रहती हैं जिनमें एक से एक आकर्षक वस्तुएँ

सजा कर रक्खी जाती हैं। यदि कोई व्यक्ति किसी दूकान पर से कोई वस्तु सफलतापूर्वक चुरा ले जाय तो उसे दंडित होने का कोई भय नहीं है। इस मेले में चोरी के लिये दण्ड का कोई विधान ही नहीं है। हाँ एक बात है। दूकानदारों की सतर्क निगाह बचा कर चीज आप दूकान से उठा ले जावें वह तो आपकी अवश्य हो जायगी किन्तु अगर चोरी करते हुए दूकानदार द्वारा आप पकड़ लिये गये तो आपको उस वस्तु का मूल्य चुका देना होगा जिसको चुराने का प्रयत्न किया था। इस मेले का आदर्श यह मालूम होता है कि 'चुरा लो अगर तुम चुरा सकते हो लेकिन अगर नहीं चुरा सकते तो खरीद लो' चोरों का यह विचित्र मेला ५०० वर्ष से लग रहा है।

आदर्शपूर्ण सुन्दरी की पहचान

इस्तम्बूल कंसर्वेटरी के सांस्कृतिक गवेषणा विभाग के तुर्की अध्यापक डा० अब्दुल अल-डाविंगो ने प्राचीन काल की इतिहास विख्यात सुन्दरियों से लेकर वर्तमान काल की सुन्दरियों तक की सौन्दर्य रेखाओं का विश्लेषण अत्यन्त सूक्ष्म रूप से किया है। इतिहास-विख्यात सुन्दरियों की आकृति-प्रकृति के जो वर्णन उन्होंने प्राचीन ग्रन्थों में पढ़े हैं उन्हीं के अनुसार उक्त अध्यापक ने उनके सौन्दर्य का विश्लेषण किया है।

विश्लेषण के बाद वह इस परिणाम पर पहुँचे हैं कि जो नारी आदर्श सुन्दरी होती है ५ फीट ६॥ इञ्च लम्बी होती है। उसके शरीर के ऊपरी भाग की गोलाई ३५ इञ्च होती है, कमर २५ इञ्च, नितम्ब-प्रदेश ३५ इञ्च और टखने प्रायः ८ इञ्च चौड़े होते हैं।

कोलम्बिया पिक्चर्स नामक विख्यात फिल्म कम्पनी ने इस तुर्की अध्यापक को अपने यहाँ नियुक्त कर लिया है और इस

कम्पनी का यह दावा है कि उसने एक ऐसी सुन्दरी का आविष्कार कर लिया है जो इस आदर्श से पूर्णतः मेल खाती है। वह सुन्दरी है फिल्म अभिनेत्री आडेल जमेगन्स। इस सुन्दरी की नाप-जोख के बाद उसे आदर्श सुन्दरी घोषित कर दिया गया है।

७ महीने तक खेला जाने वाला नाटक

गुजरात में सवाक चित्रपटों की प्रतिद्वन्दिता में नाटक कम्पनियाँ एक दम समाप्त नहीं हो गई हैं। भावनगर जैसे एक छोटे नगर में, जिसकी आबादी केवल १ लाख २० हजार है, हाल में प्रभात कला मण्डल ने अपना 'लव-कुश' नामक नाटक लगातार लगभग सात महीने तक खेला। नाटक की १९७ वीं रात को स्वयं भावनगर के महाराजा साहब खेल देखने गये। इस अवसर पर प्रभात कला मण्डल ने महाराजा साहब को नजराने के रूप में चाँदी के चौखटे में जड़ा एक फोटो दिया। महाराजा साहब ने भी खुश होकर ५०० रु० की थैली भेंट की।

स्त्री चीता बन गई

यह बात बिलकुल असंदिग्ध है कि अफ्रीका में जादू-टोना करने वाले डाक्टर अनोखे करतब दिखाते हैं। यह बात एक लेखक ने एक पत्र में लिखी है। उसने एक उदाहरण भी दिया है। अफ्रीका की एक बूढ़ी स्त्री यह दावा करती थी कि वह जब चाहे चीते का शरीर धारण कर सकती है। लोगों ने यह बात भी देखी कि जिस किसी को वह स्त्री श्राप देती थी वह किसी चीते का ही शिकार हो जाता था।

कुछ महीने हुए एक चीते को गोली से मारा गया। उसके गले में गुरियों की एक माला थी और [illegible] में उसकी [illegible] थी कि उसके नीचे के [illegible] साफ हो गये थे। लोगों ने पहचाना कि

चीते के गले में वही माला थी जिसे उक्त स्त्री पहले पहनी थी। जिस दिन चीता मारा गया था उसी दिन वह स्त्री भी लापता हो गई थी। फिर उसके बाद वह कभी नहीं दिखलाई पड़ी।

घोड़े का मूल्य ३० लाख

युद्ध के कारण सभी वस्तुओं के मूल्य में अत्यधिक वृद्धि हो हो गई है, फिर भी आज किसी घोड़े का मूल्य ३० लाख रुपये लगाया जाना एक आश्चर्य का विषय है। सर एरिक ओहलसन इस्ली की घुड़दौड़ के विजेता हैं। आपके घोड़े पर मुग्ध हो एक व्यक्ति ने उसके मूल्य स्वरूप ३० लाख रुपये देना चाहा, फिर भी मालिक ने उसे अति क्षुद्र कह कर ठुकरा दिया। आपने यह भी कहा कि मैं किसी भी मूल्य पर इस घोड़े को नहीं बेच सकता।

कृत्रिम वर्षा द्वारा सिंचाई

इङ्गलैण्ड में बाल्टन-आन-टेम्स नामक स्थान में एफ० ए० सीक्रेट नामक एक व्यक्ति ने अपनी १५८ एकड़ ज़मीन की सिंचाई कृत्रिम वर्षा द्वारा करने में अच्छी सफलता प्राप्त की है। उनका यह कहना है कि इस कृत्रिम वर्षा के फलस्वरूप उन्हें एक फसल अधिक प्राप्त हो जाती है। उन्होंने एक ऐसी वैज्ञानिक विधि का आविष्कार किया है जिससे आवश्यकता पड़ने पर खेत के ऊपर थोड़ी ही ऊँचाई पर कृत्रिम बादल मेंह बरसाने लगते हैं।

आवश्यकता समझने पर मि० सीक्रेट कृत्रिम वर्षा के पानी का तापमान भी बढ़ा देते हैं और उस पानी में पहले से ही मिट्टी को उर्वरा बनाने वाला पदार्थ घोल दिया जाता है, तब जाकर वह ऊपर से सीधे मिट्टी पर बरसता है।

वायुयानों की परीक्षा के लिये नकली तूफान

'यार्क आइस मैशीनरी कारपोरेशन' (न्यूयार्क) के इंजीनियर अमेरिका के एक हवाई अड्डे पर ६०० मील लम्बी एक सुरंग तैयार कर रहे हैं जिसमें हवा का एक ऐसा प्रबल झोंका उत्पन्न किया जा सकेगा जिसका वेग ६०० मील प्रति घण्टा होगा। इस प्रकार इस नकली तूफान की गति वास्तविक तूफान से छःगुनी अधिक होगी, जिससे पड़ कर ईंट की दीवारें भी उड़ सकती हैं। इसके साथ ही साथ इसका तापमान भी फॉरन हाइट थरमामीटर के हिम-बिन्दु से ६० डिगरी नीचे होगा। इस नकली तूफान का प्रयोग उन वायुयानों की क्षमता की परीक्षा करने में किया जायगा जो आकाश में वायु के निरन्तर प्रबल झोंकों को चीरते हुए ४०० मील प्रति घण्टे की रफ्तार से उड़ने वाले होंगे।

अभिनेत्री बनने की लिप्सा

रजतपट पर अभिनय करने वाली अभिनेत्रियों की शान-शौकत आँखों से देख तथा उनके सम्बन्ध में तरह-तरह की अतिरंजित बातें सुन कर लड़कियों में अभिनेत्री जीवन व्यतीत करने की आकांक्षा का उत्पन्न होना बिल्कुल स्वाभाविक है। लेकिन अभिनेत्री बनने की यह लिप्सा प्रायः लड़कियों को मुसीबत में फँसा देती है। उस दिन बम्बई की एक अदालत में एक १७ वर्षीय पंजाबी बालिका ने अपनी दर्द भरी कहानी सुना कर इस बात की पुष्टि की है। लड़की अपनी विमाता के दुर्व्यवहार से ऊब कर घर से कई बार भाग चुकी थी। एक दिन लाहौर के एक बाग में [illegible] एक मुसलिम व्यक्ति उसे मिला और उसे [illegible] पर अभिनेत्री बना देने का सब्ज बाग दिखाया। लड़की उसकी बातों से आकर बम्बई के लिये रवाना

हो गई। दिल्ली में दो और व्यक्ति उनके साथी हो गये। बम्बई के दादर में वे एक मकान में ठहरे। वहाँ मुहम्मदशाफी ने लड़की पर बलात्कार किया और उसको एक अच्छी रकम पर बेंच डालने का प्रयास किया। जब लड़की ने इस पर विरोध किया, तब उस पर मार पड़ी। एक दिन लड़की मौका पाकर भाग निकली और प्रिंसेस स्ट्रीट थाने में अपनी उपर्युक्त कहानी सुनाई। पुलिस इन्स्पेक्टर ने अभियुक्तों को एक होटल में गिरफ्तार किया और बाद में वे जमानत पर मुक्त कर दिये गये।

अमेरिका की पँचमेल आबादी

अमेरिका की आबादी का प्रायः एक-तिहाई भाग विदेशी है। विदेशी से तात्पर्य यह है कि वे पुरुष, स्त्रियाँ और बच्चे या तो अमेरिका के संयुक्त राज्य के बाहर पैदा हुए हैं, या विदेशी माता या पिता से पैदा हैं।

अमेरिका की पिछली मनुष्य-गणना में इन लोगों को 'विदेशी श्वेत लोग' लिखा गया था। अमेरिका में इन विदेशी श्वेत लोगों की आबादी ३,८०,००,००० से भी अधिक है। उनमें ६८,००,००० जर्मन, ४५,००,००० इटालियन, ४२,००,००० अंगरेज, (स्कॉट, वेल्स और अल्स्टरमैन), ३३,००,००० पोल, ३३,००,००० कनाडियन, ३१,००,००० स्कैण्डिनेवियन, ३०,००,००० आयरिश और २६,००,००० रूसी हैं।

भारत और रोम का प्राचीन व्यापारिक सम्बन्ध

दक्षिण भारत में प्राचीन समय के बहुत से रोमन सिक्के पाए गए हैं जिनसे ज्ञात हुआ है कि ईसा की मृत्यु के बाद पहली शताब्दी में तामिल और रोमन जाति के लोगों में बहुत घनिष्ट व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित था। यह भी ज्ञात हुआ है कि इस

व्यापारिक सम्बन्ध के फलस्वरूप मद्रास प्रेसीडेन्सी में रोमन व्यापारियों की नियमित रूप से बस्तियाँ भी स्थापित हो गई थीं। कावेरी नदी के मुहाने पर एक 'यवन' बस्ती थी। रोमन सैनिक भारतीय राजाओं की सेनाओं में भी भर्ती हुए थे। तामिल साहित्य में 'मूक म्लेच्छों' अथवा 'शक्तिशाली यवनों' के अधिकतर उल्लेख पाए जाते हैं।

ब्रिटिश शाही परिवार की गन्दी नीति

ब्रिटिश पार्लमिण्ट के सदस्य मि० एल० होराबिन ने ब्रिटेन के सम्राट जार्ज षष्ठ के भाई कार्नवाल के ड्यूक की जमींदारी का निरीक्षण हाल ही में किया है। उन्होंने उसका वर्णन करते हुए लिखा है कि मैंने उस घर का निरीक्षण किया जहाँ अनेक किरायेदार १२-१३ वर्षों से रह रहे हैं। उस मकान की दीवालों से पानी चू रहा था। गच्चें टूट गई थीं और वे ईंट पत्थरों से भरी हुई थीं। मकान में घुसने की तंग गली में कूड़े करकट भरे पड़े थे। वहाँ के लोगों को स्नान करने की कोई सुविधा नहीं है और छठे छमासे अगर कोई नहाना चाहता है तो उसको अपने कमरे के दरवाजों को बन्द कर नहाना पड़ता है। किन्तु इतना होते हुए भी शाही परिवार वाले कभी भी किराया वसूलने से बाज नहीं आते और लोगों को गन्दे मकानों में रख कर अपनी आमदनी बढ़ाते हैं। मगर कार्नवाल के ड्यूक की जमींदारी की स्थिति शाही परिवार के अन्य सदस्यों की जमींदारी की तुलना में काफी अच्छी है।

लखपति और करोड़पति जानवर

तुम्हें यह जानकर आश्चर्य होगा कि मनुष्यों की भाँति पशु भी लखपति और करोड़पति हैं। फिलाडेलफिया बैंक में 'बेस'

नामक गाय के नाम दस हजार डालर जमा हैं। जर्सी-नगर में रहने वाली मिसेज़ जॉर्ज चिड की यह गाय है। कहते हैं, एक बार मिसेज़ चिड का तीन सप्ताह का पोता सख्त बीमार पड़ा। डाक्टरों ने राय दी कि उसे एक गाय के दूध पर रक्खा जाय। अनेक गायें आईं और गईं; लेकिन किसी का भी दूध लाभकारी सिद्ध नहीं हुआ। अन्त में 'बेस' लाई गई और उसका दूध पीकर बच्चा स्वस्थ होने लगा। जब बच्चा दो वर्ष का हो गया तो गाय को पेंशन दे दी गई। बुढ़िया दादी ने खुश होकर दस हजार डालर उसके नाम बैंक में जमा कर दिया। इस रुपये का सूद उस गाय को आराम देने में खर्च किया जायगा। गाय के मर जाने के बाद उसके बच्चे इस रकम के मालिक होंगे। गाय को जो दूध होगा, वह आस-पास के लड़कों में मुफ्त बाँटा जायगा।

यार्क में रहने वाली मिसेज़ एलेक्ज़ेन्डर स्नोडग्रास के मरने के बाद जब उनका वसीयतनामा पढ़ा गया तो उसमें लिखा था, मैं अपने प्रिय घोड़े के लिये दस हजार डालर की कीमत का पूरा इस्टेट छोड़े जाती हूँ। अपनी जिन्दगी में मेरा भतीजा उसकी देख भाल करे। घोड़े को ज्यादा से ज्यादा आराम देने की कोशिश की जाय। मरने के बाद उसे धूमधाम से दफनाया जाय। विलकेसबार नामक शहर में इसी तरह दो भाग्यवान बिल्लियाँ हैं। इनका मालिक इनके नाम अपना पूरा मकान वसीयत कर गया है।

सूर्य-सिद्धान्त

सूर्य तथा अन्य सितारे विश्व को गरम रखने के इंजन हैं। किसी अज्ञात उत्स से जो उनके भीतर है, यह गरमी उपजती है और सारे विश्व में फैल जाती है। कुछ समय बाद यह लोप हो जाती है और अभी ऐसा विज्ञानवेत्ता नहीं जन्मा जो पता लगा

सके कि कहाँ यह गरमी चली जाती है। जिस द्रुत गति से यह ताप उत्पन्न हो रहा है उसका अन्दाजा लगाने में बड़े-बड़े गणितज्ञ चक्कर खाने लगते हैं। एक पौंड ताप ही लीजिये। ताप का तोल सुन कर आपको घबराना न चाहिये, इसका भी वजन होता है। किन्तु अक्ल तो तब काम नहीं करती, जब मालूम होता है कि यह साढ़े सात छटाँक गरमी ८५ करोड़ मन पत्थर को तुरन्त गला और उसे लावा में परिणत कर सकती है। इससे साल भर तक बीस लाख घोड़ों की शक्ति से चलने वाले इंजन और कारखाने चल सकते है। यानी कुछ ही पौंड ताप से संसार के कारखाने चल सकते हैं।

अब केवल हमारे सूरज को लीजिये। वह प्रति सेकण्ड प्रायः बारह करोड़ मन गरमी विश्व में व्याप्त करता है। यह काम वह लाखों वर्षों से नहीं, वरंच असंख्य कोटि साल से करता आ रहा है, पर उसकी गरमी में अभी तक कोई अन्तर नहीं हुआ है। उसका यह तेज पलभर में न मालूम कितने अरब जगतों को पिघला देता, यदि विधाता इन्हें इतनी दूरी पर न रखता, जितने में उसका संहार होने के बदले उसमें प्राणशक्ति का सञ्चार हो रहा है।

धातु को गलाने और पत्थर को राख बनाने वाला नया बम

जापान की लड़ाई में अमेरिकन लोग नये-नये ढंग के अग्नि-निक्षेपक बमों को काम में ला रहे हैं। यह बात निश्चित रूप से जान हो चुकी है कि साधारण विस्फोटक बमों की अपेक्षा अग्नि-निक्षेपक बम ६ गुना अधिक विनाशक सिद्ध होते हैं।

हाल में मित्रों ने एक आश्चर्यजनक अग्नि-निक्षेपक बम का आविष्कार किया है। इस बम का नाम रखा गया है एम० ६६। यह इस्पात की बनी एक पतली-सी षट्कोण नली है। यह नली १६ इञ्च लम्बी होती है और उसके भीतर गोंद की तरह का एक चिप-चिपा पदार्थ भर दिया जाता है, जो भयंकर रूप से विदाहक होता है। जहाँ पर गिरता है वहाँ सामूहिक विध्वंस के बाद ही चैन लेता है। प्रत्येक बार में ऐसे २००० बम विमान द्वारा ले जाये जा सकते हैं।

जब यह बम भीषण वेग के साथ किसी मकान की छत पर जा गिरता है तो गिरने के पाँच सेकेण्ड बाद उसमें विस्फोट उत्पन्न होता है, और विस्फोट के साथ गोंदनुमा दाहक पदार्थ से भरा एक थैला बाहर निकल कर—आस-पास में ६० गज तक की सब चीजों को तत्काल जलाकर भस्म कर डालता है। उसकी गरमी इस कदर प्रचण्ड होती है कि उससे धातु पिघल जाते हैं और ईंट-पत्थर राख में परिणत हो जाते हैं। इस प्रकार के बमों से फैलने वाली आग इस कदर भीषण होती है कि कोई भी आधुनिक दमकल उसे बुझाने में समर्थ नहीं हो सकता।

बोर्नियो का विचित्र जंगल द्वीप

बोर्नियो पर मित्र फौजें फिर से अपना अधिकार जमाती चली जा रही हैं, और वह वर्तमान समय में प्रशान्त के युद्ध का केन्द्र बना हुआ है।

बोर्नियो एक विचित्र जंगली द्वीप है। यह विषवत रेखा पर स्थित है, इसलिये वहाँ कैसी भयंकर गरमी पड़नी चाहिये थी, इस बात का अनुमान सहज में लगाया जा सकता है। पर चारों ओर समुद्र रहने से उसका तापमान बारहों महीने ६२

डिग्री के आस-पास बना रहता है। तापमान चाहे बहुत अधिक न हो, पर वर्ष भर वहाँ ऐसी उमस रहती है जो पसीने के रूप में शरीर का सारा तेल निचोड़ लेती है और शान्त से शान्त प्रकृति के व्यक्ति का मिजाज चिड़चिड़ा बना देती है।

वहाँ ये बीमारियाँ बारहों महीने प्रायः महामारी का रूप धारण किये रहती हैं:—मलेरिया, डेंगू ज्वर, पेचिश, काला-आजार और चर्म-सम्बन्धी विविध प्रकार के रोग।

इस जंगली द्वीप को विचित्र प्रकार के सरीसृप-जातीय (अजगर, साँप, विष-खोपड़ा, त्रिसतोइया आदि) जन्तु चारों ओर से घेरे रहते हैं। यहाँ के जंगल बड़े विशाल हैं। उनमें से बहुत-से ऐसे हैं जहाँ अभी तक कोई मनुष्य नहीं पहुँच पाया है। विषैले काले साँप वहाँ ऐसे साधारण से जीव समझे जाते हैं जैसे भारत में छिपकलियाँ या मेंढक। विराट आकार के अजगर, जो मनुष्यों को आसानी से निगल सकते हैं, खूँख्वार घड़ियाल, [illegible] वाले बन्दर, हिंसक जंगली सुअर, रक्तशोषी जोंक आदि जीव-जन्तु इस द्वीप में भरे पड़े हैं।

इसकी नदियों के किनारों पर रेंगास नामक एक पौधा बहुत उगता है, जिसकी विषैली चेप लगने से शरीर में फफोले निकल आते हैं, घाव हो जाते हैं और आँखें अंधा हो जाता है।

मित्रराष्ट्रीय सैनिकों को न केवल इन प्राकृतिक शत्रुओं तथा जापानियों का ही सामना करना पड़ रहा है, बल्कि वहाँ के जंगली निवासियों से भी उन्हें अपनी रक्षा करनी पड़ती है। बोर्नियो के ये जंगली मूल-निवासी ऐसे छोटे-छोटे तीर छोड़ते हैं जो विषैले पौधों के रसों से बुझे हुए होते हैं। इनके शरीर में लगने के दो घण्टे के भीतर विष के प्रभाव से घायल व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। इन तीरों के विष का यही इलाज होता है जो

साँप के काटे का। ये मूल निवासी जापानियों और मित्रराष्ट्रीय सैनिकों में कोई भेद नहीं मानते, और दोनों पर समान रूप से छिप-छिप कर आक्रमण करते रहते हैं।

इङ्गलैण्ड के कुछ सुप्रसिद्ध अविवाहित

'नारि नयन सर काहि न लागा' यह बात प्रायः सभी मानते हैं। रूप, धन, विद्या के बाद कामिनी की इच्छा किसमें नहीं होती? इसके विपरीत बहुत से तो ऐसे लोग होंगे जिनमें न तो रूप है और न गुण और जो धन से भी छत्तीस का नाता रखते हैं, लेकिन तब भी उनकी एकान्त कामना यही। जिन्होंने अभी हाल ही में राजनीतिक कार्यों से अवकाश प्राप्त किया है, उनके साथ एक स्वामिभक्त कुत्ता है और रहने के लिए लिंकनशायर में उनकी चाची के घर का दरवाजा सदैव खुला रहता है। शिकार खेलना, गोली चलाना, मछली मारना— यही उनके मनोरंजन के मुख्य साधन हैं और इन तीनों साधनों का आनन्द लूटने के लिये अभी उनमें काफी शक्ति और क्षमता है।

लेकिन उन्हें इस बात का कभी भी दुःख नहीं होता कि इस अवकाश-काल में कोई स्त्री नहीं जिसके साथ वह एकान्त के आनन्द' का अनुभव करें। वह इस अवकाश के समय कौमार्य जीवन की अतीत स्मृतियों का जो आनन्द लूट रहे हैं वह बहुत कम अविवाहित व्यक्तियों को प्राप्त हो सकता है।

आर० सी० सेरिफ

आपकी अवस्था इस समय ४४ साल की है, और आपको भगवान् ने इतना अधिक धन दिया है कि यदि आप चाहें तो बड़े आनन्द के साथ पारिवारिक जीवन व्यतीत कर सकते हैं। "जर्नीज एण्ड" नामक आपकी पुस्तक ने सारे संसार में तहलका

मचा दिया। इसके प्रति शब्द के लिये आपको तीन पौण्ड मिले हैं और सम्भवतः आपकी रचना संसार में अमर हो गई है।

आप नाव चलाने तथा शिल्प-कला में खास दिलचस्पी रखते हैं। स्वस्थ सुडौल शरीर, बालकों का सा स्वभाव और देखने में अब तक एक दम तरुण।

लार्ड लोथियन

आप इस समय अमेरिका में ब्रिटेन के राजदूत हैं और अब तक अविवाहित हैं। आपकी कार्यकुशलता की सभी ने सराहना की है। रूपवान, व्यवहार-कुशल, वार्ता की कला में निपुण, ये आपके स्वाभाविक गुण हैं। इन्हीं गुणों के फलस्वरूप इस भारी जिम्मेदारी के पद पर आप नियुक्त किये गये हैं। आपने संसार की लम्बी यात्रा की है। क्या ही अच्छा होता यदि राजदूतावास को सुशोभित करने के लिये कोई लेडी लोथियन भी होतीं। अविवाहित रह कर उन्होंने यह दिखा दिया है कि एक कूटनीतिज्ञ केवल राजनीतिक मामलों में ही विजय नहीं प्राप्त करता, अन्य विषयों में भी विजय लाभ कर सकता है।

मैंने पांच स्टैलिनों को देखा

(डाक्टर फ्रेंच सुमैन)

मुझे यह नहीं मालूम था कि स्टेलिन बीमार है या नहीं। उसके शरीर पर किसी प्रकार का निशान है या नहीं-यह भी मुझे मालूम न था। और, कदाचित मैं उसके स्वर को भारी जिन्दगी भर में नहीं पहिचान सकूँगा। पिछले साल ही मैंने उस रशियन डिक्टेटर के स्वास्थ्य की पूरी परीक्षा की-मैंने उसके लिये मुझसे भी लिखा। कम से कम ऐसा करने का तो मुझे पूर्ण विश्वास है।

बुखारेस्ट-स्थित रूसी राजदूत दल की मध्यस्थता के जरिये मैं क्रेमलिन के लिये आमन्त्रित किया गया। मुझे मालूम था कि मेरे विशेषज्ञ सहयोगी बहुधा मास्को बुलाये जाते थे। मेरे राजनैतिक सिद्धान्त स्टेलिन से बिलकुल न मिलने पर भी मैं इस आमंत्रण का अस्वीकार न कर सका, क्योंकि विज्ञान अन्तर्राष्ट्रीय है और वह देश की सीमा के भीतर ही नहीं छिपाया जा सकता। मानव समाज की सेवा करने वाला विज्ञान एक वस्तु है और राजनीति एक दूसरी ही वस्तु।

सोवियट सरकार ने मुझे वायुयान द्वारा मास्को पहुँचने के लिये सब सुविधायें दीं। अंग्रेज लोग मेरी जितनी परवाह करते उतनी परवाह मास्को-विमान गृह में मेरे पहुँचने पर की गई। किसी भी स्थान के लिये मेरे पास दुभाषिया मौजूद रहता था जो यथासमय रूस की सामाजिक प्रगति की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया करता था। रूस में वह मेरा प्रथम आगमन था।

एक दिन के बाद दुभाषिये गाइड के साथ मुझे एक घर में जाना पड़ा जो क्रेमलिन के पीछे विद्यमान था।

दो दरबानों ने, जो कि भूरी वर्दी पहिने हुए थे, मेरा स्वागत किया। कमरे में एक ओर वे सब डाक्टरी औजार मौजूद थे जिनकी मुझे आवश्यकता हो सकती थी। एक्सरे तक के लिये प्रबन्ध किया गया था।

मैंने चन्द मिनटों तक इन्तजार किया कि कमरे में एक व्यक्ति ने जो निस्सन्देह जोसेफ स्टेलिन था-प्रवेश किया। वह एक सादी काले भूरे रंग की सैनिक वर्दी पहिने हुए था। उसके कालर में एक लाल सितारा था। उसने थोड़ासा सिर झुकाया और मुसकराते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया। मैंने भी झुककर अभिवादन किया और हाथ मिलाया।

उसी समय एक दूसरा दरवाजा खुला। एक दूसरे व्यक्ति ने भीतर प्रवेश किया। वह पहिले व्यक्ति से बिल्कुल ही मिलता-जुलता था। दोनों में कोई भी अन्तर नहीं था। पहिले व्यक्ति के समान ही उसने अभिवादन किया। मैंने अपने को आश्चर्य-सिंधु में पाया। मुझे यह पूछना चाहिये था कि असली स्टेलिन कौन है पर मैं अकेला था दुभाषिया बाहर ही रह गया था।

मैं मन ही मन सोचने लगा कि स्टेलिन का एक साथ-जन्मा भाई भी है? इसी समय एक तीसरा व्यक्ति आ पहुँचा। उसकी भी वैसी ही मूछें थीं, वैसे ही कपड़े थे, वही रूप था; वही रंग। अभिवादन का ढंग भी पूर्ववत् था।

एक क्षण मैंने अनुमान किया कि शायद मैं स्वप्न देख रहा हूँ। मैंने बारी-बारी से तीनों की ओर घूर कर देखा। वे मेरे सामने खड़े थे। इसी समय दरबान ने दो और व्यक्तियों की ओर इशारा किया। वे सब एक दूसरे से पूर्णरूप से मिलते-जुलते थे।

मुझे मालूम था कि मास्को में अधिक से अधिक सतर्कता ली जाती है परन्तु फिर भी—

आखिर सब बातें मेरी समझ में आ गई। सोवियट सरकार के प्रमुख को यह चिन्ता थी कि उसकी स्वास्थ्य-परीक्षा ऐसे सरल तरीके से न हो जिससे दूसरों को उसका पता लग सके। इशारे से मैंने प्रथम "स्टेलिन" को बतलाया कि मैं उसके वस्त्रों को खुलवाना चाहता हूँ। फिर मैंने बारी-बारी से सब की परीक्षा की। कपड़ों को खोलने की आहट से मैं जान गया कि प्रत्येक के पास रिवाल्वर था। मेरे पाँचों मरीजों ने मेरे उत्कण्ठतापूर्ण आदेशों का पूर्ण रूप से पालन किया

प्रत्येक ने अपनी दवाई का कार्ड पेश किया और पुराने उपचार का मुझे पूर्ण विवरण प्राप्त हो सका। तीन घण्टे के मुलाहिज़े के बाद मैंने पाँच विभिन्न नुस्खे लिखे।

शरीर-विज्ञान के दृष्टि-कोण से उनमें कोई समानता न थी पर उनके चेहरों में मेकअप (बनावट) का बिलकुल ही पता नहीं चलता था। उन सबका स्वरूप समान था। होटल में आकर मैं इसका अनुमान तक न कर सका कि उनमें से कौन सच्चा स्टेलिन था।

१८ हज़ार में हजामत

राजपूताने के एक महाराजा साहब ने हजामत बनवाने के लिए बम्बई से एक अँग्रेज नाई बुलवाया था। फर्स्ट क्लास में बैठ कर वह आया लगभग १००) दैनिक फीस पर। नाई का भाग्य, महाराज को तीन मास तक उससे हजामत बनवाने का समय ही न मिला। निदान हजामत बना चुकने पर नौ सौ रुपये तो उसके बिल के और नौ सौ रुपये महाराज ने अपनी तरफ से बख्शीश के रूप में दिये; इस तरह १८ हज़ार रुपये की हजामत बना कर वह [illegible] लौट गया।

संसार का आठवाँ आश्चर्य

तुङ्ग भद्रा नदी के पानी को काम में लाने की बात पर मद्रास तथा मैसूर सरकार का समझौता हो गया है, जिसके अनुसार नदी का पानी रोक कर एक बड़ी भारी झील बनाई जायगी, जो संसार में सब से बड़ा जलाशय होगा। सन् १९३० की योजना के अनुसार इसमें केवल १० करोड़ रुपये का व्यय था। अब मजदूरी तथा सामानों की कीमतें बढ़ जाने से २० करोड़ रुपये व्यय होंगे।

संसार के कुछ धनी

	नाम	देश
१	ऐडलेम फार्म	अमेरिका
२	हेनरी फोर्ड	अमेरिका
३	जॉन ओ० राकफेलर जुनियर	अमेरिका
४	ड्यूक आफ वेस्ट मिनिस्टर	ब्रिटेन
५	लार्ड आईवीग	ब्रिटेन
६	एडवर्ड डी रौथ्स चाइल्ड	फ्रांस
७	जी० डी० वेनडेल	फ्रांस
८	लूईस लइज ड्रेफस	फ्रांस
९	विलियम होहेन जोलर्न	जर्मनी
१०	फ्रिज थाइसेम	जर्मनी
११	फ्रेडरिक फिलक	जर्मनी
१२	एनयांग सांग	चीन
१३	साइमन पेटिनो	बोलिविया
१४	फ्रैंक स्टेन लार्ट	क्यूबा
१५	निजाम हैदराबाद	भारत
१६	गायकवाड़ बड़ौदा	भारत
१७	आगाखाँ	भारत
१८	महाराजाधिराज दरभंगा	भारत

लन्दन से न्यूयार्क १४ मिनट में

विज्ञान के नवीनतम आविष्कारों से हमारे यातायात सम्बन्धी प्रश्न बड़ी आसानी से हल होते जा रहे हैं उस दिन अमेरिकन राके सोसाइटी के सेक्रेटरी, जेगार्ड पिण्डारी ने यह घोषणा की है कि न्यूयार्क से लन्दन जाने में अब केवल १४ मिनट लगेंगे। राकेटों की गति प्रति घण्टे ७ हजार ५ सौ मील होगी।

तीन पैसे में गुजर

स्वामी रामतीर्थ (१८७३-१९०६) एक गरीब घर में पैदा हुए थे। स्कूल तथा कालेज में वे बड़े ही होनहार और प्रतिभा-सम्पन्न विद्यार्थी थे। लाहौर में पढ़ते थे। एक बार उन्हें केवल तीन पैसे रोज में गुजर करना पड़ा था। इस तरह उन्होंने एक महीना व्यतीत किया। वे तनिक भी घबड़ाये नहीं। कहा कि शायद ईश्वर मेरी परीक्षा लेना चाहता है। तीन पैसे ही में मैं अपना काम चलाऊँगा। वे एक पंजाबी रोटी वाले के यहाँ पहुँचते और सबेरे २ पैसे का खाना खाते शाम को एक पैसे का लेकर खा लेते थे। जब यह सिलसिला जारी हुआ तो कतिपय दिनों के बाद दूकानदार ने कहा, यहाँ से चले जाओ, तुम रोज तीन पैसे मूल्य की रोटी लेकर खाते हो और मैं जो दाल परोसता हूँ उसका कुछ दाम ही नहीं देते। दाल मुफ्त ही खाते हो। जाओ अब तुम्हारे हाथ में रोटी नहीं बेचूँगा। उस दिन से रामतीर्थ केवल एक वक्त भोजन करने लगे।

अकबर और उसका कवि

अकबर के दरबार के मशहूर कवि फैजी के जीवन की अन्तिम घड़ी उपस्थित थी। जब अकबर उसको देखने के लिए आधी रात के समय आए फैजी कुछ बोल नहीं सकता था। अकबर ने धीरे से उसका सिर ऊपर उठा कर कहा, शेख जियो, मैं हकीमअली को अपने साथ ले आया। (हकीम अली सम्राट का निजी चिकित्सक था) क्या तुम मुझसे बोलोगे नहीं ? जब कुछ उत्तर नहीं मिला तो सम्राट ने शोक से विह्वल होकर अपनी पगड़ी उतार कर जमीन पर फेंक दी और वे जोर जोर से रोने लगे। फैजी के भाई अबुल फजल को सान्त्वना देने का प्रयत्न करने के बाद अकबर वहाँ से चले गये।

बन्दी बादशाह की इच्छा

जेम्स ग्राण्ट डफ ने लिखा है कि १६८७ ई० में औरङ्गजेब ने गोलकुण्डा पर घेरा डाला। आठ महीने तक वीरतापूर्वक लड़ने के पश्चात् बादशाह अबुल हसन (जो तानाशाह के नाम से भी प्रसिद्ध है) ने आत्म-समर्पण कर दिया। वह बन्दी बना लिया गया। दौलताबाद भेजे जाने के पूर्व जब वह औरङ्गजेब के शिविर में था, एक दिन वह बाजे की किसी लय पर मुग्ध और आह्लादित हो गया। शाही संगीतज्ञों के दल में से ही कोई बाजा बजा रहा था। बन्दी बादशाह ने इच्छा प्रकट की कि यदि मेरे पास धन होता तो एक लाख रुपया इस आदमी को देता। जब यह बात औरङ्गजेब के कान तक पहुँची तो उसने फौरन हुक्म दिया कि बन्दी बादशाह की इच्छा-पूर्ति के लिए एक लाख रुपया उसे दिया जाय।

३० मिनट में तैयार होने वाला मकान

एक चार कमरों वाला बना-बनाया मकान ३० मिनट के अन्दर किसी भी स्थान में खड़ा किया जा सकता है—यह नई इंजीनियरिंग कला अमेरिका में आविष्कृत हुई है। पहले से तैयार किए गए कमरे अत्यन्त शीघ्रता से एक दूसरे से जोड़ दिए जाते हैं, और बिजली, पानी तथा मोरी का प्रबन्ध बात की बात में कर दिया जाता है। ३० मिनट के अन्दर वह फर्नीचर से सुसज्जित, बिजली, गरम पानी, रसोई आदि की सुविधाओं के साथ तैयार मिल जाता है। ये बने बनाये मकान एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाये जा सकते हैं। युद्ध की आवश्यकताओं के लिये ये बड़े उपयोगी सिद्ध हुए हैं। अभी इस ढंग के जितने मकान तैयार किए गए हैं उनसे एक पूरा शहर बसाया जा सकता है।

मंगल ग्रह में चाय पीकर शुक्र में विश्राम कीजिये

आकाश में प्लेटफार्म बनेंगे और जहाज चलेंगे

हाल में जर्मन और मित्रराष्ट्रीय वैज्ञानिकों ने बड़े आश्चर्य-पूर्ण, परन्तु मनोरंजक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है।

जर्मन वैज्ञानिकों ने बताया है कि भविष्य में एक समय ऐसा आयेगा जब भूमि से ५,००० मील ऊपर बड़े-बड़े प्लेटफार्म बनाये जा सकेंगे। उनका खयाल है कि इस ऊँचाई पर भूमि की गुरुत्वाकर्षण शक्ति समाप्त हो जाती है। आकाशी प्लेटफार्म से ऐसे विशाल दर्पणों का प्रयोग किया जा सकेगा, जिनकी सहायता से सूर्य की किरणों को भूमि के किसी भी भाग पर केन्द्रित किया जा सकेगा। इस प्रकार युद्ध और शान्तिकालीन उद्देश्यों को ध्यान में रख कर इन दर्पणों की सहायता से शहरों को ध्वस्त किया जा सकता है अथवा वहाँ विद्युत शक्ति पैदा की जा सकती है।

परन्तु इन प्लेटफार्मों को शून्य में किस प्रकार स्थापित किया जाय यह एक समस्या है। १,८०० मील ऊपर तक जाने वाले राकेटों के सम्बन्ध में जर्मन वैज्ञानिक परीक्षण करते रहे हैं। यदि राकेटों की सहायता से शून्य में प्लेटफार्म स्थापित हो जायँ तो इस दशा में अगला कदम आकाश में दूर-दूर की यात्रा करने के लिये जहाज चलाये जायँगे। उस अवस्था में सम्भवतः मंगल ग्रह में चाय पीकर शुक्र में विश्राम किया जा सकेगा।

इस विषय के एक महान विशेषज्ञ और प्रिंस्टन विश्व-विद्यालय के विख्यात ज्योतिषी डा० हेनरी मौरिस रसल का कथन है कि हमारे ग्रहमण्डल में केवल तीन पिंड ऐसे हैं जहाँ लोग रह सकते हैं। ये पिंड मंगल, शुक्र और पृथ्वी हैं। उनका

दावा है कि मंगल ग्रहमण्डल में लोग रहते थे और शायद अब भी रहते हैं। शुक्र में भी परिस्थितियाँ रहने के अनुकूल ही हैं।

परन्तु बुध ग्रहों की स्थिति ऐसी नहीं है। यहाँ तक कि पागल कुत्ते भी वहाँ दिन में दोपहर को बाहर नहीं निकल सकते। वहाँ तापमान दिन के बारह बजे ६०० डिग्री फारनहाइट रहता है। अन्य ग्रहों का तापमान १८० से ३०० डिग्री तक है। डा० रसल का विचार है कि दूर के ग्रहमण्डलों में कई हजार नक्षत्र ऐसे हैं, जहाँ रहना सम्भव है।

यदि कभी भूमि से कई हजार मील ऊपर शून्य में ऐसे प्लेट-फार्म बनें तो यह भी सम्भव है कि विज्ञान की सहायता से शून्य में जहाज भी चल सकेंगे।

रंग में रोगोपचार की शक्ति

चिन्ता और विषाद किसी रोग से कम हानिकारक नहीं होते। सभी युद्धों में इनका खूब प्रसार होता है। ये रोग रंग के प्रभाव से पूर्णतः दूर होते देखे गये हैं। शिकागो राज्य में पागल आदमियों के लिए एक अस्पताल है। वहाँ एक नए यंत्र का जो विभिन्न रंगों का प्रकाश छोड़ता है उपयोग किया गया है। यह यंत्र इन्द्र-धनुष की तरह विभिन्न रंग विकीर्ण करता है। ये रंग निरन्तर एक दूसरे में विलीन होते रहते है। रोगियों के नेत्रों पर इन रंगों का प्रभाव पड़ने से बड़ा आश्चर्यजनक लाभ हुआ है। आधुनिक काल के अनेक सिनेमाघरों में भी इसी प्रकार का रंग का एक परदा चित्रों के पूर्व दिखाया जाता है। श्रान्त मस्तिष्क उन रंगों के जाल में स्नात होकर विश्राम और स्फूर्ति प्राप्त करता है।

रोगोपचार के लिए अकसर विशुद्ध रक्त की तरह लाल वर्ण का उपयोग किया जाता है। अनेक घायल सैनिकों को गहरे

लाल रंग की पट्टियाँ बाँधी गई हैं। इससे रक्त का संचालन ठीक से होता है और खोई हुई शक्ति प्राप्त हो जाती है। यदि आप थके हुए मालूम पड़ते हों तो लाल रंग के स्लीपर पहन लीजिये या लाल रंग के फूलों को एक बरतन में करके किसी ऐसे स्थान पर रख दीजिये जहाँ आपकी दृष्टि बार-बार जा सके। उसका प्रभाव आपको स्वयं मालूम पड़ेगा।

एक डाक्टर था जिसे विश्वास था कि रंग में रोगोपचार की शक्ति है। उसने आठ वर्ष के एक बालक पर उसका प्रयोग किया। बालक प्रायः पूर्ण रूपेण पक्षाघात से पीड़ित था। डाक्टर ने उस बालक को श्वेत रंग का वस्त्र पहनाया, फिर तेज प्रकाश का उसे स्नान कराया। तीन सप्ताह के अन्त में वह बालक अच्छा हो गया और चलने-फिरने लगा। रंग में निश्चयात्मक रूप से औषधीय गुण विद्यमान् है और अगर उसका स्वतंत्रतापूर्वक उपयोग किया जाय तो बदहजमी दूर हो सकती है। यह प्रमाणित किया जा चुका है कि लाल रंग के वस्त्र पहनने से रंग चर्म को भेद कर प्रवेश कर जाता है और मनुष्य को बलवान तथा क्रियाशील बना देता है।

पेट के रोगों के लिए लाल रंग

एक बार न्यूयार्क के प्रसिद्ध दरजी रेमाण्डर ट्रिश्रफर्ट के पेट में तीव्र वेदना उत्पन्न हो गई। डाक्टरों को उसके पेट में कोई रोग या व्यतिक्रम नहीं दिखलाई पड़ा। एक दिन उस दरजी ने लाल रंग का वह कोट पहन लिया जो शिकार खेलने के समय पहना जाता है। उसके प्रभाव से वह इतना आह्लादित हो गया कि टाई, पाजामा और गाउन आदि भी लाल रंग का पहनने लगा। उसके पेट का सारा रोग काफूर हो गया। रंग ने उसे चंगा कर दिया।

कूल्हे के दर्द तथा सब तरह के गठिया रोगों के लिये लाल रंग का कपड़ा पहनना बड़ा लाभदायक बतलाया जाता है। जो इन रोगों से ग्रसित हों उन्हें लाल रंग के वस्त्र का प्रयोग कर रंग की उपादेयता की परीक्षा करनी चाहिए। कपड़ा जहाँ तक सम्भव हो खूब गहरे लाल रंग का हो। एक बार यदि हमें रंग की उपयोगिता का प्रमाण मिल जायगा तो हमारा विश्वास कभी भी डिग नहीं सकेगा।

जो लोग अनिद्रा के रोग से पीड़ित हों उन्हें नीले रंग के कमरे में रहने से आराम मिलेगा। अगर कमरे की दीवारें नीले रंग से न रंगी हों तो कमरे में नीले रंग का प्रकाश भर देने का प्रयत्न करना चाहिए। सिर दर्द को अच्छा करने के लिए धुँधला आसमानी रंग उपादेय होगा। हरे रंग का उपयोग आँख के अस्पतालों को अलंकृत करने के लिए किया जाता है क्योंकि यह रंग नेत्रों की शक्ति के लिए सहायक है। पीला रंग स्फूर्ति तथा जीवन शक्ति देने वाला है। वह स्नायु तथा मस्तिष्क पर प्रभाव डालता है। अगर आपके सामने कोई चिन्ताजनक समस्या उपस्थित है तो अच्छा होगा कि पीले रंग के कमरे में ही बैठ कर उस पर विचार कीजिये।

बैंजनी रंग में विद्युत सी शक्ति रहती है। उसका उपयोग टानिक के रूप में किया जा सकता है। प्रकृति रंगों के महत्व पर जोर देती है। ऐसे संसार की कल्पना तो कीजिये जिसमें कहीं हरियाली न हो और नीले रंग का आसमान न हो, कितनी वह दुनिया बुरी लगेगी।

रामचरित मानस का रूसी अनुवाद

२० जून, १६४५ को रूसी विज्ञान परिषद् की पौर्वात्य-ज्ञान

समिति ने परिषद् की २२० वीं जयन्ती के उपलक्ष्य में एक विशेष सभा का आयोजन किया। पौर्वात्य विषयों के सुप्रसिद्ध रूसी विशेषज्ञ उस सभा में सम्मिलित हुए थे।

इसी सभा में विद्वान अध्यापक एलेक्से बारानिकोव ने तुलसीदास-रचित रामायण के रूसी अनुवाद की भूमिका पढ़ सुनाई। बारानिकोव ने उपस्थित जनता को बताया कि उन्होंने किन परिस्थितियों में महान् मध्ययुगीन भारतीय कवि की इस विख्यात रचना का अनुवाद किया। उन्होंने आल्टाइ पर्वतमाला के एक स्वास्थ्यकर स्थान में लगातार तीन वर्ष तक इस अनुवाद के पीछे परिश्रम किया।

भारतीय साहित्य के प्रायः ४ हजार वर्ष व्यापी इतिहास का संक्षिप्त परिचय देने के बाद बारानिकोव ने तुलसीदास की जीवनी का विस्तृत परिचय दिया। उन्होंने कहा कि तुलसीदास की काव्य प्रतिभा महान् थी और उनका अध्ययन बहुत व्यापक और गहन था। उन्होंने बताया कि तुलसीदास का उद्देश्य भारत के विभिन्न सम्प्रदायों के बीच एकता की भावना स्थापित करने का था। उनकी रामायण के चरित्र-नायक राम परमतत्व की साक्षात् प्रतिमूर्ति हैं। तुलसीदास ने उन्हें भारत के राष्ट्र नायक का रूप दे दिया। राम आदर्श शासक थे, आदर्श पुत्र थे और मर्यादा पुरुषोत्तम थे, जो किसी भी कठिन परिस्थिति में अपने कर्तव्य के पालन से विमुख नहीं होते थे।

अध्यापक बारानिकोव ने कहा कि तुलसीदास रचित रामायण भारत के सब से अधिक लोकप्रिय ग्रंथों में से है। यह बताने के बाद कि उन्होंने किस उद्देश्य से प्रेरित होकर इस महान् ग्रंथ का अनुवाद रूसी भाषा में किया है, उन्होंने लंकाकाण्ड के कुछ अनुवादित अंश टाल्सटाय तथा पुश्किन की भाषा में पढ़कर सुनाये।

कोहनूर की कहानी

(लेखक—श्री लक्ष्मणप्रसादजी भारद्वाज)

लक्ष्मी की चंचलता प्रसिद्ध है। सृष्टि के आदि से लेकर आज तक इसने कभी एक स्थान पर किसी एक मनुष्य विशेष के यहाँ विश्राम नहीं किया। आज जो मनुष्य लक्ष्मी-सम्पन्न होने के कारण सर्व-साधारण की दृष्टि में उच्च और मान्य समझे जाते हैं, कल को लक्ष्मी के किनारा करते ही वे अनेक प्रकार के कष्ट भोगते हैं। प्रतिदिन हम अपनी आँखों से इस प्रकार के दृश्य देखते हैं। किस मनुष्य के पास यह कितने दिन ठहरेगी यह बड़े से बड़े गणितज्ञ भी हिसाब लगा कर नहीं बतला सकते। न इसको आते देर लगती है और न जाते। अपने इसी अस्थिर स्वभाव के कारण बेचारी को कुछ विद्वानों द्वारा तिरष्कृत भी होना पड़ा है, उनकी भली बुरी भी सुननी पड़ी है। संस्कृत और हिन्दी के अनेक कवियों ने तो बेचारी को तान-तान कर ताने मारे हैं। उसके चंचल स्वभाव का वर्णन करते हुए उसे जी भर कर कोसा है। गिरधर कविराय ने कह दिया कि—

माया पाय न कीजिये सपने हूँ में अभिमान।
चंचल जल दिन चार को ठाउं न रहत निदान॥

गिरधरजी ने खैर की बेचारी को चंचल जल की ही उपमा देकर छोड़ दिया, परन्तु रहीम ने तो दिल्लगी ही दिल्लगी में बेचारी की बड़ी खबर ली है और उसे बड़ा शर्मिन्दा किया है। वे कहते हैं-

कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय।
पुरुष पुरातन की बधू, क्यों न चंचला होय॥

यहाँ पर रहीम ने लक्ष्मी को पुरुष पुरातन की बधू कह कर अच्छी खासी सुनाई है। इससे अधिक कोई किसी के लिये और

कह ही क्या सकता है ? किसी-किसी ने तो इसे मादक-द्रव्य जैसी घृणित वस्तु बताई है। भाँग धतूरे से भी अधिक नशीली कह कर लोगों की नजरों में गिराने की कोशिश की है यथा—

कनक, कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वो खाये बौरात है, या पाये बौराय॥

कुछ भी हो इतनी कड़ी आलोचना किये जाने पर भी लक्ष्मी ने अपने स्वभाव में परिवर्तन नहीं किया है, वह आज तक उसी पुराने ढर्रे पर चल रही है।

विश्वविख्यात 'कोहनूर' हीरा लक्ष्मी की चपलता का दृष्टान्त है। यह सम्राट एडवर्ड सप्तम के राज्य-काल में ब्रिटिश-साम्राज्य के सुप्रसिद्ध नगर लन्दन के 'टावर आफ लन्दन' नामक क़िले में विराजमान रहा और सम्राट जार्ज पंचम के राज्य-काल में इसके दो टुकड़े करा लिये गये जो एक सम्राट के व दूसरा सम्राज्ञी के ताजों में लगे। इस हीरे का सम्बन्ध संसार के कई देशों के इतिहास से है। राजाओं और बादशाहों ने इससे अपना नाता जोड़ा है और कुछ काल तक इसे अपने अधिकार में रख कर अपने आपको धन्य समझा है, परन्तु जिस प्रकार फ़ुटबाल के खेल में गेंद एक खिलाड़ी से दूसरे खिलाड़ी के पास जाती रहती है उसी तरह यह हीरा भी एक के बाद दूसरे पर जाता रहा है।

उत्पत्ति और पूर्व इतिहास

इस हीरे के जन्म संस्कार के विषय में अनेक किम्वदन्तियाँ सुनने में आई हैं परन्तु कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता। उनमें से एक यह भी है:—द्वापर काल में महाभारत से पहिले सत्राजित नाम का एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक था जिसने वर्षों परिश्रम करके इस हीरे को सूर्य की किरणों को वैज्ञानिक रीति से

प्रयोग में लाकर बनाया था जिसकी कथा श्रीमद्भागवत् में इस प्रकार लिखी है कि सूर्य भगवान् ने सत्राजित को उसकी तपस्या पर प्रसन्न होकर स्यमन्तक नाम की मणि दी थी। वह मणि सत्राजित को मार कर जामवन्त रिच्छराज ने ले ली और रिच्छराज का श्रीकृष्णचन्द्रजी ने हरा कर उसकी कन्या जामवती सहित उस मणि को पाया। और महाभारत के बाद वही मणि श्रीकृष्णचन्द्र ने सम्राट धर्मराज युधिष्ठिर को उनके राज्याभिषेक के अवसर पर भेंट की जिसने उनके मुकुट की शोभा बढ़ाई। यह हीरा वही स्यमन्तक मणि है या नहीं इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं परन्तु यह बात जरूर है कि यह हीरा अपने कालीन हीरों में सब से अधिक देदीप्यमान, प्रकाशमान और मूल्यवान रहा है। आगे फिर इतिहास इसके विषय में मौन धारण कर लेता है और नहीं कहा जा सकता कि यह कहाँ और किसके पास रहा। ऐसा भी सुनने में आता है कि बहुत प्राचीन काल में सुविख्यात रत्नगर्भा गोलकुण्डा की खान से इसे निकाला गया था।

मुगल बादशाहों के पास

इसका निश्चित इतिहास भारत में मुग़ल राज्य की स्थापना के साथ प्रारम्भ होता है। जिस समय मुग़ल राज्य के संस्थापक बाबर ने पानीपत की युद्ध-भूमि में लोदी वंश के तत्कालीन सुल्तान इब्राहीम को परास्त करके भारत में मुग़ल विजय की पताका फहराई थी उस समय यह हीरा गवालियर के राजा के पास था। विजय के उपरान्त बाबर ने अपने पुत्र हुमायूँ को आस पास के स्वतन्त्र राज्यों पर आधिपत्य जमाने को भेजा इसी दौरान में गवालियर नरेश ने मुग़लों का प्रभुत्व स्वीकार करते हुए यह हीरा हुमायूँ को भेंट किया था। इतिहास प्रेमी

पाठकों को स्मरण होगा कि इस घटना के तीन चार वर्ष बाद जब हुमायूँ की बीमारी निराशा का रूप धारण कर चुकी थी और उसके जीवन की आशा टूट चुकी थी तब बाबर को उसके दरबारियों ने इस हीरे की याद दिलाते हुए इसको फकीरों और भिखारियों को दान करने के लिये कहा था परन्तु बाबर ने हीरे को देने की अपेक्षा अपने जीवन को दान करना उस समय अधिक उपयुक्त समझा था। हीरे की अपेक्षा अपने जीवन को उसने कम मूल्यवान ठहराया था, अपने पुत्र के जीवन को सुरक्षित रखने के लिये उसने आत्म-बलि देकर इतिहास में इस कथन का सत्य कर दिखाया—

'पुत्र प्राण ते अधिक है चारहु युग परमान'

तख्त ताऊस में

बाबर के परलोकवास के बाद हीरा उसके वंशजों के पास रहा आया। जहाँगीर की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र शाहजहाँ तख्त पर बैठा। उसके राज्य-काल में मुगल राज्य वैभव की पराकाष्ठा को पहुँच गया था उन दिनों का राजसी ठाट-बाट दर्शनीय था। शाहजहाँ ने अनेक सुन्दर इमारतों का निर्माण कराया और उसी ने दर्शकों के मन को लुभा देने वाले 'मयूर सिंहासन' (तख्त ताऊस) को बनवाया। शाही कोष के कई सुन्दर और मूल्यवान हीरे इस सिंहासन में जड़वा दिये गये, कोहनूर भी इसी में लगवा दिया गया। इस प्रकार कुछ काल तक इसने इस सिंहासन की शोभा को बढ़ाया। कदाचित शाहजहाँ ने इसे राजसिंहासन में जड़वा कर स्थायी बनाने की सोची पर मनुष्य अपनी सो लाख करने पर भी वस्तुओं के स्वभाव और उनकी प्रकृति को नहीं बदल सकता। कहा भी है—

कोटि यत्न कोऊ करै, पर न प्रकृतिहिं बीच।
नल बल जल ऊँचो चढ़ै, अन्त नीच का नीच ॥

फारस को

परन्तु समय के चक्र के साथ ही सांसारिक अवस्थाओं में परिवर्तन होता रहता है। समय ने बड़े-बड़े छत्रधारियों को धूल में मिला दिया, महान शक्तिशाली सम्राटों को भी इसकी एक तिरछी नजर से ही नीचा देखना पड़ा—

हुए एक आन में जख्मी हजारों,
जिधर को जमाने ने तिरछी नजर की।

शाहजहाँ के बाद औरङ्गजेब का जमाना आया और उसके राज्यकाल के पूर्वार्द्ध में मुग़ल राज्य की धाक भारत में जम गई परन्तु शासन के उत्तरार्द्ध में नाशकारी बीजों का सूत्रपात भी इसी के समय में हुआ। उसका अन्त होते ही मुग़ल साम्राज्य के अन्त का प्रारम्भ हो गया। उसके उत्तराधिकारियों के ही काल में बड़े वेगपूर्वक मुग़ल शक्ति का ह्रास होता गया। मुहम्मदशाह (रंगीला) के समय में फारस के बादशाह नादिर-शाह ने दिल्ली पर आक्रमण किया। उसकी नजर इस हीरे पर थी और मुहम्मदशाह स्वयं भी इसे जी जान से प्यार करता था। वह इस प्रिय हीरे को देना अत्यन्त अप्रिय समझता था। इस तरह दोनों की ग़रज मुश्तर्का थी—

"दोनों तरफ थी आग बराबर लगी हुई"

मुहम्मदशाह ने हीरे को तख्त ताऊस में से निकाल कर अपनी पगड़ी में छिपा कर रख लिया। महल की एक बाँदी को इस रहस्य का पता था, उसने सारा भण्डाफोड़ कर दिया। जब यह राज नादिर को मालूम हुआ तो उसने मुहम्मदशाह से

मित्रता का बहाना करके उसे चुम्बन किया और पगड़ी परिवर्तन की इच्छा प्रकट की। मुहम्मद ने ऐसा करने में अवश्य कुछ आपत्ति-आनाकानी की होगी, परन्तु—

"बिगड़ती है जिस वक्त जालिम की नीयत
नहीं काम देती दलील और हुज्जत"

मुहम्मद को ऐसा करने के लिये विवश होना पड़ा। अपनी पगड़ी, इच्छा न होने पर भी नादिर को देनी पड़ी। नादिर ने हीरा निकाल कर अपने अधिकार में किया और पगड़ी को मुहम्मद के सामने ही तत्काल फाड़ कर फेंक दिया। जिस समय मुहम्मदशाह से यह हीरा छीना गया तो उस समय वह आह, कोहनूर! कोहनूर!! (आह प्रकाश के पर्वत) आदि कहता हुआ पृथ्वी पर पछाड़ खाकर गिर पड़ा। उसी दिन से इस हीरे का यह नाम पड़ा। नादिरशाह हीरे को अपने साथ फारस ले गया।

अफगानिस्तान में

कुछ समय के बाद नादिर के सरदारों ने ही उसका वध कर डाला और उसका साम्राज्य शीघ्र ही छिन्न भिन्न हो गया। अपने स्वामी के पतन के साथ कोहनूर ने भी हर बार अपने अधिकारी का भी परिवर्तन किया है। उसने सर्वदा 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली लोकोक्ति को चरितार्थ किया है। नादिरशाह से चल कर कोहनूर अफगानिस्तान के शाह अहमद-शाह दुर्रानी के हाथ आया। उसकी मृत्यु के उपरान्त कुछ दिनों तक उसके वंशज उस पर अपना अधिकार जमाये रहे। जब इतिहास की पुनरावृत्ति होनी आरम्भ हुई और अफगानिस्तान में गृह-विप्लव हुआ, उस समय हीरा जमानशाह के पास था। बेचारे जमान को बुरे दिनों के फेर में पड़ कर बड़े कष्ट सहन

करने पड़े। उसे बड़ी असह्य यातनायें भुगतनी पड़ीं, वह तख्त से उतारा गया और बन्दी बना कर जेल की चहारदीवारी के अन्दर बन्द कर दिया गया। जमान ने जेल में भी हीरे का मोह न छोड़ा और हीरे को जेल की दीवार में गाड़ दिया। उसकी आँखें फोड़ कर उसे अन्धा कर दिया गया, परन्तु उसने इस हीरे का पता ही न दिया।

कुछ दिनों पश्चात् जमान का दूसरा भाई शाहशुजा सिंहासनारूढ़ हुआ। संयोगवश एक दिन शाह के किसी अफसर का हाथ दीवार से रगड़ खाकर हीरे से खुरच गया। इस प्रकार अचानक खुरच जाने का कारण मालूम करना ही कोहनूर की प्राप्ति का कारण बना। वहाँ से निकाल कर यह शाह के पास लाया गया। शाह-शुजा हीरे को पाकर बड़ा प्रसन्न हुआ और इसे अपने आभूषणों में जड़वा लिया।

पुनः भारत में पदार्पण

शाहशुजा एक मौजी पुरुष था। वह राज्य की अपेक्षा काव्य का अधिक प्रेमी था। उसमें राजनैतिक पटुता का पूर्ण अभाव था। दुर्भाग्य ने उसे शीघ्र ही आकर दबाया और अपने प्रतिद्वन्दी दोस्त मुहम्मद से परास्त होकर उसे अफगानिस्तान की गद्दी छोड़नी पड़ी। वह भाग कर भारत में आया। पंजाब के महाराजा रणजीतसिंह ने उसे सहायता देने का वचन दिया, परन्तु रणजीतसिंह का यह सब करना मतलब से खाली नहीं था। उसमें एक बड़ा स्वार्थ छुपा था। उसका दाँत इस हीरे पर था और वह शाह के बुरे दिनों से लाभ उठाना चाहता था। वह समझता था कि कठिन समय में मनुष्य प्रायः अपनी प्यारी से प्यारी वस्तु देने को तैयार हो जाते हैं। बड़ी तरकीबों और हीलो हुज्जत के बादशाह हीरे को देने को राजी हुआ। ऐसा करते

समय उसका 'दर्देदिल' वही समझ सकता था। इस प्रकार जो हीरा तैमूर के वंशजों से निकल कर भारत की सीमा को लाँघ कर फ़ारस और अफ़गानिस्तान की भूमि में भ्रमण कर आया था, एक बार पुनः अपनी जन्म-भूमि भारत में आगया। उसकी इस अवस्था को देख कर यह शैर याद आ गई —

मक्के गया मदीने गया करबला गया।
जैसा गया था वैसा ही चल फिर के आगया॥

पाँच जूता

अस्तु यह हीरा बहु मूल्य होने पर भी जिसके अधिकार में रहा, उसी पर आपत्तियों का पहाड़ टूटा। कहने को इसका मूल्य आँका गया है कि इसके बेचने से जो धन मिले, उससे विश्व भर को एक वक्त खाना खिलाया जा सकता है, किन्तु इसके बिलकुल विपरीत एक किम्वदन्ती भी चली आती है। कहते हैं कि रणजीतसिंह से किसी ने इस हीरे का मूल्य पूछा तो उसने उत्तर दिया कि केवल इसका मूल्य ५ जूता है। जिसमें इतनी शक्ति है कि वह इसके अधिकारी को जूता लगा सके, उसे परास्त कर सके तो वही इसे प्राप्त कर सकता है। रणजीतसिंह को यह हीरा प्रिय अवश्य था परन्तु इसके पूर्वाधिकारियों की दुर्दशा सुन सुन कर इसके विषय में उसकी धारणा में परिवर्तन हो चुका था, अतः अपनी मृत्यु के समय उसने इच्छा प्रकट की थी कि हीरा किसी हिन्दू मन्दिर के अर्पण कर दिया जाय, परन्तु उसके उत्तराधिकारियों को ऐसा करना उचित प्रतीत न हुआ। उन्होंने हीरा अपने ही पास रक्खा।

इङ्गलैण्ड यात्रा

रणजीतसिंह की मृत्यु के थोड़े ही समय पश्चात् लार्ड हार्डिन्ज के शासन काल में अँग्रेजों और सिक्खों में परस्पर पहली बार

युद्ध छिड़ा, गोयरगाँव की लड़ाई की विजय के बाद इस अवसर पर डलहौज़ी के पास इस मूल्यवान और सुन्दर हीरे को देख-कर विजेताओं के जी में इसे प्राप्त करने की लालसा उत्पन्न हो गई होगी। चार पाँच वर्ष बाद फिर युद्ध छिड़ा और इस बार भी अँग्रेजों की जीत रही और पंजाब तथा पंजाब के स्वामी के साथ-साथ यह हीरा भी अँग्रेजों के हाथ लगा। कुछ समय तक यह बहुमूल्य रत्न उपरोक्त युद्ध के विजयी योद्धा लार्ड लारेन्स की जेब में पड़ा रहा। वहाँ से यह महारानी विक्टोरिया के पास लन्दन को रवाना कर दिया गया। तभी से यह भारत भूमि से दूर सात समुद्र पार लन्दन में है।

यद्यपि अपने स्वामियों के प्रति इसने कभी सौजन्यता-उपकारिता का प्रदर्शन नहीं किया पर फिर भी इसकी लोकप्रियता में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं होने पाई। सन १८५१ को लन्दन की महान प्रदर्शिनी में योरुप के देशों की एक बड़ी जन-संख्या इसे देखने को लन्दन में एकत्रित हुई थी।

जब इतनी बेवफाई पर, उसे दिल प्यार करता है।
तो यारब वह सितमगर, बावफा होता तो क्या होता ॥

लन्दन पहुँच कर, सुनते हैं, इसमें आवश्यक काट-छाँट करके इसे संस्कृत किया गया। परन्तु यह कौन कह सकता है कि यहीं उसकी यात्रा भ्रमण सिलसिला का अन्त हो जायगा या आगे इस का रुख किधर को होगा यह भविष्य के गर्भ में है।

चीन की दीवार

यह अनोखी दीवार चीन देश के चारों ओर, देश को शत्रुओं के आक्रमण से बचाने के लिये बनाई गई थी। ८०० कोस तक बराबर २० गज ऊँची चली गई है। चौड़ी इतनी है कि छः सवार

साथ-साथ घोड़े दौड़ा सकते हैं। सौ सौ गज की दूरी पर मीनारें बनाई गई हैं, जहाँ पर पूर्व समय में तोपें रहती थीं। समुद्र के मध्य से यह आरम्भ होती है। पत्थरों से भरे हुए सैकड़ों जहाज़ समुद्र में डाले गये थे। प्रसिद्ध है कि आधा संसार इसके बनाने में लगा और इसीलिये ५ वर्षों में पूर्ण हुई। एक अङ्गरेज ने पता लगाया है कि इस दीवार में इतनी सामिग्री व्यय हुई कि समस्त इँगलिस्तान की बड़ी-बड़ी अट्टालिकाओं की सामिग्री इसकी अपेक्षा कम है। ८०० कोस तक, जहाँ यह दीवार है वन, गिरवर इत्यादि दिखाई पड़ते हैं, बस्ती का नाम नहीं। ऊँचे-ऊँचे गिरवरों, सरिताओं, बनों, सब को पार करती, काटती, ऊपर चढ़ती, नीचे उतरती यह अद्‌भुत दीवार सचमुच मनुष्य की शक्ति का शताब्दियों से परिचय दे रही है। इसका एक मीनार जो चौपड़ का मीनार कहलाता है, अधिक प्रसिद्ध है, इसको बने ६३०० वर्ष बीत चुके। कितने परिवर्त्तन इसकी आँखों ने देखे और कितने भविष्य में देखेगी इसका अनुमान लगाना कठिन है।

लकड़ियों से भोज्य पदार्थ

आज संसार में ऐसे कुछ ही भाग्यशाली देश हैं जहाँ खाद्यान्न के अभाव के कारण हाहाकार न मचा हो। इस कठिन समस्या को सुलझाने के लिये हमारे वैज्ञानिकों ने भरपूर सहयोग दिया है! सल्जवर्ग लैबोरेटरी में बेकार लकड़ियों से सुस्वादु तथा शक्तिशाली भोज्य पदार्थ तैयार किये जा रहे हैं, जो डाक्टर फ्रेडरिक वर्जियस नामक एक प्रख्यात जर्मन वैज्ञानिक की खोज का प्रति फल है। मित्र राष्ट्रों की प्रचण्ड बमवर्षा से जर्मन उद्योग-धन्धों के नष्ट भ्रष्ट किये जाने के पूर्व वहाँ के दो कारखानों में बेकार लकड़ियों तथा उसके बुरादों से प्रति मास ८०० टन भोज्य पदार्थ तैयार किये जा रहे थे जो १७ लाख व्यक्तियों के लिये

पर्याप्त थे। आपका कहना है कि यदि ऐसे ही १०० कारखाने और खोल दिये जायँ तो सारे यूरोप की खाद्य समस्या अनायास ही हल हो जायगी।

हीरे के विविध उपयोग

अधिकांश लोग हीरे को एक बहुमूल्य रत्न के रूप में ही जानते हैं, जो केवल राजा-रईसों के पहनने की चीज हो सकती है। पर वास्तव में हीरे का उपयोग संसार में केवल जवाहर के रूप में ही नहीं होता, बल्कि बहुत से उद्योग-धंधों में भी उसे काम में लाया जाता है।

हीरा क्या है? हीरा उसी मूलतत्व–कार्बन–का एक विकसित रूप है जो साधारण से काले कोयले में वर्तमान रहता है। खान से निकलते ही हीरा अँगूठी में जड़े जाने योग्य नहीं होता। खान से निकलने के बाद उसे विविध यांत्रिक प्रक्रियाओं द्वारा कई बार रूप बदलने पड़ते हैं, तब जाकर वह असली रत्न बनता है। हीरे के दाम इस बात पर निर्भर करते हैं कि उसका शुद्धिकरण किस प्रकार के उपायों द्वारा हुआ है। कच्चे हीरे में चमक नहीं होती। वह एक ऐसे साधारण शीशे के टुकड़े की तरह दिखाई देता है जिसमें न आब होती है न चमक। खान से निकाले जाने के बाद उसे बड़ी सफाई से काटा जाता है। और इसे काटे जाने पर उसकी चमक बहुत कुछ निर्भर करती है। जितनी ही सफाई से हीरा काटा जायगा, उतने ही अधिक उस पर पड़ने वाले प्रकाश की किरणें टेढ़े रूप में प्रतिबिम्बित होंगी। चूँकि उसके सभी कटे हुए कोनों से जो प्रकाश भीतर जायगा, वह किरणों के टेढ़े होने के कारण भीतर ही भीतर प्रतिबिम्बित होगा, इसलिये उसकी चमक भी आँखों में चकाचौंध पैदा कर देने वाली होगी। इसके विपरीत, यदि उस हीरे के ही आकार के एक

साधारण से टुकड़े को ठीक उसी तरह काटा जाय तो उसमें वह चमक पैदा नहीं होगी। उस पर पड़ने वाला प्रकाश सीधे बाहर निकल जायगा, क्योंकि वह प्रकाश की किरणों को ठीक रूप में प्रतिबिम्बित करने में असमर्थ है।

कुछ हीरे ऐसे भी होते हैं जो अँधेरे में भी चमकते हैं। इसका कारण बिलकुल दूसरा है। इस प्रकार के हीरों के भीतर इतने अधिक विद्युत-कण होते हैं जो उसके भीतर नहीं समा पाते और बाहर निकलने की चेष्टा करते रहते हैं। उनकी इस क्रिया के फलस्वरूप उनमें निरन्तर प्रकाश निकलता रहता है।

हीरों के छोटे-छोटे टुकड़े घड़ियों, बिजली के मीटरों तथा इसी प्रकार के दूसरे यन्त्रों की गति को नियमित करने के काम में लाये जाते हैं। शीशे और पत्थर को काटने के लिये भी हीरा काम में लाया जाता है। हीरा स्वयं हीरे को भी काटता है। संसार में जितने भी धातु आज तक पाये गये हैं हीरा उन सब से कड़ा होता है, इसलिये उद्योग-धंधों में वह बड़े काम का सिद्ध होता है।

बालों से भी बारीक तारों को खींचने के काम में लाया जाता है। यह तार बिजली की बत्तियों और रेडियो के उपयोग में लाये जाते हैं। हीरे का एक साँचा बनाया जाता है जिसके बीच में एक बहुत ही सूक्ष्म छिद्र रहता है, उस छिद्र से बारीक से बारीक तार खींचे जा सकते हैं।

हिमालय के महापुरुष

हिमालय प्रदेश सच्चे योगी महात्माओं का चिरकाल से खास केन्द्र है। इस पुण्य प्रान्त में जैसे महान् योगी हो चुके हैं वैसे अन्य प्रान्तों में बहुत ही कम हुए हैं। [illegible]

महात्माओं के वर्तमान होने की बात सुनी जाती है। सुना जाता है कि तिब्बत का ज्ञानगंज योगाश्रम योगियों का एक महान् शिक्षालय है, जिसमें सैकड़ों महान योगी अब भी वर्तमान हैं। हिमालय में कई योगियों के दर्शन भाग्यवान पुरुषों को हो जाते हैं। स्वामी माधवतीर्थ जो दण्डी गत वर्ष वहाँ गये थे। उन्हें एक महात्मा मिले। आपने उस घटना को काशी के 'पन्था' नामक बंगला-पत्र में लिखा है, उसका मर्म इस प्रकार है—

"इस शरीर ने गौरीगिरि की परिक्रमा करने के लिये अक्षय तृतीया के दिन काठगोदाम से यात्रा की। शैल पुत्री तीर्थ का दर्शन करते समय वहाँ भी कतिपय महापुरुषों के दर्शन हुए।

यह शरीर गौरी तीर्थ में जिस पर्वत पर गया, वह हिमाचल प्रदेश का एक उत्कृष्ट स्थान है। स्वयं गौरी ने इस पर्वत पर शिव की आराधना की थी। जगत् में ऐसा कोई कवि या कलाविद् पैदा नहीं हुआ, जो हिमाचल के सौन्दर्य को व्यक्त कर सके। केवल यह सौन्दर्य ही तीर्थ यात्रियों की पथ की सारी क्लान्ति दूर कर देता है।

और भी दो एक पहाड़ी गौरी के दर्शन के लिये जा रहे थे। उनसे मुलाकात होने पर इस शरीर ने पूछा कि यहाँ कोई साधु-महात्मा हैं कि नहीं? अगर हैं तो कहाँ पर? उन लोगों ने उँगली का इशारा करके तीन-चार स्थान दिखा दिये। वे सब प्रायः ३-४ कोस की दूरी पर थे। फिर दिखा कर उन्होंने कहा उस पहाड़ पर कभी-कभी एक महापुरुष आकर रहते हैं। जो स्थान समीप में दिखाया था, वह भी बहुत ऊँचा था, परन्तु महापुरुष के दर्शन की लालसा अत्यन्त बलवती होने के कारण इस शरीर ने उस पहाड़ पर चढ़ना शुरू कर दिया। वहाँ पहुँचने पर महात्मा के दर्शन मात्र से ऐसा मालूम हुआ कि आप कोई महापुरुष हैं, दिव्य दर्शन हैं।

एक छोटी सी गुफा में वे महात्मा पद्मासन लगा कर बैठे थे। नेत्र बन्द थे, श्वास भी शायद बन्द था। सामने पाँच-छै हाथ की दूरी पर एक सूखा हुआ वृक्ष पृथ्वी पर पड़ा था, उसमें आग लगा दी गई थी। इस शरीर की उपस्थिति की बात शायद महात्माजी को मालूम नहीं हुई। परन्तु झोला कम्बल रख कर नमो नारायण का उच्चारण करते ही उन्होंने नेत्र खोल कर इस शरीर को देखा और उसी क्षण पुनः नेत्र बन्द कर लिये।

उस समय मध्याह्न का समय प्रायः बीत चुका था। सूर्य देव पश्चिम आकाश में ढल चुके थे। प्रातः काल से पर्वत पर चढ़ते-चढ़ते शरीर भूख, प्यास से क्लान्त हो रहा था। पर्वत पर पहाड़ियों के घर हैं, परन्तु शरीर वहाँ जाने में अशक्त था। झोला, कम्बल वहीं रख कर, झरने में हाथ मुँह धोकर, अंजुली पानी पीते ही शरीर बहुत कुछ स्वस्थ हो गया। कम्बल बिछा कर गुफा के बाहर आसन लगा कर यह शरीर आराम करने लगा। महात्माजी के यहाँ भोजनादि का कोई बखेड़ा किसी समय नहीं होता, यह बात उनके सामान को, जो वहाँ था देखने से ही मालूम होती थी। अतएव सहज ही धारणा हो गई थी कि वे भोजन नहीं करते। दर्शन तो हुए, परन्तु दर्शन का आनन्द नहीं मिला, क्योंकि वे मौन थे।

अन्य दिनों इस शरीर के झोले में चने का सत्तू और गुड़ रहता था। दैव संयोग से यह भी आज नहीं था, अतएव यह निश्चित था कि आज भोजनादि की कोई व्यवस्था नहीं हो सकती। सोचा सन्ध्या के पहले बस्ती में जाने पर जो होगा सो होगा नारायण का स्मरण करते हुए समीप बैठ कर महात्मा के दर्शन करने में समय बिताने लगा, उस समय शरीर भूख के मारे व्याकुल था।

जहाँ पर यह शरीर था वहाँ से बहुत दूरी तक दिखाई देता था। घास चरती हुई गाय जिस तरह स्वाभाविक ढङ्ग से घूमती हैं, उसी तरह घूमती फिरती एक सफेद गाय महात्मा की गुफा के द्वार पर आकर पीछे के दोनों पैरों को थोड़ा फैला कर खड़ी हो गई। उस समय महात्मा ने नेत्र खोल कर मुस्कराते हुए गाय की ओर देखा। गाय के एक थन से खूब बारीक धार से दूध झरने लगा। यह शरीर जैसे यन्त्र द्वारा चालित हो, इस तरह अपने आसन से उठ खड़ा हुआ। महात्मा के आसन के पास काठ का एक बड़ा सा पात्र उलट कर रक्खा था। उसे उठा कर उस शरीर ने गाय के थन के नीचे रख दिया, उस समय गाय के चारों थनों से दूध अबाध गति से उस पात्र में झरने लगा। प्रायः ४-५ सेर दूध होगा, महात्मा के सामने वह रक्खा गया, इस शरीर के साथ जो जल पात्र था वह भी थन के नीचे रक्खा गया। तब महापुरुष ने माई! माई!! कह कर दो बार उच्च-स्वर से पुकारा। उसके क्षण भर बाद हवा का शब्द सुनाई पड़ा, मानों दूर से आँधी आती हो। यह शब्द कहाँ से आ रहा है, कुछ समय में नहीं आया। क्षण भर बाद मालूम हुआ कि महापुरुष की नासिका श्वास से बाहर निकल रहा है। देखते देखते उनका स्थूल शरीर अत्यन्त कृश हो गया। इसके बाद उन्होंने दूध का पात्र मुँह में लगाया और सारा दूध चढ़ा गये। इस बीच दूसरा पात्र भी भर गया और वे उसे भी खाली कर गये। पुनः उनका पात्र स्तन के नीचे रक्खा गया और दूध से भर आने पर वे उसे भी पी गये। इस प्रकार दूध के तीन पात्र वे पी गये। अब दोनों पात्रों का दूध पीने के लिये महात्माजी ने इस देह को इशारा किया। आदेश होते ही कमंडल का दूध पी लिया गया, महापुरुष के पात्र का भी कुछ दूध पिया गया। पेट में और स्थान न रहा। अपूर्व स्वाद था। दूध के ऐसे माधुर्य रस का अनुभव और कभ

नहीं हुआ था। असीम तृप्ति हुई। महात्मा के दर्शन से जो तृप्ति आज हुई, उससे शरीर धारण करना पूर्ण सार्थक हो गया। उन के मुख से निकली हुई कोई बात सुनने को नहीं मिली। बहुत देर तक इस आशा में शरीर बैठा रहा। संध्या से पहले वे आसन से उठ कर सामने की ओर गये जहाँ पर यह शरीर था वहाँ से सामने तक अच्छी तरह दिखाई पड़ता था। क्षणों में वे अदृश्य हो गये। किसी ओर दिखाई न पड़े। बहुत खोजने पर भी फिर दर्शन नहीं हुए। संध्या समय बस्ती में जाकर इस शरीर ने आश्रय लिया। दो तीन दिन और दर्शन की चेष्टा की गई। पर्वतीय लोगों ने कहा पाँच-सात में वे महापुरुष वहाँ आते हैं। कभी-कभी दूसरे पहाड़ पर उनका आसन पड़ता है। जो दर्शन करता है, उसका जीवन धन्य है। नारायण का स्मरण करते हुए बहुत खोज की गई, परन्तु फिर दर्शन नहीं हुए।

अमेरिका में आर्य सभ्यता के चिह्न

स्पेन, जर्मनी, अमेरिका और ब्रिटेन के [illegible] इस विषय पर बहुत बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे हैं, [illegible] न्यूयार्क और अन्य राजधानियों के पुस्तका[illegible] मौजूद हैं। उन ग्रन्थों से सूर्य[illegible] प्रभाव और प्रताप का पता लगता है जो [illegible] फैला था। आज भी अमेरिका भर में ऐसे मन्दिर मिलते हैं जिनमें सूर्य की पूजा होती है।

धर्म और संस्कृति सम्बन्धी लगभग २०० प्रमाणों में से मैं यहाँ कुछ बातें ऐसी देता हूँ जिनसे अमेरिकन इण्डियनों के रीतिरिवाजों और कृत्यों की समानता वैदिक प्रथाओं से मिलती जुलती हुई मालूम होती है।

सोम यज्ञ

आदिम अमेरिकन या इण्डियन लोग एक ईश्वर में विश्वास करते हैं और वेदों के देवताओं को भी वे मानते हैं। उनके यहाँ अब भी वैदिक प्रथाएँ मौजूद हैं। उत्तरी अमेरिका के इण्डियन लोग 'सोम यज्ञ' करते हैं। वे सूर्य को अपना सब से बड़ा देवता मानते हैं और उनकी सूर्य पूजा प्रायः वैसी ही है जैसी कि हिन्दू लोग करते हैं।

महाभारत और रामायण

महाभारत और रामायण की कथाओं का महात्म्य अब भी उनमें मौजूद है, और वे श्रीरामचन्द्रजी सम्बन्धी कई तरह के त्यौहार मनाते हैं। मैं स्वयं मैक्सिको गया था, और वहाँ मैंने रामलीला के दृश्यों में राम और रावण की सेनाओं की लड़ाई देखी थी और मध्य अमेरिका की दूकानों में मैंने श्री हनुमान के प्रतीकों को बिकते हुए देखा था।

चार युग

मैक्सिको के राष्ट्रीय म्यूजियम में एक बहुत बड़ा पञ्चाङ्ग है, जिसमें हिन्दुओं के चार युगों का वर्णन है। हिन्दू लोग चार युगों की कथाओं को जिस तरह मानते हैं उसी तरह उनकी जानकारी प्राचीन अमेरिकनों को थी, और उनका ज्योतिष शास्त्र हमारे ज्योतिष शास्त्र से मिलता जुलता है।

दाह-कर्म और सती-प्रथा

मध्य और दक्षिण अमेरिका में पहिले गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी, और उस प्रणाली की छाप आज भी वहाँ के विद्यालयों में पाई जाती है। हिन्दू बच्चे के जन्म पर जो रस्में

यहाँ होती हैं वही वहाँ भी होती थीं। बच्चे के पैदा होने के बाद वहाँ भी चार दिन तक बराबर हवन होते थे। वहाँ विवाह के समय की रस्में, मृतक का दाह-कर्म और स्त्रियों की सती-प्रथा सब प्राचीन आर्यों की प्रथाओं से मिलती थीं।

दक्षिण अमेरिका के अन्तिम सूर्यवंशी नरेशों की मृत्यु के बाद उनकी समस्त रानियाँ सती हो गई थीं। मैक्सिको के अन्तिम राजा की रानी भी सती हुई थी।

आर्य पहिले आये

मैक्सिको की सरकार द्वारा प्रकाशित मैक्सिको के इतिहास में लिखा है—

"जो लोग पहिले इस महाद्वीप (जो बाद में अमेरिका कहा गया) में आये वे ऐसे मनुष्य थे जिन्हें भारत की ओर से आने वाली महान् तुरंग ने पूर्व की ओर बहा दिया था। वही लोग आकर मैक्सिको में बसे और इन्हीं की सभ्यता और संस्कृति का प्रसार हुआ।"

मैक्सिको के प्रोफेसर रेमन मेना लिखते हैं—

"यहाँ के माया जाति के मनुष्य भारतीय मनुष्यों से मिलते जुलते हैं। इनके दृढ़ धार्मिक विश्वास, इनके सिरों का पहनावा, ऊँची जमीन पर इनकी घरों के बनाने की पद्धति और अन्य रहन-सहन की प्रणालियाँ सब भारतवासियों से मिलती हैं।"

पाण्डवों का वर्ष

"हिन्दू व्यापारी पाण्डवों के १८ महीनों का वर्ष मैक्सिको में लाये और व्यापार करने की पद्धति तथा बाजार लगाने की प्रणाली भी उन्हीं हिन्दू व्यापारियों ने यहाँ प्रचलित की।"

संसार के बहुमूल्य हीरा

सोने के मूल्य से २० हजार गुने कीमती हीरे किसे प्रिय नहीं लगते ? संसार में कितने ही हीरे कम क्या, बहुत कम निकलते हैं। २० कैरेट (१ कैरेट बराबर २ रत्ती) वजन के संसार में केवल ३०० हीरे हैं और १०० कैरेट वजन से ऊपर के तो सिर्फ १ दर्जन ही। इनमें से कुछ हीरों का इतिहास तो खून, षडयंत्र और दुर्भाग्य से ओतप्रोत है। पन्ना, मोती, लाल, जवाहर आदि सभी कीमती पत्थरों में हीरा सब से कीमती है। हीरा जब तक खराद पर नहीं चढ़ता उसमें चमक नहीं आती। पहले जमाने में भारत में हीरे बहुत निकलते थे, आजकल दक्षिण अफ्रीका में अधिक निकलते हैं। आस्ट्रेलिया और ब्रेजिल में भी हीरों की कितनी ही खानें हैं।

एक दर्जन बड़े हीरे

१०० कैरेट वजन से ऊपर के प्रख्यात हीरे एक दर्जन से अधिक नहीं हैं। उनके नाम हैं:—कुलीनन सक्सेलसियर, ओरलाफ, निजाम, जोंकर, रीजेण्ट, फ्लोरेन्टाइन, कोलेंजो, तुभानी, स्टार आफ दी साउथ और कोहेनूर। इनका वजन १०६ कैरेट से लेकर ५१६ कैरेट तक है। ग्रेट मुगल नाम का ७८८ कैरेट का हीरा भी बड़ा प्रसिद्ध हीरा था, पर अब वह लापता है।

कुलीनन हीरे

वे दो हीरे आजकल सम्राट के ताज की शोभा बढ़ा रहे हैं। ट्रांसवाल में सन् १९०५ में टामस कुलीनन को खेत में वे हीरे मिले। जनरल बोथा और स्मटस ने ट्रांसवाल की ओर से इन्हें खरीद कर खराद पर चढ़वाया और औपनिवेशिक स्वराज्य देने के समय एडवर्ड को भेंट किया।

ग्रेट मुगल हीरा

कहते हैं कि ४००० वर्ष पूर्व महाभारत के समय यह हीरा कर्ण के पास था। बाद में सन् १३०४ के मालवा के अलाउद्दीन ने इसे हथियाया। १५२६ ई० पानीपत के युद्ध के बाद बाबर के पास यही हीरा पहुँचा। फिर १७३९ में नादिरशाह इसे अपने साथ फ़ारस ले गया तब से यह गायब है।

एक्सेलसियर हीरा

एक्सेलसियर हीरा सन् १८९३ में गागेर्सफोन्टीन में मिला था। उस समय इसका वजन ९७२ कैरेट था। पर बाद में छँट-छँटाकर केवल २३९ कैरेट रह गया। यह एक सही ५ बटे ८ इञ्च लम्बा एक सही ३ बटे ८ इञ्च चौड़ा और १ इञ्च ऊँचा है। सन् १९०० में पेरिस की प्रदर्शिनी में इसका प्रदर्शन हुआ। बाद में स्वर्गीय सा दोराब ताता ने लगभग २५,५०,०००) में इसे खरीद लिया।

मूर्ति से निकला हीरा

एक सिपाही ने दक्षिण भारत के एक मन्दिर की मूर्ति से हीरा चुरा कर अपनी घायल टाँग के भीतर छिपा लिया और एक जहाज के स्वामी के हाथ बेच दिया। वह उसे आल्सटाईन ले गया जहाँ काउन्ट ओरलाफ ने उसे खरीद लिया। बाद में उन्होंने रूस की सम्राज्ञी कैथराइन के हाथों उसे बेच दिया। अब भी यह ओर लाफ हीरा सोवियट सरकार के पास है और उसका मूल्य ६०,००,००० के लगभग आँका जाता है।

निजाम हीरा

निजाम के पास एक बहुमूल्य हीरा है। पहले इसका नाम

था विक्टोरिया इम्पीरियल हीरा। निजाम ने लगभग ५२,५०,०००) में इसे खरीदकर अपने पास रख छोड़ा है।

सन् १६६३ में किम्बरलो (दक्षिण अफ्रीका) के पास ग्लेन्डस्न फान्टान में जैकोबस जोकर नामक एक गरीब किसान को एक हीरा मिला। उस समय इसका वजन ७२६ कैरेट था, न्यूयार्क के श्री० हैरी विन्स्टेन ने इसे लगभग २२,५०,०००) में खरीद लिया। कट-छट कर यह १७० कैरेट रह गया है और आजकल इसका मूल्य ६२,५०,०००) आँका जाता है।

जार की रानी

अन्तिम जार की रानी जर्मन वंश की थी। उसे अपने जीवन में अपने मूल देश तथा उस देश में जिसे विवाह के बाद अपनाना पड़ा था, घोर संग्राम होते देखना पड़ा। इस युद्ध में उसका सम्पूर्ण कौटुम्बिक जीवन ही नष्ट हो गया। उसके इकलौते पुत्र जोसिफ ने लिखा है कि जब रूसियों की हार होती थी, पिताजी रोते थे और जब जर्मनी की पराजय होती थी, तो माता बहुत रोती थी। मैं माता और पिता दोनों के साथ रोता था।

रानी को युद्ध में प्रायः अन्त तक रोना पड़ा। यदि मृत्यु सामने आती तो शायद वह प्रसन्नता से उसका स्वागत करने को तैयार हो जाती। फिर उसका लड़का एक लम्बे अर्से तक रोग से पीड़ित हो गया। अपने लड़के को मृत्यु से बचाने के लिए माता सब कुछ कर सकती है। फलतः जार की रानी रासपुटिन के प्रभाव में आ गई। वह एक चालाक मठाधीश था। इसमें कोई भी सन्देह नहीं कि रूस के सिंहासन का जो उत्तराधिकारी था, उस पर उसका रहस्यपूर्ण प्रभाव था। लड़के के स्वास्थ्य में

उसने कुछ सुधार भी किया। उसकी सहायता का क्या रूप था, यह ठीक से मालूम नहीं, किन्तु सम्भव हो सकता है कि रास-पुटिन का प्रभाव अधिकांशतः मनोवैज्ञानिक था। कहा जाता है कि जब जोसिफ के लिए उसने प्रार्थना की तो युवक की अवस्था में स्पष्ट सुधार हो गया। अपनी इस शक्ति के प्रभाव से वह शाही परिवार पर गालिब हो गया।

जीव जन्तुओं को वश में करने वाले जादूगर

इस बात के अनेक निश्चित् प्रमाण पाये जाते हैं कि जीव-जन्तुओं को मंत्रबल से अथवा अपने क्षमताशाली व्यक्तित्व के प्रभाव से वश में करने वाले व्यक्ति प्राचीन काल से संसार में वर्तमान रहे हैं। साँपों को अपने वश में करने वाले मदारियों से भारत का बच्चा-बच्चा परिचित है। चूहों को मन्त्रबल से घर के बाहर निकालने में समर्थ जादूगरों के किस्से विश्व-कथा-साहित्य में बहुत प्रचलित हैं। अनुभावियों का कहना है कि इस समय भी ऐसे व्यक्तियों का अभाव नहीं है जो चूहों को अपने व्यक्तित्व की मोहिनी से अपने वश में करने में समर्थ हैं।

वीणावादन का चमत्कार

फ्रैंक हाइक्स नामक एक लेखक ने अपनी आँखों देखी घटनाओं का उल्लेख करते हुए लिखा है कि कीन्सलैण्ड में एक ऐसा धार्मिक व्यक्ति है जिसमें पशुओं को अपने वश में करने की आश्चर्यजनक क्षमता पायी जाती है। फ्रैंक हाइक्स का कहना है कि एक बार यह व्यक्ति एक झील के निकट बैठ गया और वहाँ अपनी वीणा में उसने एक विचित्र राग छेड़ा। उस जादू भरे

राग को सुन कर झील से छः दरियाई घोड़े बाहर निकल आये और उसके पास जाकर खड़े हो गये। उसके बाद उसी व्यक्ति ने वीणा में एक दूसरी तान छेड़ी, जिसको सुनते ही वे छहों दरियाई घोड़े फिर पानी में चले गये।

इसका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति वीणा में उन्हीं रागों को ठीक उसी तरह बजाने से दरियाई घोड़ों को अपने पास बुला सकता है, अथवा वापस भेज सकता है। बहुत से लोगों ने उस वीणावादक का अनुकरण करके दरियाई घोड़ों को अपने पास बुलाने का प्रयत्न किया, पर उन्हें तनिक भी सफलता नहीं मिली। इससे यह पता चलता है कि किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व में ही ऐसी विशेषता है जो जीव-जन्तुओं को आश्चर्यजनक रूप में प्रभावित करती है।

मछलियों पर सम्मोहन का प्रभाव

हाइव्स ने लिखा है कि वह एक ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो केवल एक छड़ी को पानी में घुमाने से मछलियों को अपने पास तक बुला लेता था। मछलियाँ उसकी जादू की छड़ी के प्रभाव से अत्यन्त निर्भीकता से उसके निकट आ पहुँचती थीं। वह उन्हें अपने हाथ से पकड़ लेता था, और फिर भी मछलियाँ तनिक भी नहीं घबराती थीं। पर जब कोई दूसरा आदमी उसी छड़ी को ठीक उसी तरह से पानी में घुमाता था तो उसका कोई भी प्रभाव मछलियों पर नहीं पड़ता था, बल्कि जो मछलियाँ आस-पास में होती थीं वे भाग कर दूर चली जाती थीं। इस दृष्टान्त से भी यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जीव-जन्तुओं पर 'जादू' की किसी विशेष बाहरी क्रिया का प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि 'जादूगर' के व्यक्तित्व के भीतर ही कोई ऐसा रहस्य निहित रहता है, जो उन्हें प्रभावित करता है।

कौन्सलैण्ड में फ्रैंक हाइन्स स्वयं एक जादूगरनी बुढ़िया के प्राणघाती जादू के शिकार बने थे जिससे उन्हें इस बात पर पूर्ण विश्वास हो गया कि वास्तव में जीव-जन्तुओं को किसी गुप्त सम्मोहनी शक्ति द्वारा वश में किया जा सकता है—केवल वश में ही नहीं किया जा सकता, बल्कि उन्हें विविध प्रकार के कार्यों के लिए आदेश भी दिया जा सकता है, जिसका पालन वे मनुष्य से भी अधिक तत्परता तथा योग्यता से करते हैं।

तब फ्रैंक हाइन्स का नयी नियुक्ति हुई थी। यह पिछले महा-युद्ध के समय की बात है। उनके एक 'नेटिव' नौकर को अँग्रेजों ने इसलिए बन्दी बना लिया था कि वे लोग जर्मनों के विरुद्ध अपनी लड़ाई के सिलसिले में उसे अपना दुभाषिया बनाना चाहते थे। जिस दिन लड़ाई के क्षेत्र से यह समाचार पहुँचा, उसके दूसरे ही दिन प्रातःकाल बाहर निकलते ही हाइन्स ने देखा कि एक भयंकर आकृति वाली बुढ़िया उसके दरवाजे पर खड़ी है। उसके कपड़े फटे हुए थे। गले में बहुत से तावीज बँधे हुए थे और उसके हाथों में साँप के आकार की चूड़ियाँ थीं। उसके हाथ में साँप के आकार की एक छड़ी थी। हाइन्स को देखते ही वह उनके आगे एक अनोखे ढंग से नाचने लगी और नाचती हुई मंत्र की तरह कुछ बड़बड़ाने लगी। नाचते-नाचते जब वह थक गई तो उसने अपनी छड़ी को फिर एक बार जोर से घुमा कर हाइन्स की ओर दे फेंका। छड़ी हाइन्स की छाती पर लगी, और लगते ही लौट कर फिर उसी बुढ़िया के पास वापस चली गई। छड़ी उठा कर बुढ़िया बिना कुछ बोले चली गई।

हाइन्स की समझ में तनिक भी यह बात नहीं आई कि मामला क्या है। उन्होंने जब अपने 'नेटिव' नौकरों को यह आज्ञा दी कि वे बुढ़िया को गुस्ताखी के कारण उसे गिरफ्तार

कर लें तो उनमें से किसी को भी ऐसा करने का साहस नहीं हुआ। बाद में हाइब्स को मालूम हुआ कि वह बुढ़िया उसी 'नेटिव' की मां है जिसे अँग्रेजों ने बन्दी बनाया है। उन्हें यह भी बताया गया कि वह 'जादूगरनी' है और उस प्रदेश के सभी साँप पूर्णतः उसके वश में हैं।

साँपों की विचित्र माया

हाइब्स ने 'नेटिव' की इस बात को दन्तकथा मान कर उसे हँसी में उड़ा दिया। पर दूसरे ही दिन जब वह तीसरे पहर अपने कमरे में गये और तनिक विश्राम के इरादे से पलँग पर लेटने की तैयारी करने लगे तो सहसा उन्होंने घबरा कर देखा कि उनके तकिये के नीचे एक काला साँप कुण्डली मारे पड़ा है। उनके नौकर ने उसे मारा। वह प्रायः साढ़े पाँच फीट लम्बा था।

इस घटना के पहले फ्रैंक हाइब्स ने कभी अपने मकान या आस-पास में कभी कोई साँप नहीं देखा था। पर तब से तरह-तरह के साँप उनके घर, उनके आफिस में, उनके रास्ते में, जहाँ-तहाँ दिखाई देने लगे, जैसे उन्हें घेरना चाहते हों। वे सब जहरीले साँप थे। एक साँप तो उनके जूते के भीतर जा छिपा था, एक उनके चमड़े के बेग के भीतर और दो उनके आफिस की कुर्सी पर पाये गये थे। तीन दिन के भीतर उन्होंने और उनके आदमियों ने १५ जहरीले साँप मारे।

चौथे दिन जब वह घबराई हुई मानसिक दशा में आफिस में काम कर रहे थे तो सहसा ऊपर छत पर से एक साँप गिरा, जो उनके कंधे पर गिरने से बाल-बाल बच गया। यदि वह उनके कंधे पर गिरा होता तो उनकी मृत्यु निश्चित् थी।

प्रतिहिंसा

फ्रेंक हाइव्स घबरा कर उसी दिन उस स्थान से किसी दूसरे स्थान में अपनी बदली करा के चले गये। पर साँपों ने वहाँ भी उनका पीछा न छोड़ा और जिस नए मकान में जाकर वह ठहरने वाले थे वहाँ पहले ही से दो साँप मौजूद थे। दूसरे दिन रात में उनकी मसहरी के ऊपर एक साँप गिरा। उससे भी वे आश्चर्यजनक रूप से बच गए। इसी प्रकार और भी बहुत से साँप उनके पीछे लगे रहे। सम्भवतः बुढ़िया डायन यह नहीं चाहती थी कि साँप उनके प्राण ले लें, वह केवल उन्हें परेशान करना चाहती थी। बाद में पता चला कि इस परेशानी का कारण यह था कि वह बुढ़िया अपने बेटे के बन्दी बनाये जाने वाली घटना से बहुत चिढ़ी हुई है और उस बात का बदला वह अँग्रेजों के 'प्रतिनिधि' हाइव्स से चुकाना चाहती थी।

एक दिन एक बहुत बड़ा साँप—प्रायः छोटे अजगर के बराबर—उनके पाँव के पास आ खड़ा हुआ। उसे गोली से मारने की चेष्टा में हाइव्स के पाँव में गोली लग गई। वह अस्पताल पहुँचाये गये।

नकली दाँतों का जादू

बहुत तंग आकर हाइव्स ने अन्त में उस जादूगरनी बुढ़िया को बुला भेजा। बुढ़िया जब आई तो हाइव्स ने पहले उसे बहुत समझाया, पर जब उन्होंने देखा कि उनकी बातों का कोई प्रभाव उस पर नहीं पड़ रहा है तो उन्होंने एक दूसरे ढंग से काम लिया। उन्होंने सहसा अपने नकली दाँतों का 'सेट' अपने मुँह से निकाल कर उस बुढ़िया को दिखाया और उसको डराते हुए कहा कि यदि वह भविष्य में उनके खिलाफ किसी प्रकार की

'डायन-विद्या' को काम में लावेगी तो वे दाँत सब समय उसका पीछा करते रहेंगे। बुढ़िया को पता नहीं था कि किसी मनुष्य के नकली दाँत हो सकते है। वह सचमुच घबरा कर भागी, और तब से फिर कोई साँप हाइव्स के पास न फटका। हाइव्स ने 'नेटिवों' को डराने का यह तरीका किसी एक यात्री की पुस्तक में पढ़ा था।

भारत का जहाजी बेड़ा

किसी समय संसार में सब से शक्तिशाली था

किसी देश की समृद्धि और शक्ति प्रधानतः उसके व्यापार पर निर्भर करती है और व्यापार के लिये अपना जहाजी बेड़ा आवश्यक है। इङ्गलैंड और अमेरिका आज सारे संसार में सब से अधिक समृद्धिशाली और शक्तिशाली देश है। इसका बहुत बड़ा कारण उनकी जहाजी ताकत है, जिससे संसार की सभी बड़ी-बड़ी मंडियों में उनका माल पहुँचता है। प्राचीन समय में भारतवर्ष भी एक समृद्धिशाली और शक्तिशाली देश था। बाहरी देशों से हमारा प्रचुर व्यापार होता था। हमारे पास विशाल जहाजी बेड़ा था। हमारे नाविक और व्यापारी पश्चिम में मिस्र और यूनान तक तथा पूर्व में चीन तक पहुँचते थे। इसका फल यह था कि हमारा। देश सोने का देश कहलाता था। हमारे देशवासियों का जीवन सम्पन्न और सुखी था। पर पिछली एक शताब्दी से हमारा देश गरीबी और गुलामी की दोहरी मार सह रहा है। जब से ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हमारे देश में पैर रखा, हमारा व्यापार चौपट हो गया और धीरे-धीरे हमारे यहाँ जहाजों का बनना भी रोक दिया गया। अँग्रेजी जहाजों के व्यापारी भला यह कब चाहते कि हम लोग अपने यहाँ जहाज बना पावें और उनके मुनाफे की रकम में कमी हो।

ईसा से सात सौ वर्ष पूर्व

भारतवर्ष में जहाजों का बनना उस समय आरम्भ हो गया था, जिस समय और देशों ने जहाजों की छाया भी न देखी थी। ईसा से ७०० वर्ष पूर्व भारतवर्ष में जहाजों की अच्छी उन्नति हो चुकी थी। हमारे जहाज भारुकच्छ (आधुनिक भड़ोच) और सुरपरक (कोनकन में स्थित) से पश्चिम बाबुल तथा दक्षिण एवं पूर्व में सिंहल (सीलोन) तथा स्वर्णभूमि (बुरमा) तक जाते-आते थे। कई जगह उल्लेख आया है कि एक-एक जहाज पर ५०० से लेकर ७०० व्यापारियों तक के बैठने की जगह होती थी। मौर्य साम्राज्य की स्थापना के समय तक हमारा जहाजी व्यवसाय इतना बढ़ गया था कि देश की रक्षा के लिये नौसेना का एक अलग विभाग था। कहा जाता है कि अशोक ने पूर्वी सागर में डाकू जहाजों को पकड़ने के लिए विशेष प्रबन्ध किया था। अशोक के पुत्र महेन्द्र ने सिंहल द्वीप (सीलोन) की यात्रा जहाज पर की थी। चम्पा (आधुनिक भागलपुर) के उत्साही निवासियों ने दूर-दूर तक भारत का झण्डा फहराया था और इसी नाम का एक उपनिवेश एक सुदूर स्थित द्वीप में स्थापित किया था।

भारतीय जहाजरानी का स्वर्ण काल

ईसा के पूर्व २०० से लेकर ईसा के पश्चात् २०० तक का समय भारतीय जहाजरानी का स्वर्णकाल कहा जा सकता है। इस काल में हमने सुमात्रा और जावा तथा चीन के मार्ग में पड़ने वाले अन्य द्वीपों में अपने उपनिवेश स्थापित किये।

शतवाहन और तामिल राजाओं के पास विशाल जहाजी बेड़ा था। शतवाहन राजा यज्ञश्री शतकर्णी के सिक्कों पर दो मस्तूल वाले जहाजों का चित्र है। यह समुद्र पर उसका अधि-

कार घोषित करता है। इस काल में भी पश्चिम से कुछ जहाज यूरोप तक पहुँचे थे।

ईसवी सन् २४० से ५४० के बीच अर्थात् गुप्त साम्राज्यकाल में बहुत से साहसी व्यापारी पूर्व में बोर्नियो तक जा पहुँचे थे। इस काल में भी पूर्व में चीन तक और पश्चिम में रोम तक हमारे व्यापारिक सम्बन्ध थे। भारतीय जहाज यात्रियों को लेकर जाया करते थे। प्रसिद्ध चीनी यात्री फाह्यान चीन को एक भारतीय जहाज पर वापस लौटा था।

आठवीं शताब्दी में सुमात्रा की राजधानी श्रीविजय के शैलेन्द्र राजाओं ने एक स्तूप बनवाया। इस स्तूप पर भारतीय जहाजों के कई चित्र हैं। ग्यारहवीं शताब्दी के आरम्भ में तंजोर के चोल राजा राजेन्द्र समुद्र के मार्ग से बर्मा और श्रीविजय में अपनी सेना ले गए और उन पर अधिकार स्थापित किया। इसी काल में राजा भोज ने 'युक्ति कल्पतरु' नामक पुस्तक लिखी, जिसमें जहाज बनाने की युक्ति का ब्यौरा दिया है। इस पुस्तक से प्रगट होता है कि उस समय हमारे देश में २७ प्रकार के जहाज बनाये जाते थे और हमारे यहाँ बड़ा से बड़ा जहाज २,३०० टन तक का था। पुस्तक में यह उल्लेख मनोरंजक है कि जहाजों के बनाने में लकड़ी के तख्तों को लोहे की पत्ती से न जोड़ना चाहिए क्योंकि समुद्र में चुम्बक पहाड़ियाँ होती हैं जो जहाजों को अपनी ओर खींच कर उन्हें चूर-चूर कर डालती हैं।

इस प्रकार ईसा पूर्व ७०० से लेकर ई० १२०० अर्थात् लगभग २००० वर्ष तक भारतीय जहाजरानी की उन्नति होती रही। तेरहवीं शताब्दी में मारको पोलो ने भारतवर्ष की यात्रा की थी। उसने हमारे यहाँ के कुछ विशालकाय और सुन्दर जहाजों का वर्णन अपनी पुस्तक में लिखा है। उसने यहाँ एक विशालकाय

जहाज देखा था, जिसके साथ १० नौकायें बँधी थीं। जहाज में १४ कमरे थे और बैठने का अच्छा प्रबन्ध था। चौदहवीं शताब्दी में ओडोरिक ने एक राजपूत जहाज को काठियावाड़ से चीन जाते देखा था जिसका वजन १,००० टन था। उसमें ७०० यात्री थे। मुगलों और मराठों के शासन काल में भी हमारा अपना जहाजी बेड़ा था।

हमें यह याद रखना चाहिये कि सत्रहवीं शताब्दी तक यूरोपियन लोगों ने जो जहाज बनाये थे, उनका वजन साधारणतया २५० टन होता था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का जो पहिला जहाजी बेड़ा भारतवर्ष आया था, उसमें सब से बड़े जहाज 'हेक्टर' का वजन ६०० टन था। इसलिये यह आश्चर्य की बात नहीं है कि चौदहवीं शताब्दी का एक विदेशी यात्री लिखता है कि भारतीय जहाज पहाड़ की तरह हवा के पंख पर समुद्र में तैरते हैं। पुर्तगाली १५०० टन का एक जहाज भारतवर्ष लाये पर यहाँ आकर उन्होंने देखा कि उनका जहाज गोआ के बने जहाज से छोटा है।

हमारे जहाजों की मजबूती

हमारे जहाज प्रधानतया काठ के बनते थे और बड़े मजबूत होते थे। गुजरात के पश्चिमी तट पर तथा मालाबार में काठ बहुतायत से मिलता है। अँग्रेजी जहाज बलूत की लकड़ी के बनते थे और उतने मजबूत नहीं होते थे।

अठारहवीं शताब्दी में भावनगर में 'दरिया दौलत' नामक जहाज बना था। यह १७५० में तैयार हुआ था और १८३७ में भी—अर्थात् ८७ वर्ष बाद—जरा भी खराब नहीं हुआ था। उस समय इङ्गलैण्ड के जो जहाज बनते थे, वे हर १८ वें साल खराब जाते थे।

इङ्गलैण्ड में भी यह स्वीकार कर लिया था कि भारत के बने हुए जहाज अधिक मजबूत होते हैं। इसलिये लगभग १८४० तक ब्रिटिश नौसेना में इस्तैमाल होने वाले जहाज भारत में ही बनते रहे।

बिल्लियों का एक छत्र राज्य

फ्रेंच यात्री प्राण लेकर भाग गया

संसार में कुछ स्थान ऐसे भी हैं, जहाँ बिल्लियाँ ही बिल्लियाँ नजर आती हैं और जिन्हें बिल्लियों का देश कहा जाता है।

ऐसा एक स्थान भारतीय महासागर में मारिशस के उत्तर-पूर्व में २०० मील की दूरी पर एक द्वीप है। इस द्वीप में असंख्य बिल्लियाँ हैं। सभी प्रकार की शक्लों, कदों और रँगों की सैकड़ों बिल्लियाँ हैं।

इस द्वीप में बिल्लियों के कारण न तो पेड़-पौदे हैं और न चिड़ियाँ हैं।

संसार में इस तरह का केवल यही एक बिल्लियों का देश नहीं है। प्रशान्त महासागर में एक और ऐसा द्वीप है जो बिल्लियों से भरा है। यह द्वीप टाहिटी से जहाज द्वारा जाने से एक दिन की यात्रा की दूरी पर है। इसका इतिहास १०० वर्षों का है। कहा जाता है कि १०० वर्ष पहिले चूहों से भरे हुए कुछ जहाज इस द्वीप के किनारे आकर टकरा गए और उनमें से सब चूहे पानी में तैर कर इस द्वीप में जा बसे। कुछ ही दिन बाद चूहों की संख्या बहुत बढ़ गई और इस द्वीप के निवासियों के सामने चूहों का बड़ा भारी संकट उपस्थित हो गया। खेतों में जो कुछ बीज बोया जाता, चूहे सब खा जाते। खेतों ही नहीं घरों में भी चूहों का उपद्रव बढ़ गया। घरों में कोई चीज चूहों से बचने नहीं

पाली थी, यहाँ तक कि घरों में सोते हुए बच्चों को चूहे काटा करते थे। चूहों का संकट इतना बढ़ गया कि इस द्वीप के निवासी द्वीप को छोड़ कर अन्य स्थानों में जा बसे और यह द्वीप चूहों के लिये छोड़ दिया गया।

दस वर्षों के अन्दर इस द्वीप में चूहों की संख्या अबाध रूप से बढ़ी और मालूम यह होने लगी कि इस द्वीप पर सदा के लिये चूहों का ही राज हो गया।

परन्तु सन् १८८० में एक साहसी फ्रेंच यात्री टाहिटी द्वीप में आया और उसने सुना कि अधिकारी लोग इस बात के लिये तैयार हैं कि जो कोई भी व्यक्ति इस द्वीप को चूहों से मुक्त करदे, द्वीप उस व्यक्ति को दे दिया जायगा। अतः फ्रेंच यात्री ने बिल्लियों द्वारा चूहों को नष्ट करने का निश्चय किया।

पहिला कार्य फ्रेंच यात्री ने यह किया कि समस्त टाहिटी द्वीप में यह ऐलान कर दिया कि जो व्यक्ति बिल्लियाँ लायेगा, उसे अच्छा इनाम दिया जायगा। इस प्रकार से ५०० बिल्लियाँ उसने एकत्र कीं और एक जहाज़ में उन्हें चूहों वाले द्वीप में ले गया। बिल्लियाँ कई दिन भूखी रक्खी गई थीं, जहाज से उतरते ही भूखी बिल्लियाँ चूहों पर टूट पड़ीं। तीन महीने के अन्दर चूहों की संख्या बहुत कम हो गई और फ्रेंच यात्री के लिये यह सम्भव हो गया कि वह वहां जाकर बसे। वहां बस कर फ्रेंच व्यक्ति ने पेड़ पौधे लगाये और मुर्गियां आदि पालीं।

मगर 'रोजा छुड़ाने गए नमाज गले लगी' के अनुसार इस द्वीप में चूहों के स्थान पर बिल्लियों का संकट बढ़ गया। वे फ्रेंच यात्री तथा उसके आदमियों पर हमला करने लगीं। अन्त में प्राण बचाने के लिये फ्रेंच यात्री इस द्वीप से भाग गया और

तब से अब तक इस द्वीप में बिल्लियों का साम्राज्य है। सिवा बिल्लियों के वहाँ अन्य कोई जीव नहीं है। अपनी भूख शान्त करने के लिये बिल्लियाँ बिल्लियों का ही शिकार करने लगीं। अब वे इतनी खूँख्वार हो गई हैं कि जब कोई छोटा जहाज इस द्वीप के किनारे से होकर गुजरता है, तो बिल्लियों का झुण्ड इस ताक में समुद्र के किनारे आकर जमा हो जाता है कि उसमें बैठे हुए आदमियों पर हमला किया जाय और भोजन की व्यवस्था की जाय।

समुद्र के किनारे पहुँच कर बिल्लियाँ, मछलियाँ, कछुए तथा अन्य छोटे-छोटे पानी के जीवों को पकड़ कर खाती हैं। पानी में वे तैरने भी लगी हैं और समुद्र में जाकर पानी के जीवों का शिकार करती हैं। यहाँ की बिल्लियाँ ऐसी भयंकर और बलवान हैं कि बड़े से बड़ा कछुआ भी उनका मुकाबिला नहीं कर सकता।

इस द्वीप में बिल्लियों का पिछले ५० वर्षों से पूरा राज्य है। उनकी भयंकरता के कारण किसी व्यक्ति को वहाँ जाने का साहस नहीं होता। पिछले ५० बरस से किसी ने यहाँ बिल्लियों को नष्ट करने का प्रयत्न नहीं किया। लोगों को इस द्वीप के समीप जाते हुए भय लगता है कि जंगली और खूँख्वार बिल्लियाँ फाड़ कर टुकड़े-टुकड़े न कर डालें।

इस प्रकार इस द्वीप में बिल्लियों का पूर्ण स्वराज्य है और यह बिल्लियों का स्वर्ग बना हुआ है।

अमेरिका का भीमकाय बनमानुस उसका असीम बल—मादा से प्रेम-लीलाएँ

अमेरिका में 'गार गंटुआ' नामक एक भीमकाय बनमानुस है, जिसका मूल्य इस समय तीस-चालीस लाख रुपया आँका जाता है। यह बनमानुस रिचार्ड क्रोनर नामक जिस व्यक्ति के पास है, उन्होंने पत्र-सम्वाददाताओं को बताया है कि यह बनमानुस एक मादा बनमानुस से प्रेम कर रहा है। उसकी प्रेम-लीलाएँ क्या होती हैं, इसका वर्णन रिचार्ड क्रोनर ने बड़े मनोरंजक ढग से किया है और साथ ही प्रेमी तथा प्रेमिका दोनों का जीवन-वृत्तान्त भी बताया है।

रिचार्ड क्रोनर का कहना है कि यद्यपि इस असाधारण बनमानुस के सम्बन्ध में लाखों शब्द लिखे और पढ़े गये होंगे, परन्तु कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो मुझसे अधिक उसके सम्बन्ध में जानता हो। यद्यपि मैं उसके बचपन से ही उसका पालन-पोषण करता हूँ, देख-भाल करता हूँ, दो बार उसे मृत्यु के मुख में जाने से बचाया है, फिर भी वह मुझे मार डालना चाहता है और अवसर पावे तो कभी न छोड़े। मगर मैं उसे प्रसन्न रखने की बात बराबर सोचता रहता हूँ। अब मैंने उसके लिये एक मादा का प्रबन्ध बड़ी कठिनाई से किया है और चाहता हूँ कि वह वैवाहिक जीवन व्यतीत करे और स्त्री-बच्चों का आनन्द उठावे। जब से मादा 'एम-टोटो' को मैं लाया हूँ, वह बड़ा प्रसन्न है और उसके प्रति प्रेम-लीलाएँ किया करता है।

भीमकाय और अतीव बलवान

गार गटुआ ५ फुट ६ इञ्च लम्बा है और वजन में ५०० पौंड

से भी अधिक है। बल तो उसमें अपार है, इतना कि कोई विश्वास ही नहीं कर सकता। उसका भीमकाय शरीर दर्शकों में भय उत्पन्न कर देता है।

जिस पींजरे में वह रखा गया है, उसे खास तौर से तैयार कराया गया था। जहाँ वह रहता है, उस स्थान का तापमान सदा उसकी प्रकृति के अनुकूल रखा जाता है और उसे कोई बीमारी न हो, इसका बहुत ध्यान रखा जाता है। दस लाख डालर के मूल्य के जीव की किस प्रकार रक्षा की जायगी इसे सभी लोग समझ सकते हैं।

गारगंटुआ मनुष्यों की तरह घूँसेबाजी भी कर सकता है, मगर उससे कोई मनुष्य लड़ ही क्या सकता है। केवल एक घूँसे से तो वह मनुष्य का काम तमाम कर सकता है। उसमें कितना बल है, इसका अन्दाज मुझे दो-एक बार मिल चुका है। एक मर्तबे उसके लिये एक नया पींजरा बनवाया गया था, जो साढ़े तीन इञ्च मोटे इस्पात की चादर का बना था। क्रोध में आकर उसने इतने जोर से पींजरे के एक हिस्से को अपने जबड़े से दबाया कि जबड़े की एक हड्डी टूट गई। इसके अतिरिक्त एक बार यह सोचा गया कि इसकी ताकत की आजमाइश करनी चाहिए। अतः इससे रस्साकशी की गई। रस्सी का एक सिरा इसे पकड़ाया गया और दूसरी तरफ १५ आदमी लगाये गये। वह तो अपने स्थान से एक इञ्च भी न हटा और जब उसने रस्से को खींचा, तो सब आदमी घसिटते हुए उसके पींजरे तक चले आये और अगर पींजरे में छड़ न लगे होते तो सब आदमी उसके अन्दर चले जाते।

प्रेम-लीला के लिये तैयार

इस समय गारगंटुआ की उम्र केवल १० साल की है, पर

हम लोगों ने अन्दाज लगाया कि इसी उम्र में वह प्रेम के लिये तैयार है। हमें यह चिन्ता हुई कि इसके लिये एक मादा का प्रबन्ध करना चाहिये। कई चिड़ियाघरों में तलाश की गई, पर कहीं कोई जोड़ा नहीं मिला।

अभी पिछले बसन्त ऋतु में पता लगा कि हवाना नगर में श्रीमती होर नामक एक विधवा रहती हैं जिनके पास मादा बनमानुस है। बड़े प्रयत्न से उन्हें इस बात के लिये राजी किया गया कि वे इस मादा को दे दें। जिस दिन मादा को लाया गया, उस दिन के अखबारों में यह समाचार प्रथम पृष्ठों पर बड़े मोटे शीर्षकों से छापा गया कि गारगंटुआ के लिए एक मादा लाई गई है।

पहले उदासीनता—बाद में प्रेम-संकेत

मादा 'एम-टोटो' को भावी पति के पास उसी के समान दूसरे पींजरे में रखा गया। दोनों पींजरे पास रखते हुए भी दोनों के बीच में बड़े मोटे छड़ लगा दिये गये, क्योंकि हम लोग गार-गंटुआ के स्वभाव से परिचित थे और मादा की जान खतरे में नहीं डालना चाहते थे, जब तक कि यह न मालूम हो जाय कि गारगंटुआ अपनी भावी पत्नी के प्रति आकर्षित होता है।

मादा को देखकर गारगंटुआ को पहिले तो कोई उत्तेजना नहीं हुई। प्रथम दस मिनट तक तो गारगंटुआ ने मादा की तरफ ध्यान नहीं दिया। परन्तु मादा अपने नर को देख कर उसकी ओर आकर्षित हुई और उसने नर को अपनी तरफ आकर्षित करने का प्रयत्न किया। अन्त में नर ने भी उसकी ओर देखा और अपने स्वभाव के अनुसार उद्धत दिखाई दिया। इसे देख कर मादा डरी और पींजरे के एक कोने में चली गई। बेचारी

को बड़ी निराशा हुई होगी कि कैसे पति के बन्धन में बँधने जा रही हूँ।

प्रेम-संकेत

हम लोगों को गारगंटुआ के इस व्यवहार पर निराशा हुई, पर हमने धैर्य से काम लिया और उसे मादा की तरफ आकर्षित करने के उपाय किये। मादा का पींजरा लगभग ५० फीट की दूरी पर कर दिया, मगर उसे ऐसे स्थान पर रखा, जहाँ से नर मादा को देख सके। कुछ दिन बाद हमें यह देख कर प्रसन्नता हुई कि गारगंटुआ अपनी प्रेमिका के प्रति प्रेम के संकेत करने लगा है और उसी की तरफ देखा करता है।

क्या एम-टोटो और गारगंटुआ विवाह-बन्धन में बँधेंगे, क्या पालतू वनमानुस लोग मादा रखते भी हैं, यह कोई नहीं जानता।

परन्तु दोनों नौजवान और स्वस्थ हैं, अतः उन्हें एक दूसरे से परिचित होने और एकान्त में रहने का अवसर दिया जा रहा है। अब शेष काम प्रकृति करेगी और मुझे विश्वास है कि वे जोड़ा बन जायँगे।

किस चीज का आविष्कार कब और कैसे हुआ ?

मध्य कालीन युग अथवा सुदूर अतीत के लोग ज्ञान-विज्ञान से अनभिज्ञ थे, ऐसी धारणा बीसवीं सदी के कतिपय वैज्ञानिकों और जोशीले नवयुवकों में पाई जाती है—अवश्य ही उनकी यह धारणा संकुचित मनोवृत्ति पर अवलम्बित है। हम मानते हैं कि बीसवीं सदी का वैज्ञानिक प्रकृति का स्वामी बनने की पूर्ण चेष्टा कर रहा है। प्रकृति के अनेक गूढ़तम रहस्यों का उद्घाटन कर

उसने प्रकृति के अनेक गूढ़तम रहस्यों पर विजय भी प्राप्त कर ली है। किन्तु यह सोचना कि आधुनिक युग के ही विद्वान् आविष्कार और अनुसंधान कर सकते हैं, भ्रमपूर्ण है। विज्ञान के विकास तथा मानव समाज के उत्थान के पिछले पृष्ठों के उलटने पर हमें उपर्युक्त धारणा की निस्सारता का पता लग जाता है और बरबस हमें आश्चर्य-चकित होकर कहना पड़ता है-"विज्ञान के सम्बन्ध में अतीतकाल के मानव-समाज को इतनी अधिक जानकारी प्राप्त थी !"

बटन

बटन का आविष्कार सभ्यता के उस प्रारम्भिक युग में ही हो चुका था, जब मनुष्य पत्थर के सिवा और किसी धातु से परिचित नहीं था। यह अनुमान किया जाता है कि एक दिन शीतकाल में जब तेज और तीखी हवा चली होगी, और प्रस्तर युग के किसी एक अपेक्षाकृत समझदार व्यक्ति का चमड़े का लबादा उड़ने से वह जाड़े से ठिठुरने लगा होगा, तो उसने चमड़े की बाईं ओर एक छेद बनाया होगा, और दाहिनी तरफ का एक हिस्सा उस छेद के भीतर डाल कर उसे बाहर की ओर खींच लिया होगा। इस प्रकार वह कुछ समय तक जाड़े से छुट्टी पा लिया होगा। पर उसके हिलने-डोलने से कुछ ही समय के बाद वह फिर खुल गया होगा। उस दिन उस प्रस्तर युग के बर्बर मनुष्यों ने रात के समय अपनी गुफा के भीतर वाली आराम कोठरी में लेटे-लेटे कोई ऐसी तरकीब सोचनी शुरू की होगी, जिससे उसका लबादा हवा के जोर से न खुलने पावे। अन्त में निश्चय ही उसे एक तरकीब सूझ गई होगी। वह तरकीब यह थी—अपने भोजन में से बची हड्डियों से उसने एक छोटी-सी खूँटी तैयार की और अपने लबादे को दाहिनी ओर एक स्थान

पर एक छोटे से छेद के जरिये उस खूँटी को जमा दिया। उसके बाद बाईं तरफ वाले छेद के भीतर बटन की तरह उस खूँटी को लगा दिया। तब से उसका लबादा फिर कभी नहीं खुल पाया। इस प्रकार बटन का आविष्कार हुआ जिसका व्यवहार आज सभ्यता का चिन्ह समझा जाता है।

सेफ्टी पिन

'सेफ्टी पिन' का व्यवहार भी सभ्यता का चिन्ह समझा जाता है। पर वास्तव में इस चिन्ह का आविष्कार कास्य युग में हो चुका था, जब कि मानव-जाति को लोहे के अस्तित्व का भी पता नहीं था। पुरातत्व वेत्ताओं ने प्राचीन स्थानों को खोद कर, उन पिनों को खोद निकाला है। अति प्राचीन काल के वे पिन ठीक उसी तरह बने हुए थे, जिस रूप में हम आज बाजारों में बिकते हुए देखते हैं।

चश्मा

प्राचीन बेबीलोनिया में ईसा से कई हजार वर्ष पूर्व स्फटिक के बने हुए 'लेन्स' चश्मे के बतौर काम में लाये जाते थे। उस चश्मे से वे लोग ईंटों के ऊपर खोदे गये अक्षरों द्वारा तैयार की गई पुस्तकों को पढ़ते थे। पर 'लैंसों' का उपयोग चश्मे के रूप में पहले यूरोप में सन् १२०० के करीब हुआ। उस चश्मे को कैथलिक सन्यासी प्राचीन पाण्डु लिपियों को पढ़ने के काम में लाते थे। पर उन चश्मों को ठीक तरह से कान के सहारे लटकाने का ढंग उन लोगों को मालूम नहीं था। वे डोरों से उसे बाँध कर किसी तरह काम चलाते थे। सोलहवीं शताब्दी में चश्मे का वह रूप ईजाद हुआ जो आज के चश्मे से कुछ मिलता-जुलता था।

घड़ी

धूप घड़ियों का प्रचलन भारत में तथा अन्य देशों में बहुत प्राचीन काल से रहा है। यूनान के लोग जल घड़ी का भी प्रयोग करना जानते थे। बूँद-बूँद पर एक बर्तन से पानी टपक कर दूसरे बर्तन में गिरता था। इस सिद्धान्त के आधार पर परिष्कृत रूप में एक जल घड़ी तैयार की गई थी, जो अलार्म घड़ी का भी काम देती थी। जिस पात्र में, बूँद-बूँद पानी गिरता, उसमें एक ट्यूब लगा हुआ था। पात्र में एक नियत समय तक जब पानी चढ़ जाता था, तब इस ट्यूब के रास्ते तेजी से पानी निकल कर एक दूसरे पात्र में पहुँचता था। इस क्रिया में दूसरे पात्र की हवा एक संकीर्ण रास्ते से वेग के साथ निकलती थी फलस्वरूप सीटी बज उठती थी।

लेकिन जिस प्रकार की घड़ियों का प्रचार आज घर-घर में देखा जाता है, उसका नमूना पहले पहल सन् १२०० के लगभग अरब के किसी एक आदमी ने तैयार किया था, ऐसा कहा जाता है। ब्रिटेन में सन् १५४० तक घड़ी का प्रचलन नहीं हुआ था। पर उसके कुछ समय बाद वहाँ के राजा रईसों के यहाँ घड़ी का नमूना दिखाई देने लगा। पर वह नमूना केवल 'नमूना' ही था। क्योंकि उनमें से कोई भी घड़ी ठीक समय नहीं दे पाती थी। इंगलैण्ड की घड़ियाँ प्रायः जर्मनी से भी आती थीं जिनके सम्बन्ध में सोलहवीं शताब्दी के प्रायः अन्त में शेक्सपियर ने लिखा था,—यह जर्मन घड़ी की तरह है, जिसकी मरम्मत चाहे कितनी ही क्यों न हो वह कभी ठीक समय नहीं देगी।

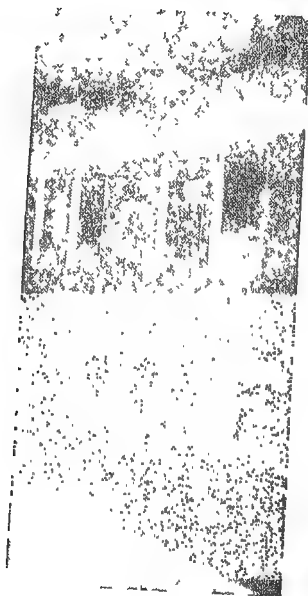
पेंसिल

मध्य युग में जर्मन संन्यासी अपनी पाण्डु-लिपियों को सजाने के लिये ग्राफाइड नामक एक विशेष धातु के टुकड़े को

संसार के आश्चर्य



यूरोप में चमकी एक बार की बिजली। जिसने आकाश को ही नहीं समस्त दिशाओं को आलोकित कर दिया था।



अमेरिका में चलने वाली दो मंजिल की रेलवे

काम में लाया करते थे। उस टुकड़े से वे अपनी पाण्डु-लिपि के चारों ओर लकीरें खींचते थे। बाद में एक सन्यासी ने सोचा कि उस टुकड़े को हाथ में पकड़ने से हाथ गन्दा हो जाता है। इसलिये उसने यह तरकीब निकाली कि खोखली लकड़ी के भीतर ग्राफाइड के उस टुकड़े को बिठा दिया जाय। और तब उससे लिखना शुरू किया जाय। इस प्रकार पेंसिल का आविष्कार हुआ। पर जिस रूप में पेंसिल आज काम में लाई जा रही है उसका आविष्कार सन् १७६४ के पहिले नहीं हो पाया था।

दियासलाई

जिस पाकेट साईज की दियासलाई को आजकल हम लोग काम में लाते हैं, उसका आविष्कार १०० साल से पहले नहीं हुआ था। उसके पहले बड़े लम्बे आकार की दियासलाइयाँ प्रचलित थीं। जब छोटे आकार की दियासलाइयों का आविष्कार हुआ तो प्रारंभ में बहुत से लोगों ने उसका विरोध इस दलील पर किया था कि उनसे चोरों और बदमाशों को अधिक सुविधा मिलेगी।

बहुरूपी शीशा

रेशम से भी मुलायम और इस्पात से भी सुदृढ़

शीशे के उद्योग में दिन पर दिन किन रूपों में उन्नति होती चली जाती है, यदि इस बात का पूरा पता पाठकों को लग जाय तो उन्हें आश्चर्य होगा। आज शीशे को हम काँच से भी हलका, रेशम से भी मुलायम और साथ ही इस्पात से भी सुदृढ़, इन तीनों रूपों में पा सकते हैं।

आजकल युद्ध-क्षेत्र की भीषण गोलाबारी के बीच में जो टैंक अडिग खड़े रहते हैं उनकी खिड़कियों के शीशे ऐसे मजबूत होते हैं कि गोलियों की बौछार उन पर केवल वर्षा के पानी की बौछार की तरह, टकरा कर रह जाती है।

शीशे की पोशाक

शीशे से ऐसी सुन्दर और भड़कीली पोशाकें तैयार की जा रही हैं जो रेशम से भी अधिक कोमल और लचीली हैं। इङ्गलैंड और अमेरिका में बहुत से विवाहों के अवसरों पर नवयुवकों को, शीशे से तैयार की गई, इस प्रकार की पोशाक पहनते देखा गया है। केवल पोशाक ही नहीं, शीशे के बने जूते (जो काफी मजबूत होते हैं) टोप और हैन्डबैग भी तैयार होने लगे हैं।

शीशे की विचित्रताओं के सम्बन्ध में ४,००० वर्ष पूर्व मिस्र देशवासी तथा बेबिलोनिया-निवासी काफी ज्ञान रखते थे, इस बात के प्रमाण मिलते हैं। बेबिलोनिया में पढ़ने तथा दूर की चीजें देखने के लिये चश्मों का व्यवहार होता था।

पर आधुनिक विज्ञान ने शीशे के सम्बन्ध में ऐसे सूक्ष्म से सूक्ष्म रूप में जाँच और छान-बीन की है कि उसे किसी भी रूप में बदल देना, उसके बायें हाथ का खेल हो गया है। आजकल शीशे को कड़ा से कड़ा, कोमल से कमल और कमनीय से कमनीय बनाया जा सकता है। यहाँ तक कि उसे झाग में परिणत करके, झाग ही के रूप में बर्फ की तरह जमाया जा सकता है बर्फ की तरह जमाया गया शीशा इतना हलका होता है। कि उससे किया गया 'बेल्ट' पहन कर आदमी समुद्र में डूबने से बच सकता है। अमेरिकन नौसेना इस प्रकार के 'बेल्टों' को व्यवहार में ला रही है।

शीशे की ईंटों के मकान

नये ढंग के मकानों के निर्माण में शीशे से बनी ईंटें काम में लाई जा रही हैं। शीशे से सूत भी तैयार किया जा रहा है। शीशे को गलाकर उसके लम्बे-लम्बे तार खींचे जाते हैं। आश्चर्य की बात यह है कि शीशे से तैयार किया गया धागा कोई नई चीज नहीं है। तेरहवीं शताब्दी में वेनिस के निवासी उसे अपने कटोरों को सँजाने के काम में लाते थे। पर आधुनिक वैज्ञानिक उपायों से जो धागा शीशे से तैयार किया जाता है, उससे कपड़ा बुना जा सकता है। यह शीशे से तैयार किया गया सूत आदमी के बाल से भी पतला होता है। एक पौंड शीशे से १७५ मील लम्बा सूत तैयार किया जा सकता है और सब से बड़ी विशेषता यह है कि सूत में चमक तो शीशे की ही रहती है, पर वह शीशे की तरह आसानी से टूटता नहीं, बल्कि लचीला बन जाता है।

शीशे के गद्दे और लिहाफ

शीशे के सूत को बंडलों के रूप में परिणत करके उससे गद्दे और लिहाफ तैयार किये जा सकते हैं। इस प्रकार के गद्दों या लिहाफों के खोल, एक विशेष प्रकार के कागज से तैयार किये जाते हैं जो कपड़े से भी मजबूत होता है। ये लिहाफ और गद्दे जाड़ों में गरमी और गरमियों में ठंडक पहुँचाते हैं।

इस विशेष सूत की बत्तियाँ स्टोव या लालटेन जलाने के काम में लाई जा सकती हैं। शीशे के डोरे से युद्ध-क्षेत्र में घायल सैनिकों के घाव सिये जाते हैं।

संसार के बड़े-बड़े जहाज़, उनकी लम्बाई, चौड़ाई और वजन शक्ति

जहाज का नाम	देश	लम्बाई फुट	चौड़ाई फुट	वजन शक्ति
नारमण्डी	फ्रांस	१०२९	११९	७९२८० टन
कीन मैरी	इंगलैण्ड	१०१८	११८	७३००० "
मैजेस्टिक	"	९१५	१००	५६६२१ "
बेरनगेरिया	"	८८४	९८	५२२२६ "
ब्रीमैन	जर्मनी	८९९	१०१	५१६५६ "
रेक्स	इटाली	८८०	९७	५१०६२ "
योरोपा	जर्मनी	८९०	१०२	४९७४६ "
लैविएथन	अमरीका	९०८	१००	४८९४३ "
कोन्टी ठी सवोया	इटाली	८१५	९६	४८५०२ "
औलिम्पिक	इंगलैण्ड	८५२	९२	४६४३९ "
एक्वीटानिया	"	८६९	९७	४५६४७ "
इले डी फ्रांस	फ्रांस	७०४	९२	४३१५३ "
एम्प्रेस आफ ब्रिटेन	इंगलैण्ड	७३३	९८	४२३४८ "
पैरिस	फ्रांस	७३५	५८	३४५६९ "
होमेरिक	इंगलैण्ड	७५१	८३	३४३५१ "
औगसटस	इटाली	७१०	८३	३२६५० "
रोमा	"	७०६	८३	३२५८३ "
कोलम्बस	जर्मनी	७५०	८३	३२५६५ "
स्टेटैण्डम	हौलैण्ड	६७४	८१	२९५११ "
चैम्प लैल	फ्रांस	६०७	८२	२८९१२ "

युद्ध का पासा पलट देने वाले झांसे

संसार में हमेशा बहुत से लोग तिकड़म से मंजिल तय कर लेते हैं। जो बात साधारण जीवन में है, वह युद्ध में भी। युद्ध में विजय हमेशा अनिश्चित् होती है। क्योंकि वह किसी एक साधन पर निर्भर नहीं है। निःसन्देह विजयी होने के लिए शक्तिमान होना अत्यन्त आवश्यक है; परन्तु यह सदैव नहीं होता कि जो शक्तिमान हो, वही विजयी हो। युद्ध में विजयी होने के लिये जिन सब साधनों की आवश्यकता होती है, उनमें तिकड़म, झाँसा-पट्टी भी एक है, जिसके बल पर बड़े-बड़े युद्धों का भाग्य-निर्णय हुआ है। झाँसे में आकर कभी-कभी शक्तिशाली को भी अपने कमजोर प्रतिद्वन्द्वी से हार जाने के लिये विवश होना पड़ता है। युद्धों के इतिहास इस तरह की घटनाओं से भरे पड़े हैं।

प्राचीन काल से कहावत चली आ रही है कि युद्ध और प्रेम में सब कुछ जायज है। शायद इसी वहकावे में आकर युधिष्ठिर सरीखे सत्यवादी महाभारत के युद्ध में गुरुदेव द्रोणाचार्य को हतशस्त्र करने के उद्देश्य से चिल्ला उठे—'अश्वत्थामा हतो' कहा जाता है कि युधिष्ठिर ने बाद में यह भी कहा कि 'नरो वा कुंजरो'! लेकिन इस बीच में इतने जोर से बाजे पीटे गये कि गुरुदेव तक आवाज पहुँच ही नहीं पाई। उन्हें यही सुन पड़ा कि 'अश्वत्थामा मारा गया।' यह वाक्य शोर में दब गया कि अश्वत्थामा हाथी मरा है—अश्वत्थामा मनुष्य नहीं।

पद्मिनी रूप की रानी, सौन्दर्य की प्रतिमा! कामांध पठान सुलतान अल्लाउद्दीन दीवाना हो गया था। कैसी उसके हृदय में पैशाचिक भावना जाग उठी थी। उस रूपवती रानी के सुकुमार

सुडौल गोरे हाथों का चुम्बन करने को वह बेचैन हो उठा था। जब उसने उसके पति चित्तौड़ के महाराणा भीमसिंह को धोखे से कैद कर लिया और रानी पद्मिनी के सामने यह बात रखी कि अगर रानी सुलतान के पास स्वयं चली आये तो महाराणा को मुक्त किया जा सकता है। कोई मार्ग न देख रानी ने सुलतान के कैम्प में जाने का निश्चय किया और सुलतान को सूचित कर दिया। सुलतान तो केवल रानी पद्मिनी को चाहता था, उसे इस सूचना से बड़ी प्रसन्नता हुई। चित्तौड़ के किले से जब रानी की पालकी निकली, दासियों की सैकड़ों डोलियां भी चलीं। इन डोलियों में दासियाँ नहीं, राजपूत—सशस्त्र राजपूत जान पर खेल जाने वाले राजपूत सवार थे। सुलतान को सन्देह नहीं हुआ और उसके कैम्प में पहुँच कर रानी ने यह प्रार्थना की कि मुझे अन्तिम बार महाराणा से भेंट करने के लिये कुछ समय दिया जाय। सुलतान ने रानी की यह प्रार्थना स्वीकार कर ली और उधर रानी और महाराणा ने घोड़ों को एड़ लगाई, इधर डोलियों से राजपूत निकल पड़े और पठानों की सेना को मारते, काटते चित्तौड़ पहुँच गये। शक्तिशाली अल्लाउद्दीन अपना-सा मुँह लिये दिल्ली लौट गया।

होमर के महाकाव्य 'इलियड' में इसी तरह की एक कहानी है। ईसा से ११०० वर्ष पहले की बात है, स्पार्टा के राजा मेनेलास की पत्नी हेलेन को ट्रोइजियन राजकुमार पारिस उड़ा ले गया। यद्यपि हेलेन को अपने काल की अद्वितीय सुन्दरी माना जाता था, तथापि वह स्पार्टा के राज्य की उत्तराधिकारिणी थी, इसलिये मेनेलास उसके नाम पर राज्य शासन करता था। राजकुमार पारिस को हेलेन से प्रेम तो था ही; किन्तु जब हेलेन उनके पास थी, उनका और उनके उत्तराधिकारियों का स्पार्टा के

लिये अधिक जोरदार था। हेलेन को छुड़ाने में स्पार्टा वालो को १० वर्ष लग गये। अन्त में आर्थिक दवाव और नाजियों के पाँचवें कालम की तरह की स्पार्टनो को कारगुजारी से नगर का पतन हुआ। इस सम्बन्ध में कहानी यह है कि स्पार्टावालों ने घोषणा की कि वे समुद्र देवता की पूजा करने वाले हैं और उसे एक घोड़ा भेंट करेंगे। उन्होंने लकड़ी का एक बहुत बड़ा घोड़ा बनाया, जो भीतर से पोला था। इसमें पहिये लगे हुए थे। पोले घोड़े के पेट में जान पर खेलने वाले सैनिक भरे हुए थे। ट्राय के सीधे-साधे वीर लोगों ने नगर का फाटक खोल दिया। वे दुश्मन को भी धार्मिक रीति रिवाज पूरा करने का मौका देना चाहते थे। घोड़े का नगर में पहुँचना था कि ग्रीक सिपाही घोड़े से निकल आये, उन्होंने घोड़ा भेज कर शहर का दरवाजा खोल दिया। सीधे-साधे ट्राय वालों को एक झाँसे में हरा दिया। इस सफलता के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि उस समय के आदमी बहुत भोले थे और काठ के घोड़े वाली चाल को समझ न सके, परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि भावी सन्तान, इस युग के मनुष्य को भी कहेगी कि उन्होंने नाजियों का आक्रमण होने पर वैसा ही भोलापन जाहिर किया। इंगलैण्ड, डेनमार्क और बेलजियम के रास्ते से जर्मनों ने फ्रांस और ब्रिटेन की सेना पर जो भयङ्कर आक्रमण किया, उससे पहले संसार को यह बताया गया था कि नारवे में जर्मनों की ट्राजन के घोड़े-जैसी चाल चल गई और पाँचवें कालम की बदौलत उन्हें इतना शीघ्र सफलता मिल गई।

भारतीय इतिहास की एक महत्वपूर्ण लड़ाई वह है, जो पृथ्वीराज चौहान और शहाबुद्दीन गोरी में थानेश्वर के मैदान में हुई थी और जिसके बाद भारत के भाग्य का फैसला हो गया था। पृथ्वीराज मुसलमानों की गन्दी चालाकी से हार गये।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि जिस पृथ्वीराज ने चौदह बार शहाबुद्दीन गोरी को बुरी तरह हराया था, उसे वे पन्द्रहवीं बार भी हरा सकते थे। लेकिन पृथ्वीराज को क्या पता था कि मुसलमान चालाकी चल रहे हैं। मुसलमानों ने अपनी फौज के सामने गायों की पंक्ति खड़ी कर दी। आगे-आगे गायें थीं और पीछे-पीछे मुसलिम सेना बढ़ी चली आ रही थी। राजपूत गायों के कारण हथियार नहीं चला सके और मुसलमानों ने इस धोखे की टट्टी से हमला करके राजपूतों को हरा दिया।

पृथ्वीराज से बिल्कुल उल्टा उदाहरण छत्रपति शिवाजी का है जिन्होंने पराक्रम से अधिक चालाकियों से, शक्तिशाली मुगलों को परास्त करके एक नये साम्राज्य की नींव डाली जो भारतीय इतिहास के उस उथल-पुथल के युग में १३५ वर्ष तक फूला फला। मुलाकात के लिये गये हुए शिवाजी को जब औरङ्गजेब ने कैद कर लिया तब वे जिस तरह फूलों की टोकरी में छिप कर भाग निकले, उससे उनकी सूझ और झाँसे की कला की पटुता की तारीफ कौन नहीं करेगा ?

१४३ वर्ष से भी अधिक की बात है। १७९७ ई० में फ्रांस ने इंगलैण्ड पर हमला किया था। फ्रांस के उस आक्रमण के नेता जनरल टा थे। फ्रांसीसी सेना के १४०० जवान दक्षिणी वेल्स में फिशगार्ड के पास उतरे और आगे बढ़े थे कि सहसा सहम गये। उन्होंने सामने क्षितिज पर पहाड़ियों की चोटियों पर देखा कि लाल-लाल वर्दी पहने हुए बन्दूक धारी सैनिकों की चहल पहल हो रही है, परन्तु फ्रांस के सैनिकों को वास्तव में धोखा हुआ था। वहाँ उस समय कोई सैनिक नहीं था। वहाँ थीं फिशगार्ड की केवल स्त्रियाँ, जो अपना लाल रंग का जातीय दुपट्टा ओढ़े थीं और लम्बे-लम्बे टोप लगाये हुई थीं। ये सब स्त्रियाँ हाथ में

झाड़ लिये हुए पहाड़ी पर लगातार चल फिर रही थीं, जान-बूझ कर फिर रही थीं। दूरवर्ती पहाड़ी पर इस तरह चलती फिरती स्त्रियों को आक्रमणकारियों ने सैनिक समझा और वे हट गये। स्त्रियों ने अपनी हरकत उस समय तक जारी रखी, जब तक शत्रु का मुकाबला करने के लिये सैनिक पहुँच नहीं गये। आक्रमणकारियों ने दो दिन पीछे बेमिरे स्थान पर आत्म समर्पण कर दिया, और ऐसी सेना के सामने जो स्वयं उनके मुकाबले में घटिया दर्जे की थी। गार्ड की स्त्रियों का यह झाँसा कारगर हुआ। उससे उन्होंने युद्ध का पाँसा अपनी ओर पलटा लिया। निश्चय ही फ्रांसीसी सैनिकों को जब असलियत का पता चला होगा, बड़ा पछतावा हुआ होगा।कन्तु तब तक तो चिड़िया खेत चुग चुकी थी।

एक बार चीनियों ने बर्बर मंगोल सेना को ऐसी ही एक चालबाजी से हराया था। चीनी जानते थे कि मंगोल सेना को आमने-सामने की लड़ाई में जीतना बड़ा कठिन काम है। इसलिये रात के समय उन्होंने हजारों आदमियों को काम में लगा कर नकली सिपाही बनवा डाले और उन्हें बाकायदा फौजी ड्रेस से लैस कर दिया। इसके बाद चुपके-चुपके चीनी फौजें दुश्मनों के पीछे पहुँच गईं। मंगोल सेनाओं ने चीनी सेनाओं को समझ कर नकली सिपाहियों पर आक्रमण किया। लेकिन उन्हें अपनी भूल बाद में मालूम हुई। चीनी सेनाओं ने तब तक पीछे से हमला कर उनका सफाया कर दिया। मंगोलों के पैर उखड़ गये। वे मैदान से भाग निकले।

इटली में लोम्बार्डी एक प्रदेश का नाम है। एक बार किसी ने वहाँ चढ़ाई की। विजेता ने घोषणा की कि वह उसी को उस देश का राज देगा, जो पहले उसे खिड़की में से देखेगा। लोम्बार्डी

की महारानी ने मूँछें लगालीं। प्रातःकाल विजेता ने उसे देखा— राज्य फिर रानी और उसके पति के हाथ में आ गया।

बंगाल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एक जनरल ने छलबल से ही नवाब की सेनाओं को परास्त कर दिया था। लड़ाई मिदनापुर शहर के लिये हो रही थी, जिसे नवाब की फौजें अँग्रेजों के हाथ से छीन लेना चाहती थीं। अँग्रेजी फौजों का नेतृत्व जान चारनौक कर रहा था। उसे पता चल गया कि नवाब की फौजों के सामने उसका जीतना असम्भव है।

जान चारनौक के दिमाग में एक सूझ आई। उसने अपनी नई सेनाओं को बन्दरगाह से किले तक पैदल चलाया। इसके बाद किले के पीछे वाले दरवाजे से वे सेनायें फिर बन्दरगाह से किले आती दिखाई। ऐसा दस पन्द्रह बार किया गया और नवाब को यह शक पैदा हो गया कि अँग्रेजों की मदद के लिये बहुत से सिपाही आ गये हैं। नतीजा यह हुआ कि हार जाने के डर से नवाब की सेनायें भाग निकलीं।

इस लड़ाई में हिटलर ने भी मित्रराष्ट्रों के हवाई हमलों को विफल बनाने के लिये कई तदवीरें रची हैं। उसने कई फौजी स्थानों को ज्यों का त्यों नकली बनवा डाला है। कहा जाता है कि बर्लिन को बचाने के लिये नकली बर्लिन तक बसा रखा है। नकली अड्डे बनवा रखे हैं, जिनमें लकड़ी के हवाई जहाज रखे रहते हैं।

युद्ध के भाग्य निर्णायकों के ये झाँसे हैं। बुद्धिमान लड़ाके इनमें नहीं फसते।

तर्क करने वाली मशीन

इस समय जिस प्रकार मशीन चालित दिमाग बन्दूकों की फायर करने और हिसाब हल करने में सफल हो रहा है, उसी प्रकार एक ऐसी मशीन का आविष्कार हुआ है, जो तर्क वितर्क करने का काम खूब अच्छी तरह पूरा कर सकती है। डा० बुश वैज्ञानिक अनुसन्धान और विकास विभाग के डाइरेक्टर तथा वर्तमान में सब से बड़े अन्वेषकों में एक हैं। डा० बुश ने ऐसी मशीनों के सम्बन्ध में भी भविष्यवाणियाँ की है जो विचारों से सामंस्यज स्थापित कर सकेंगी और मनुष्य के भावों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की क्षमता रखेंगी। उनका कहना है कि मानव सभ्यता इतनी जटिल हो गई है, कि उसको मौलिक वर्णन के लिये मशीनों रेकार्डों की आवश्यकता है, क्योंकि मानव स्मरण शक्ति अत्यन्त सीमित है। आविष्कर्ता का कहना है कि मशीनें बोली हुई आवाज को छपे हुए पृष्ठों में परिवर्तित कर देंगी।

गोरिंग का रोग-निवारक वायुयान

गोरिंग के विशाल व्यक्तिगत वायुयान का फ्रांस का स्वास्थ्य विभाग नया उपयोग कर रहा है। इसमें बैठा कर कूकर खाँसी से पीड़ित बच्चों को बहुत ऊपर आकाश में ले जाया जाता है और कुछ देर घुमा कर नीचे ले जाया जाता है। इससे उनके रोग दूर होने में अच्छी सहायता मिलती है।

संसार में अफीम की उपज

अनुमान किया जाता है कि संसार में लगभग २०,००,०० टन अफीम पैदा होती है। इसमें से लगभग ४०० टन दवाओं के काम आती है। एक टन लगभग २७॥ मन का होता है।

हवा से चलने वाली मोटर

कुछ दिनों पहले लकड़ी के बुरादे से चलने वाली मोटर की बात सुनने को मिली थी। किन्तु अब हवा से चलने वाली मोटर की बात सुनने में आ रही है। कैलीफोर्निया के एक इंजीनियर ने हवा द्वारा चलने वाली एक मोटर का निर्माण किया है जो सरकेस में रखी घड़ी जैसी देखने में सुन्दर लगती है। पेट्रोल की जगह इस मोटर में १५० पौण्ड दबाव की हवा भर देने से मोटर चलने लगती है। इस हवा से चलने वाली मोटर में स्पार्क सग, क्लच, कार्बुरेटर, स्टार्टर, पम्पा या गियर बाक्स नहीं होता। इसमें हुड तथा चमकते हुए काँच का डैश बोर्ड नहीं होता है। इस मोटर में हवा भरने के लिये एक छोटे इंजन की जरूरत होती है जिसे चलाने के लिये तीन पाव तरल बुटेन की आवश्यकता होती है। एक गैलन बुटेन तैयार करने में ६ आने पैसे का खर्च है और इस ६ आने के खर्च से मोटर ६० मील तक आसानी से चल सकती है।

अँग्रेजी भाषा बेकार सिद्ध हुई

एक बार बर्मा की लड़ाई में एक ब्रिटिश सैनिक गाँव के हाट में अंडा खरीदने गया। वह बर्मी भाषा नहीं जानता था इसलिये उसने संकेतों से अपनी आवश्यकता व्यक्त करने का प्रयत्न किया। उसके संकेतों किसी की समझ में नहीं आये। तब उसने बालू में उँगली से मुर्गे तथा अण्डे बनाये तथा स्वयं अभिनय करके अपना भाव व्यक्त करने का प्रयत्न किया। वह अपने दोनों हाथ पाँव की तरह फैला कर उचकता हुआ चला गया तथा तथा कुकड़ू-कूँ कुकड़ू-कूँ की आवाज की। सभी ग्रामवासियों के हँसते-हँसते पेट में बल पड़ गये। एक बालिका ने उसका आशय समझ लिया और उसे अँडे लाकर दिए।

ट्रूथ सीरम

पाठशाला में पेन्सिल या खल्ली की चोरी होने पर मन्त्र सिद्ध चावल खिला कर असल चोर की कलई खोलने की धमकी गाँव के गुरुजी से कई बार सुनी थी। गुरुजी की यह महौषधि अचूक प्रमाणित न होने पर भी काफी कारगर साबित हो चुकी थी और आज भी उसका महत्व और प्रभाव पाठशाला के बच्चों के लिये वही है।

इधर अमेरिकन सेना के मेडीकल अफसर कैप्टेन फ्रैंक शार्नबर्ग ने इसी किस्म की 'ट्रूथ सीरम' नामक एक नई औषधि के आविष्कार का जिक्र किया है जिसकी एक खुराक में वह खूबी है कि खाने वाले के मुँह से घटना विशेष के सम्बन्ध में सभी सच्ची बातें कहलवा लेती है। खुराक सेवन करते ही खाने वाला नींद में अचेत हो जाता है और सभी सच्ची बातें बता देता है।

इस नई औषधि का प्रयोग सर्व प्रथम पीटर एन्थोनी कोनिलस पर किया गया था। कहते हैं कि कोनिलस ११५ पौण्ड चुरा कर घर से भाग निकला था और सेना में भर्ती हो गया था। उसे सन्देह पर गिरफ्तार किया गया और 'ट्रूथ सीरम' की एक खुराक खिलाई गई। प्रयोग सफल हुआ और किनोलस ने सभी बातें सच-सच बतादीं।

तथ्यपूर्ण आंकड़े

रूस की १६ करोड़ ३० लाख जनता में करीब २०० पृथक-पृथक जातियाँ हैं।

चीन के सिकियांग प्रान्त स्थित अल्ताई पहाड़ पर सोने की खान मिली है। अन्वेषकमण्डल के एक सदस्य के कथनानुसार मालूम हुआ है कि वह पहाड़ सोनेसा चमक रहा है।

टेलीफोन से विवाह

विज्ञान के नवीनतम आविष्कारों द्वारा मानव जीवन की विभिन्न गुत्थियों को बड़ी आसानी से सुलझाया जा रहा है। हजारों मील दूर वर-वधू भी आज टेलीफोन द्वारा अपना विवाह कर हनीमून मना सकते हैं। लन्दन में इसी तरह का एक विवाह अभी हाल ही में सम्पन्न हुआ है। वर महोदय लन्दन में थे और वधू महोदया वहाँ से ४ हजार मील दूर इण्डियाना में। वर-वधू के साथ-साथ दोनों पक्ष में साथियों तथा पादरियों को रेडियो-टेलीफोन सम्बन्ध से सम्बन्धित कर दिया गया और सारा विवाह कार्य १२ मिनट में सम्पन्न हो गया। वर वधू को 'हनीमून' अथवा प्रणय-संभाषण के लिये भी दो मिनट का समय दिया गया था। यह रेडियो टेलीफोन सम्बन्ध स्थापित करने में प्रति मिनट १ पौंड अर्थात् १५ रुपये के हिसाब से कुल १८० रुपये खर्च करना पड़ा।

बनावटी 'बवण्डर'

वैज्ञानिकों ने एक ऐसा यन्त्र तैयार किया है जिससे प्रति घण्टे १८२ मील की रफ्तार से दौड़ने वाला बवण्डर उत्पन्न किया जा सकता है। रिचमण्ड (कालिफोर्निया) के किसान खेत की फसल को कीड़े-मकोड़ों से बचाने के लिये इसका उपयोग कर रहे हैं। इस यन्त्र में डेढ़-दो सौ पौण्ड रासायनिक चूर्ण भर दिया जाता है, जो कृत्रिम हवा के साथ शामिल हो फलदार और सघन वृक्ष और पौधों पर फैल कर कीड़ों का विनाश करता है। एक दिन में इस यन्त्र की सहायता से एक सौ एकड़ विस्तृत क्षेत्र को कीटाणु मुक्त किया जा सकता है।

मक्खीमार कांच

बरमिंघम के एक वैज्ञानिक डाक्टर डब्ल्यू० एम० हैम्पटन ने एक ऐसे काँच का आविष्कार किया है जिसके द्वारा मक्खियां को इस भाँति मारा जा सकेगा जैसे मृत्यु किरण से। कहा जाता है कि भविष्य में यह काँच पाकशाला के लिये बड़ा उपयोगी साबित होगा। डाक्टर हैम्पटन का कथन है कि वे एक दूसरे प्रकार के काँच का आविष्कार कर रहे थे कि अचानक इस काँच का आविष्कार हो गया।

परमाणु बम का रहस्य

परमाणु बम के रहस्य को अप्रकट रखने के लिये प्रारम्भ से ही काफी सावधानी रखी गई है। इस सिलसिले की एक अत्यन्त दिलचस्प बात यह है कि उक्त बम के गुप्त अनुसन्धान काल में किसी ऐसे श्रमिक की सेवा स्वीकार नहीं की गई जिसकी पत्नी ब्रिज खेला करती थी। जिनके संरक्षण में इस विनाशकारी अस्त्र का अनुसन्धान हो रहा था उन्हें इस बात का भय था कि खेल के दौरान में ये पत्नियाँ लापरवाही से इस रहस्य की कहीं चर्चा कर बैठेंगी और सारा प्रयत्न धूल में मिल जायगा।

क्या आप जानते हैं ?

भारतवर्ष में ७२०० रेलवे स्टेशन हैं

४०,००० से अधिक विभिन्न वस्तुएँ जिनमें आलपीन से लेकर बायलर तक सम्मिलित हैं—रेलों को चलाने के काम आती हैं।

१९४४-४५ में कोयले से भरे १०० लाख टन से अधिक

मालगाड़ी के डिब्बों को एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा गया।

सम्भवतः विश्व का सब से छोटा जल-विद्युत यन्त्र काल का शिमला रेलवे के बड़ोग स्टेशन पर लगाया गया है।

नार्थ वेस्टर्न रेलवे ब्रिटेन के तिगुने से भी अधिक क्षेत्र में चलती है।

संसार की सब से बड़ी दूरबीन

संसार की सब से बड़ी दूरबीन जून १९४७ तक तैयार हो जाने की आशा है। यह दूरबीन कैलाफोनिया की यंत्रशाला में बन रही है। यह १९२८ में बनना शुरू हुई थी, पर युद्ध के कारण इसका बनाना रोक दिया गया था। इस दूरबीन को रखने की वैधशाला पालीकर पर्वत (कैलीफोर्निया) की ५,५६० फुट ऊँची चोटी पर तैयार हो गई है।

वह बातें जिन पर आप विश्वास नहीं कर सकते

टाँगों का प्रभाव

जिन लोगों ने कभी कचहरियों में सुन्दर महिलाओं के मुकदमे नहीं देखे वह कभी यह विश्वास नहीं कर सकते कि किस प्रकार एक महिला की टाँगें जूरी के निर्णय को भी प्रभावित कर सकती हैं। संयुक्तराष्ट्र अमेरिका के नेब्रास्का की सुप्रीम कोर्ट में एक मुकदमा आया। एक स्त्री ने रेल रोड के अधिकारियों पर अपनी टाँग में चोट लगने के लिये हर्जाने की माँग की और जूरी के एक बहुत बड़ी रकम मंजूर करदी।

कम्पनी ने फिर अपील की कि यह हर्जाना नुकसान से बहुत अधिक है। कम्पनी के वकील ने कहा कि जूरी—जिसमें सब पुरुष ही थे—महिला की खूबसूरत टाँग को देख कर विरोधी पक्ष की

सारी शहादतों को भूल गई और महिला की सुन्दरता से प्रभावित होकर ऐसा फैसला सुना दिया। किन्तु कचहरी ने इस आरोप का उत्तर यह दिया कि महिला की सुन्दर टाँगो का कुछ प्रभाव नहीं है। यदि महिला असुन्दर भी होती, तो उसकी टाँगों को भी जूरी उतने ही गौर से देखती और उसकी हानि से भी उतनी ही प्रभावित होती।

संसार की प्रत्येक चीज़ को अपनी शक्ति से देखने वाला विचित्र व्यक्ति

दत्तात्रेय की आराधना का परिणाम

इस व्यक्ति से मिल कर आपको भारी आश्चर्य होगा। इसका नाम है श्री एम० बी० मितकर और इसका यह दावा है कि इसने अपने अन्दर एक ऐसी शक्ति पैदा करली है जिससे वह संसार के किसी भाग में चीजों को अपनी आँखों से उसी प्रकार देख सकता है जिस प्रकार एक व्यक्ति अपने सामने फिल्म के चित्र देखता है। इसे मैंने अपनी कसौटी पर परखा है और परिणाम देख कर हमारे आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा।

"जहाँ मैं रहता हूँ उस स्थान को वह किसी सूरत में नहीं जान सकता था, परन्तु उसका कथन कितना सही था जबकि उसने मेरा मकान १२० मील दूर बम्बई में विद्यमान बताया और इसके बाद बिना पूछे ही वह मेरे ड्राइङ्ग रूम और उसमें उस समय बैठे हुए व्यक्तियो का हाल बताने लगा। बाद में घर लौटने पर मैंने जाँच की तो उसकी एक-एक बात सही निकली।" उसने यह बताया, "परीक्षा लेते समय मेरे साथ में पंडित नेहरू के मुखपत्र "नेशनल हेरल्ड" लखनऊ के सुप्रसिद्ध सम्पादक श्री

के० रामाराव भी हैं। श्री रामाराव तीन जगह रहते हैं—एक वर्धा में गाँधीजी के सदर मुकाम पर, दूसरे नागपुर में और तीसरी लखनऊ में। ये तीनों पूना से कई-कई सौ मील दूर हैं। मितकर इसके बाद हमारे सामने उन तीनों स्थानों का साक्षात वर्णन करता चला गया जब तक कि इस विशिष्ट सम्पादक ने यह नहीं कह दिया; "वह बिल्कुल सही है।"

"एक सामान्य मित्र ने जिसने मितकर से मेरा परिचय कराया था, एक और घटना में उसको परखा।"

"एक दिन इस मित्र को ८०० मील दूर मद्रास से एक तार मिला जिसमें यह लिखा कि उसकी माँ सख्त बीमार है और उसे नाजुक हालत में हस्पताल पहुँचा दिया गया है।"

"मितकर योग बल से अपना ध्यान मद्रास अस्पताल में ठीक उसी नम्बर के बिस्तर पर ले गया जिस पर कि वह बीमार स्त्री लेटी हुई थी और उसकी साड़ी का रंग और उसकी वास्तविक हालत बयान करदी। उसने यह भी भविष्यवाणी की कि वह ठीक हो जायगी। मेरे मित्र ने बताया कि यह सब सही निकला।"

"इस मित्र ने एक और आदमी का अनुभव भी बताया जिसको मद्रास से इसी प्रकार का तार अपनी बहिन की बीमारी के बारे में मिला था।"

"इस केस में मितकर ने सारी स्थिति बयान करके यह कहा कि वह अब से पहिले ही मर चुकी है।"

"उसकी यह बात भी सही निकली।"

दत्तात्रेय की आराधना

"मितकर ने बताया कि यह स्वयं अपने अन्दर उत्पन्न की गई शक्ति का परिणाम है और त्रि-पुण्डधारी हिन्दू देवता दत्ता-

त्रेय की लगातार आराधना एवं प्रार्थना से उसने इस शक्ति को मुकम्मिल कर लिया है। वह योग का विद्यार्थी भी है।"

वह न तो किसी प्रकार के मंत्रों का उच्चारण करता है और बहुत ध्यान मग्न होने का ढोंग रचता है, सिवाय दो चीजों के इस्तैमाल के जिनको कि वह अपना प्रयोग-साधन बताता है। एक तो सफेद संगमरमर की गेंद है जिस पर सात काले रंग की लकीरें हैं और दूसरी चीज एक पीतल का त्रिकोण लैम्प है जिसमें सात बत्तियाँ हैं।

"इस विचित्र शक्ति के विकास का पूर्व इतिहास बताते हुए उसने कहा कि यह स्वाभाविक रूप से उसमें उत्पन्न हुई। एक दिन जब वह बच्चा ही था, उसकी माँ पकाने के लिए ककड़ियाँ बाँध कर लाई। उसने काटने से पहले ही।बता दिया कि वे सब कड़वी निकलेंगी। उसकी बात सही निकली।"

"कुछ साल के बाद उसने इस शक्ति की सहायता से अपने पिता का एक खोया हुआ बहुमूल्य कागज खोज निकाला। मितकर ने कहा कि वह एक छपाई के कारखाने में पड़ा रह गया है।"

गरीबों का जीवन

"मितकर जाति का सुनार है, मगर एक बीमा कम्पनी में ६६ रुपये मासिक नौकरी करके अपनी दो अविवाहित बहिनों का पेट पाल रहा है। उसकी आयु भी ३५ साल की है और अब अपना विवाह करने की बात सोच रहा है।"

चिट्ठियों का बिना पढ़े ही उत्तर

"यद्यपि प्रसिद्धि अभी बहुत दूर है, मगर मितकर ने कहा कि अमरीका में उसने इस बारे में कुछ दिलचस्पी पैदा की। उसे

बहुधा अमरीका ऐसी चिट्ठियाँ मिलती रहती हैं। इसमें भी सबसे विचित्र बात यह है कि वह उन चिट्ठियों का अमरीका से रवाना होने से पहले ही यहाँ से जवाब भेज देता है क्योंकि उसको मालूम हो जाता है कि उनमें क्या लिखा है।"

परदे में रहने वाले योद्धा

सहारा रेगिस्तान में मुसलमानों का कबीला रहता है जो तोरेग कहलाता है। इस कबीले के पुरुषों का सारा जीवन युद्ध-व्यवसाय में कटता है। इसके अलावा वह और कोई काम नहीं करते। इनमें एक विचित्र प्रथा है कि कबीले की स्त्रियाँ तो परदा नहीं करतीं। वे बिना परदे के बाहर निकलती है पर पुरुष लोग १४ वर्ष की उम्र से अपना चेहरा हर समय नकाब से ढके रहते हैं। इसके बाद उनका चेहरा कोई नहीं देख पाता। सोते समय भी वे चेहरा नकाब से ढके रहते हैं। उन्हें रेगिस्तान की लड़ाई की कड़ी शिक्षा दी जाती है। वे पाँच दिन बिना पानी पिये तथा एक सप्ताह बिना भोजन किये रह सकते हैं, पर उनमें जरा भी शैथिल्य नहीं आता। यदि किसी तोरेग कबीले वाले का ऊँट रेगिस्तान में मर गया तो ३०० मील जमीन वे ४ दिन में पैदल तय करके अपने घर पहुँच जायगा।

पौने नौ फीट लम्बी मूँछें

एक आदमी की मूँछें संसार भर में सब से लम्बी थीं—उनका नाप १०४ इञ्च अर्थात् पौने नौ फीट के लगभग था। यह रहने वाला था हमारे ही देश के काठियावाड़ प्रदेश का और इसका नाम था देसुर अर्जुन डागर। यह मुछन्दरनाथ अमेरिका में होने वाली प्रदर्शिनी में शरीक हुए थे और वहाँ इन्होंने काफी पैसा बटोरा था।

महत्वपूर्ण तिथियाँ

१—महारानी विक्टोरिया की घोषणा; सन् १८५८ ई० ।

२—जलियाँ वाला काण्ड; १३ अप्रैल, सन् १९१९ ई० ।

३—सेण्ट हैलेना में नैपोलियन की मृत्यु; ६ मई, सन् १८२१ ई०

४—महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आन्दोलन; १ अगस्त, सन् १९२० ई० ।

५—सरकारी आज्ञा-उल्लंघन आन्दोलन का श्री गणेश; १ अप्रैल, सन् १९३० ई० ।

६—बापू की जन्म-तिथि; २ अक्टूबर, सन् १८६९ ई० ।

७—स्व० रवीन्द्रनाथ टैगौर की जन्म-तिथि; ६ मई, १८६१ ई० ।

८—राइट ब्रादर्स द्वारा प्रथम सफल यान्त्रिक वायुयान की उड़ान; १२ नवम्बर, सन् १९३० ई० ।

९—रूस-जापान युद्ध का श्री गणेश; फरवरी; सन् १९०४ ई० ।

१०—लन्दन में पहिली भारतीय गोलमेज परिषद् की बैठक; १२ नवम्बर, १९३० ई० ।

११—श्री 'तिलक' की मृत्यु; ३१ जुलाई, सन् १९२० ई० ।

१२—अहमदनगर में ८९ वर्ष की अवस्था में सम्राट् औरंगजेब की मृत्यु; २२ फरवरी, सन् १७०७ ई० ।

१३—भारत में महारानी विक्टोरिया की जयन्ती; १६ फरवरी, सन् १८८७ ई० ।

१४—पैरिस में मि० पैठी और मि० मैरी क्यूरी द्वारा रैडियम की खोज; २६ दिसम्बर, सन् १८९८ ई० ।

१५—प्रथम विश्व-व्यापी महायुद्ध; १ अगस्त, सन् १९१४ ई० ।

१६—एवरिस्ट की चोटी पर साहसपूर्ण उड़ान; ३० अप्रैल, सन् १९३३ ई० ।

१७—भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की संस्थापना; सन् १८८५ ई० ।

१८—भारतीय सरकार द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी शाही ताज में मिला ली गई; २ अगस्त, सन् १८५८ ई० ।

१९—एडीसन का जन्म; २१ फरवरी, सन १८५८ ई० ।

२०—सिक्ख-धर्म के प्रवर्तक 'नानक' का जन्म लाहौर के निकट तलवाँडी में २४ जून, सन १४०९ ई० को हुआ ।

२१—जहाँगीर का नूरजहाँ से विवाह; ३० जून, सन् १६११ ई० ।

२२—आगरे का ताजमहल सम्राट् शाहजहाँ द्वारा सम्पूर्ण हुआ; ३० जून, १६४५ ई० ।

२३—राजा रणजीतसिंह की मृत्यु; २७ जून, सन १८३९ ई० ।

२४—भारत में बिजली द्वारा तारों का आदान-प्रदान; २३ मार्च, सन् १८५४ ई० ।

२५—भारत का इङ्गलैण्ड के साथ हवाई यातायात; ३० मार्च, सन १९२९ ई० ।

२६—काशी-विश्व-विद्यालय की संस्थापना; १ अप्रैल, १९१६ ई०

२७—कालीकट में वास्कोडीगामा का आगमन; २१ जुलाई, सन १५२४ ई० ।

२८—हुगली में अँगरेजी कारखाने की स्थापना; १९ जुलाई, सन १६५१ ई० ।

२९—सर आशुतोष मुकर्जी की मृत्यु; २५ मई, सन १९२४ ई० ।

३०—तिलक-जन्म; २३ जुलाई, सन १८५६ ई० ।

३१—राजा राममोहन राय की मृत्यु; २७ सितम्बर, सन् १८३३ ई०

३२—शेक्सपियर का जन्म; २३ अप्रैल, सन् १५६४ ई० ।

३३—लैनिन की मृत्यु; २१ जनवरी, सन् १९२४ ई० ।

३४—पंडित मोतीलाल नेहरू का जन्म १८६१ ई०, मृत्यु ६ फरवरी, सन् १९३१ ई० ।

३५—बंकिमचन्द्र चटर्जी का जन्म सन् १८३६, मृत्यु ८ अप्रैल सन् १८६४ ई० ।

३६—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर का जन्म १८२०, मृत्यु सन् १८६१ ई०

३७—शाही भारतीय समुद्री सेना का प्रारम्भ, सन् १९३४ ई० ।

३८—स्व० सी० आर० दास की मृत्यु, १६ जून, १९२५ ई० ।

३९—अमेरिका द्वारा स्वतन्त्रता की घोषणा, ४ जुलाई, १७७६ ।

४०—चीनी क्रान्ति का आरम्भ ७ सितम्बर सन् १९११ और प्रजातन्त्र की स्थापना २९ दिसम्बर, सन् १९११ ई० ।

४१—रूस की राज्य-क्रान्ति, १२ मार्च, सन् १९१७ ई० ।

४२—महाप्रभु चैतन्य की मृत्यु, २४ नवम्बर, सन् १५२७ ई० ।

४३—सोवियत संघ की स्थापना, ७ नवम्बर, सन् १९१७ ई० ।

४४—लीग आफ नेशन की प्रथम बैठक, १५ नवम्बर, १९२० ई०

४५—साधारण ब्रह्म-समाज की स्थापना, १५ मई, सन् १८७८ ई०

४६—नहर स्वेज का प्रवेश आरम्भ, १७ नवम्बर, सन् १८६९ ई०

४७—क्वेटा का भूकम्प, ३० मई, सन् १९३५ ई० ।

४८—स्वामी रामकृष्ण परमहँस का जन्म, सन् १८३६ ई० ।

४९—मारकोनी ने एटलांटिक महासागर के पार प्रथम रेडियो सम्वाद १२ दिसम्बर, सन् १९०२ को भेजा था ।

५०—विक्टोरिया-क्रास पदक का प्रारम्भ, सन् १८८६ ई० ।

५१—दक्षिणी ध्रुव पर रोल्ड एमण्डसन की पहुँच, १६ दिसम्बर, सन् १९११ ई० ।

५२—कमान्डर पीरी उत्तरी ध्रुव पर अप्रैल, सन् १९०९ में पहुँचे

५३—भारतवर्ष में सर्वप्रथम समाचार-पत्र मि० हिकी ने कलकत्ता से प्रकाशित किया, मार्च, सन् १७८० ई० ।

५४—बँगला की प्रथम पुस्तक का मुद्रण, सन् १७७४ ई० ।

५५—फ्राँस की राज्य-क्रांति का अन्त, ५ अक्टूबर, सन् १७९५

५६—सिलाई की मशीन का आविष्कार, सन् १८४६ ई० ।

५७—अमेरिका की गुलामी-प्रथा का अन्त, १९ दिस०, १८६२ ई०

५८—भारत में में प्रथम कौंसिल का चुनाव, १६ नव०, सन् १९२०

५९—महात्मा गांधी का नमक कानून आन्दोलन प्रारम्भ, १२ मार्च, सन् १९३० ई०।

६०—महात्मा गांधी द्वारा नमक कानून का तोड़ना, ६ अप्रैल, सन् १९३० ई०।

६१—गान्धी-इरविन समझौते पर हस्ताक्षर, ५ मार्च, १९३१ ई०

६२—भारतीयों को जूरी बन कर बैठने का अधिकार, ९ जुला० सन् १८२७ ई०।

६३—भारत को प्रथम हवाई डाक का जहाज इङ्गलैण्ड से करांची पर आया, ७ अप्रैल, सन् १९२९ को और करांची से रवाना हुआ ५ अप्रैल, सन १९२९ ई० को।

एक और मुछन्दरनाथ

एक हैं मलाया निवासी श्रीयुत म० अलयाङ्गियार। आपकी मूँछें ६४ इञ्च लम्बी हैं। आपको धूम्रपान का व्यसन है, अतएव आपको सदैव भय रहता है कि आपकी कहीं मूँछें भी सिगरेट के संसर्ग से किसी दिन सहसा धुआँ न बन जायें। इसीलिये आपने इनका ढाई हजार रुपये का बीमा करा रक्खा है। एक दिन आपको आज्ञा मिली कि या तो मूँछों पर छुरा फिराओ या नौकरी से त्यागपत्र दो। आपने मूँछों के खातिर तुरन्त त्यागपत्र दे दिया।

मुद्रक—ला० रामप्रसाद गुप्त, कैलाश प्रिंटिंग प्रेस हाथरस।